

नवरात्रि शिरोपांक

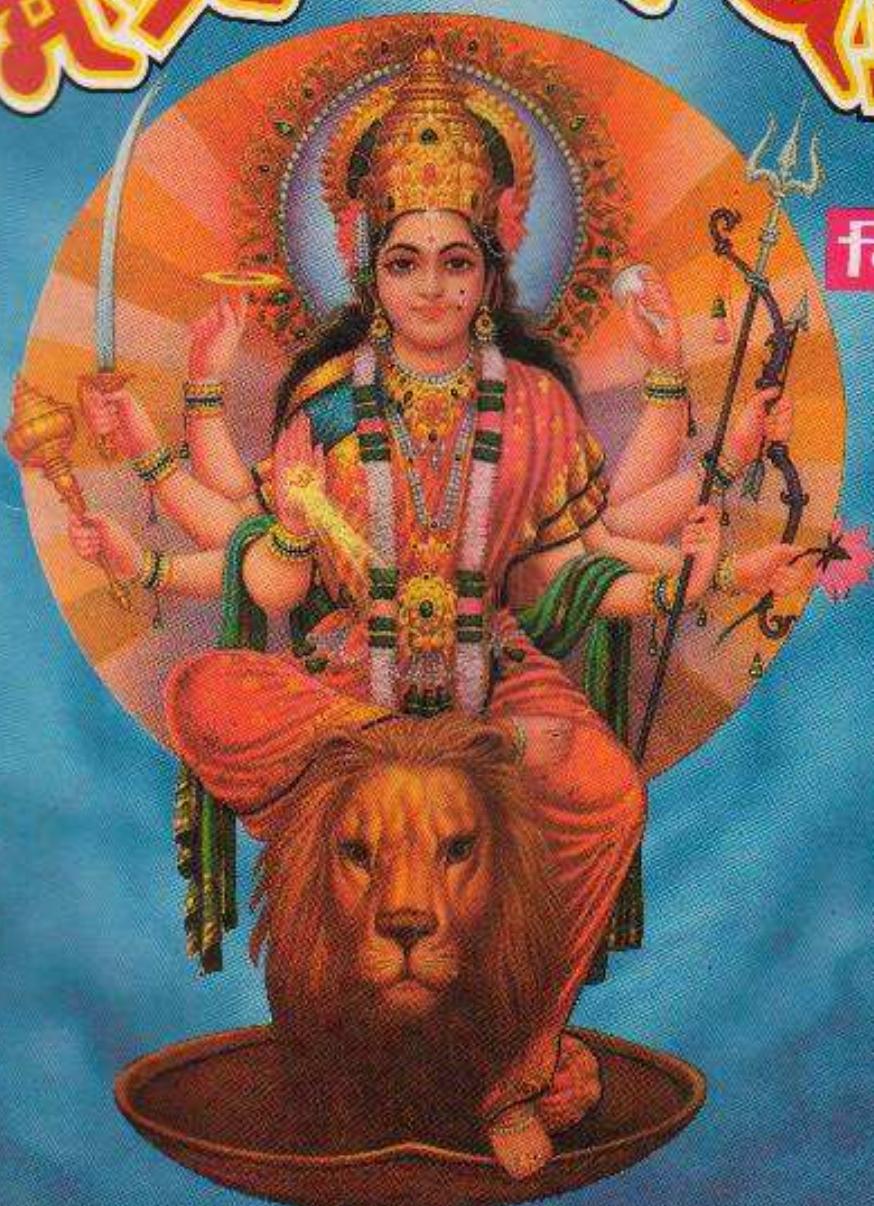
संस्कृत : 97

NOT FOR SALE
विक्री के लिए नहीं

मूल्य : 18/-

श्री तांत्र देवी

विज्ञान



शास्त्रोक्त दुर्गा पूजन

कंकाल भैरव

हस्त मदाहमों से रोगोपचार

ग्रन्थ आरीज



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server



हिंदू

धर्म

वर्ष 17
सितंबर 1997

अंक 9
पृष्ठ 84



सद्गुरुदेव

निखिल प्राण संघ 3

दीक्षा

शक्तिपात्र दीक्षा 41

स्तम्भ

एक दृष्टि में 23

मैं समय हूँ 28

साधक साक्षी हैं 29

कालचक 37

हलचल 44

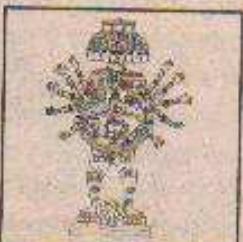
कराहमिहि ने कहा 47

नक्षत्रों की बाणी 58

इस मास में 72

विशेष

हकीकत में 63



साधना

तीक्ष्ण त्रिशक्ति

15

कंकाल भैरव

19

विजय गणपति

25

सुहाग पंचमी

31

इबोपी

35

विश्वकर्मा सप्तमणि

39

मार्ग या न मार्गे

56

प्रचण्ड चण्डिका

60

प्रबोधिनी एकादशी

69

चिकित्सा

देह का दुश्मन 48



नवरात्रि

जयति जय 13

विदिता हो देवी 77

शास्त्रोक्त नवरात्रि 82

तथ्य

सात शरीर 53

आवाहन

नवरात्रि 45

दीपावली 80

प्रधान सम्पादक

श्री चन्द्रकिशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

एव संयोजक

श्री जैलाल चन्द्र श्रीमाली

सम्पादक मण्डल

डॉ. इशामल कुमार बनर्जी,

श्री गणेश बटाणी, श्री गुरु सेनक,

श्री वसन नारद, श्री अनन्त नाथो,

श्री फ्रान्स बोसी, श्री रोबेन लेप्स,

श्री एस. सी. कालरा,

श्री एम. आर. वर्णेन्ट

वित्तीय सलाहकार

श्री अरविन्द श्रीमाली

वकीरग मेवशान

श्रीमती अनक यादेय,

श्री प. क. पिंडा, श्री गूरु दग्गल,

सुश्री लिजयलक्ष्मी,

श्री जय मिह, श्री मनोज कुमार

** नम शंख **

संग्रहक

सिद्धाश्रम,

३०६ कोठार एन्ड बै

फिल्म्स, दिल्ली ११००३४

फोन : ०११- ७१८२३४४८,

देलीफैक्ट्स : ०११- २१९६७००

मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान

१०० श्रीमाली नारे,

हाईकोट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज.)

फोन : ०२९१- ३२२१०,

देलीफैक्ट्स : ०२९१- ३२०१०

मूल्य (भारत में)

एक अंक : १८/-

वार्षिक : १९५/-

प्रकाशक एवं स्वामित्व

श्री जैलाल चन्द्र श्रीमाली

द्वारा

विधा पब्लिकेशन्स

प्रा. लिमिटेड

D-160 B, मेक्टा VII,

नोएडा से मुंद्रित

तथा

मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान,

हाईकोट कालोनी,

जोधपुर से प्रकाशित।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंड-तंत्र-यत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सम्पादक का महमत होने अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुत्रक बनने वाले पादक पत्रिका में प्रकाशित सूरी सामग्री को गल्प समझे। किसी नाम, म्यान या भटन कि किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई भटन, नाम या तथ्य निल जाए, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक द्वयकलन या धू-संत होते हैं, अतः उनके उत्तर या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में जाद विवाद या उक्त मान्य नहीं होगा और न ही उसके लिए लेखक, प्रकाशक, पूरक या सम्पादक जिम्मेवाले होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमित नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के जाद विवाद में जोधपुर या थल्लू ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री के साथक या जातक कहाँ से भी जान कर सकते हैं। पत्रिका का यात्रिय से नायाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अश्वा बैठ भेजते हैं, पर किसी भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में अधिक प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी विष्णुता नहीं होगी। यात्रक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका का यात्रिय से नायाने, सामग्री के गूह्य पर तर्क या जाद विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का जारिक शुल्क बर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष रूप अपरिशुद्ध कारणों से पत्रिका को बैमासिक या बंद करना पड़े तो वित्तन भी अंक आपको प्राप्त हो जुके हैं, उनीं में वाचिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय मददगता को पूर्ण समझें, इसमें किसी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्फीकर नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आलोचना सदस्यता मान्य है, यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बंद करना पड़े, तो आलोचना सदस्यता भी उस दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ को जिम्मेवारी साथक जी रख्य की होनी तथा साधक कोई ऐसी उपायता, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो ऐतिक, सामाजिक पूर्व कालीन नियमों के विपरीत है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या शंखासी लेखकों के विचार मत्र होते हैं, उन पर धारा का आवरण पत्रिका के कानूनारियों को तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों को मांग पर उस अंक में पत्रिका के प्रियते लेखों का भी ज्ञान का तांत्र समावेश किया गया है, जिससे कि नज़ोर पाठक लाभ उठ सके। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या येत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बनाते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना अव्यवहीन है। आवरण पूर्ण पर या अन्य जो भी प्रोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फैले भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का दर्तव्य यह नहीं है, कि साधक उसमें सम्बन्धित लाभ दूरन प्राप्त कर सके, वह ही धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण अव्यवहीन विश्वास के सब ही दोषों प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुह्यता या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी बहन नहीं करें।

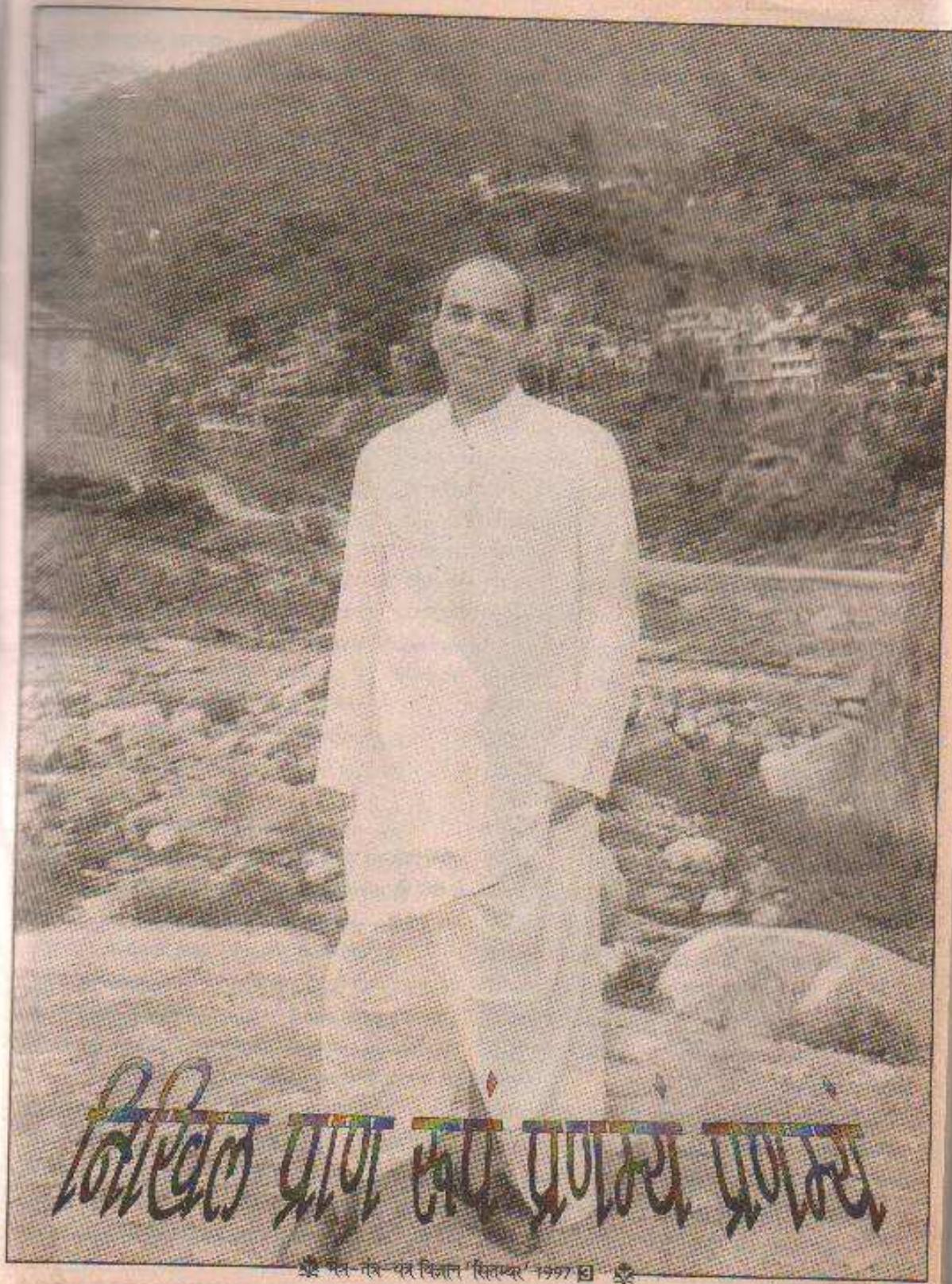
प्रार्थना

भद्रचक्र भेदनिपुणां परतत्त्वरूपां,
सिद्धेश्वरी भगवतीं निखिल प्रभावां।
विद्युलता सदृश कुण्डलिनीं शिवां तां;
देवीं प्रणीमि सततं भवप्रशं हन्त्रीम्॥

मूलाधारादि घटचक्रों का भेदन करने वाली, परम ब्रह्म स्वरूपा, समस्त सिद्धियों को प्रदान करने वाली, अबन्न प्रभाव से परिपूर्ण विद्युल प्रकाश की तरह प्रभा युक्त, परम कल्याणमयी, रंगार पाथ से साधकों को विमुक्त करने वाली भगवती कुण्डलिनी का मैं आवपूर्ण हृदय से नमन अर्पित करता हूं।

आरिवरी सत्य

श्री रामकृष्ण परमहंस, जो कि पढ़-लिखे नहीं, किन्तु आत्म चेतना से युक्त व्यक्तित्व थे, वे विद्वानों के बोच में यहने से सदैव कलराते थे और जब भी उनसे किसी गृह चर्चा पर वार्तालाप करने के लिए आग्रह किया जाता, तो वे बालकों के समान बहाना बना कर कलरा जाया करते थे, किन्तु यदि संघोगवश उन्हें विद्वानों के बीच बोलना पड़ ही जाए, तो वह नहीं कहाँ से उनमें एक अनोखी चैतन्यता का प्रादुर्भाव हो जाता या तथा वे बिना किसी झिल्लक या संकोच के घंटों धारा प्रवाह बोल भी सकते थे। उन्होंने इसका रहस्य इस प्रकार बताया था—“जिस प्रकार कोई अनाज तौलने वाला अनाज तौल कर फेंकता जाता है और पीछे से एक आदमी उसे टीकरी में भर कर पकड़ता जाता है, वही किया 'मां' मेरे साथ करती है, मैं इससे अधिक कुछ भी नहीं जानता।” अस्तुतः वे तो सब कुछ जान ही चुके थे। वे जान गए थे, कि खाली करना और निरन्तर खाली करते रहना, यही समस्त क्रियाओं का रहस्य है। वे जानते थे, कि वे उलटते जाएंगे और पीछे से 'मां' टोकरा पकड़ती हो जाएंगी। केवल ज्ञान के शेष में ही नहीं वरन् जीवन के सभी पक्षों में जो जितनी तीव्रता से आगे बढ़ी और उड़ेलाना सीख जाता है, उसका कोष स्वतः ही भरता चला जाता है। इस क्रिया का रहस्य कोई नहीं जानता और यह सत्य भी है। इसमें संवेद ह के लिए कोई स्थान ही नहीं। रुका जल जिस प्रकार से दुर्बन्ध युक्त ही जाता है, उसी प्रकार से रुका मन, रुका तन और रुका हुआ धन— सभी कुछ जड़ होकर स्वच्छता खो देते हैं। जिसको इतना भी विश्वास नहीं हुआ, कि मेरा खाली पात्र तो सदैव वही 'मां' भर ही देगा, वह आगे किसी साधना में प्रगति करेगा भी तो कैसे? क्योंकि जास्ता ही तो साधना का आधार है। प्रकृति को तो जो कुछ लेना होता है, वह उसे ले ही लेती है, यहाँ तक कि व्यक्ति का जीवन भी। यदि कोई स्वेच्छा से प्रदान करता है, तो प्रत्युत्तर में वह आनन्द रस को चखते रहता है, अन्यथा तो सञ्चय करके भी अनुपूर्ण शेष रह ही जाती है। इसी कारणवश त्याग की महिमा को सर्वश्रेष्ठ कह कर वर्णित किया गया है। साथ ही वही त्याग सर्वश्रेष्ठ है, जिसे व्यक्ति वह समझ कर करे, कि वह तो 'मां' के दिए 'टीकरे' ही खाली कर रहा है।



प्राण रामं प्राण्यं प्राण्यं

संस्कृत-पत्र-विद्वान् 'सितार' - १९७७

ॐ

ठ वर्षी बाद पुनः यह क्षण आया था, जब मैं स्वामी भूमानन्द जी के समझ उपस्थित था। सचमुच कितना परिवर्तन आ गया था इन गुजरे हुए आठ वर्षों में, सब कुछ तो बदल गया था। यदि कुछ नहीं बदला था, तो वह था भूमानन्द जी का गुरुदेव के प्रति प्रेम। इस बात का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है, कि जैसे ही मैं उनके पास पहुंचा, मुझे देखते ही बतवास उनकी आँखों से आंसू बहने लगे, कंठ अवहङ्क हो गया। मुझे उन्होंने अपने घीने से लगा लिया, ब्यौकि मैं गुरु आश्रम से जो आया था।

कैसे हैं मेरे गुरुदेव? किस स्थिति में रह रहे हैं वे? क्या सामाजिक चेतना में उनके प्राप्त कुछ परिवर्तन आया है? क्या उनके गुहरस्थ शिष्य उनकी उपस्थिति को, उनके साहचर्य को महत्ता को समझ रहे हैं? गुरुदेव प्रसन्न तो हैं? —

इस तरह के अनेक प्रश्न

उन्होंने एक साथ मेरे सामने रख दिये।

उनका गुरुदेव के प्रति निश्छल प्रेम देखकर मैं स्वयं अपने आंसूओं को रोक नहीं सका। वे अपने विचारों में खोये, धीरे-धीरे चलते हुए कुटिया के बाहर जा कर एक प्रस्तरखण्ड पर बैठ गए। निश्चय ही वे गुरुदेव के प्रति गहन चिन्तन में डूब गए थे। मैं भी कुछ समय तक उनके साथ शांत भाव से बैठा उनके उस दिव्य और अलौकिक आश्रम का दूर से ही निरीक्षण करता रहा।

स्वामी जी का आश्रम अत्यन्त शांत था, आसपास कई प्रकार के छोटे-बड़े वृक्ष उस आश्रम की शोभा बढ़ा रहे थे, पक्षियों का मधुर कलरव अत्यन्त ही मनोहर लग रहा था, सूर्य भी कुछ जल्दी ही अस्त होने की तैयारी में प्रतीत हो रहा था।

कुछ समय बाद भूमानन्द जी ने ही मौन भंग करते



हुए कहा — 'बलो, संध्या आरती का समय हो रहा है, पहले स्नान कर लो, फिर आरती के बाद बैठ कर चर्चा करेंगे।

स्वामी जी के आश्रम से थोड़ी ही दूरी पर एक कुआ था। यह स्थान लगभग सुनसान ही रहता था, आबादी वाले क्षेत्र आश्रम से लगभग 4-5 किलोमीटर की दूरी पर थे।

जब पूज्य गुरुदेव अपने सन्ध्यस्त स्वरूप में जालों में, हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में भ्रमणशील थे, उसी समय उन्होंने पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त की थी। पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से उन्होंने कई प्रकार की जटिल एवं गोपनीय साधनाएं भी सम्पन्न की थीं तथा जंगली जड़ी-बूटियों व उनके उपयोग का ज्ञान भी प्राप्त किया था। अपने जीवन का एक लम्बा काल खण्ड उन्होंने पूज्य गुरुदेव के साथ उनकी सेवा में व्यतीत किया था।

स्वामी जी का व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक था, लम्बा-चौड़ा कद, बलिष्ठ शरीर, चौड़ा वक्षस्थल, उत्तर लालाट आदि उनके अपने आपमें ही मिठ योगों होना

परिभाषित कर रहे थे। लगभग 60-65 वर्ष की अवस्था में भी वे ऐसे ही बलिष्ठ और स्वरथ दिखाई पड़ रहे थे, जैसे आठ वर्ष पूर्व थे।

मैंने स्वामी जी और उनके अन्य शिष्यों के साथ कुएं पर जाकर स्नान किया तथा आश्रम में आकर पूज्य गुरुदेव का पूजन तथा उनकी आरती सम्पन्न की। इसी बीच स्वामी जी के कुछ शिष्यों ने भोजन की व्यवस्था भी कर ली थीं और स्वामी जी ने तथा मैंने एक साथ ही भोजन किया।

भोजनोपरान्त स्वामी जी और मैं उस कुटिया में गए, जिसमें स्वामी जी निवास करते थे। कुटिया में जल रहे दीपक के प्रकाश में पूज्य गुरुदेव का लालिभा युक्त सन्ध्यस्त स्वरूप का चित्र अत्यन्त ही सुन्दर और मनमोहक प्रतीत हो रहा था।

स्वामी जी सीधे पूज्य गुरुदेव के चित्र के समीप

गह और अन
किया, अन
विद्वान् के न
कम्बल था,
जाने किस

अभी तक
उम कुटिया
हो जाती थी
का ही प्रभा

जब मिनी हो
“जब पूज्य
लम्बा सपाय
से दूर गुरु

लग अपूर्ण
जान आप
स
जन्मल ही
चली-चलो
हूँक अरने
ने सुन च
देंका न
उत्तिष्ठति
जान दे
प्रतीका मे

जन्मल ही
चली-चलो
हूँक अरने
ने सुन च
देंका न
उत्तिष्ठति
जान दे
प्रतीका मे

विशाल दे
और सम्ब
लग रही
लगोट हो
ओर देखा
कुत्ते की।
लगा। स
... और
को चला

कारण न
था। वे
अधानक

जब और अत्यन्त ही भावपूर्ण हृदय से उन्हें साष्टांग प्रणाम किया, उसके बाद वे अपने विस्तर पर आकर बैठ गए। विश्वाल के नाम पर उनके पास केवल एक चटाई और एक कम्बल था, लेकिन उन्होंने मेरे लिए न जाने कहां से और न जाने किस प्रकार नवी रजाई की व्यवस्था की, यह मुझे जब्तक तक ममझ में नहीं आया। आवश्यकता पड़ने पर उस कटिया में सभी प्रकार की जरूरी वस्तुएं स्वतः उपलब्ध हो जाती थीं, यह मध्य स्वामी जी की साधना और सिद्धियों का ही प्रभाव था।

जब वे पूर्ण आराम के साथ निश्चन्त होकर बैठ गए, वह मैंने ही प्रकृति के सौन को भंग करते हुए उनसे पूछा— “जब पूज्य गुरुदेव अपने संन्यास जीवन में थे, तो आपने एक लम्बा समय उनके साथ व्यतीत किया था। आप किस प्रकार से पूज्य गुरुदेव से जुड़े? निश्चय ही आपने पूज्य गुरुदेव के साथ अमूल्य क्षण व्यतीत किये हैं, उन क्षणों को याद करते हुए आज आपको कौसा प्रतीत होता है?”

स्वामी जी ने कुछ समय तक तो मुझे निहारा, फिर वे अत्यन्त ही शांत और गम्भीर स्वर में बोले— “मुझे आज भी खली-भाँखी वह क्षण याद है, जब मैं घने जंगलों से गुजरता हुआ अपने गांव की ओर जा रहा था, कि अचानक एक बाघ ने मुझ पर आक्रमण कर दिया। मैं हतप्रभ सा स्मृति शून्य होकर रह गया, मुझे अपने सामने साक्षात् यमराज की उपस्थिति प्रतीत होने लगी थी। मेरी सारी चेतना शक्ति जवाब दे चुकी थी और मैं केवल अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में था।”

“अचानक ही मेरे सामने एक दिव्य और विशाल देहधारी साधु प्रकट हुए। बड़ी-बड़ी जटाएं और लम्बी दाढ़ी उनके गोरे रंग पर अत्यन्त ही सुन्दर लग रही थी, कड़ाके की ठंड में भी वे मात्र एक लंगोट ही धारण किये हुए थे। जैसे ही बाघ ने उनकी ओर देखा, आश्चर्य... वह हिंसक पशु एक पालतू कुत्ते की तरह दुम हिलाता हुआ उनके चरणों को छूपने लगा। साथु ने कड़क कर कहा— ‘जा अब भग जा’... और इतना सुनते ही वह बाघ जंगल में एक ओर को चला गया।”

“मेरे तो प्राण ही सूख चले थे, मैं भय के कारण न चल ही पा रहा था और न ओल ही पा रहा था। वे मेरे पास आए और मेरी आँखों में ताका। अचानक एक तीव्र विद्युत प्रवाह सा मुझे अनुभव हुआ

और मेरी संज्ञा शून्य देह में गजब का बल और आत्मविश्वास मुझे प्रतीत होने लगा। मेरे नेत्रों से आंसू बह निकले और मैं उनके चरणों में लोट गया।”

“तब उन्होंने मुझे उड़ाया और अत्यन्त ही स्नेह सिक्ख शब्दों में बोले— ‘वत्स! मैं कब से तुम्हारी राह देखा रहा था और आज पिसे भी, तो जीवन के अनितम क्षणों में... खैर... अब तुम्हें मृत्यु से कोई भय नहीं। आज मैं तुम्हें दीक्षा दूंगा, आज मैं तुम्हें शिष्यत्व प्रदान करूंगा। यहां पास मैं झील हूं, तुम उसमें स्नान करके आओ।’”

“जब मैं स्नान करके आया, तो वही एक शिला पर उन्होंने मुझे बैठने का आदेश दिया, मैं चुपचाप जाकर उस शिला पर बैठ गया। तब वे मेरे पास आए और शून्य से ही सभी प्रकार की दीक्षा सामग्री प्राप्त कर मुझे दीक्षा प्रदान की। जब उन्होंने मुझ पर शक्तिपात करते हुए अपना अंगुष्ठ मेरे ललाट पर लगाया, एक अंगीक सी ज्वाला मेरे मूलाधार से उठ कर रीढ़ की हड्डी में से होकर सहस्रार की ओर बढ़ती प्रतीत हुई। सारा ब्रह्माण्ड मेरे सामने नृत्यमय हो उठा था, मैं एक अंगीक आनन्द से भर उत्तम था, मेरी आँखें अपने-आप बंद होती चली गई... और जब खूलीं, तो पूरे सोलह धण्डे व्यतीत हो चुके थे। मैंने समाधि का अनुभव कर लिया था, उस समाधि अवस्था में मैंने अपने व पूज्य गुरुदेव के कई जन्मों के सम्बन्धों को देखा था, उनकी कृपा को



अनुभव किया था।"

"यही थी पूज्य गुरुदेव की मुझ अकिञ्चन पर महाती कृपा... और इसके बाद जो कृपा का सागर उमड़ा, तो उमड़ता ही चला गया। ऐसे थे मेरे गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी।" ... और ऐसा कहते कहते वे अतीत की आदों में खो गए, उनकी आँखों से पुनः अश्रुधार प्रवाहित होने लगा, वे एकटक पूज्य गुरुदेव के चित्र को निहर रहे थे।

मैंने स्वामी जी से बार्तालाप को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से पुनः एक प्रश्न और पूछ लिया - "स्वामी जी! पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ शिष्यों के बारे में आपको क्या राय है?"

स्वामी जी ने उसी क्षण मेरी ओर निहारा, ज्योंकि मैं भी पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ शिष्यों में से एक था। मेरी ओर देखते हुए वे बोले - "पूज्य गुरुदेव के गृहस्थ शिष्य तो उस नवजन्मे शिशु की तरह हैं, जिन्हें यह भी भान नहीं रहता, कि वे जिस विस्तर पर, जिस मायावी बिछोने पर सो रहे हैं, वह मल-मूत्र से सना हुआ है। वे उस विस्तर पर पढ़े-पढ़े किलकारियों मारते रहेंगे, उस विस्तर को ही अपनी सम्पूर्ण दुनिया समझ कर किलोले करते रहेंगे, कभी उसे त्यागने का प्रयास नहीं करेंगे।"

"इसके बाद यदि करोंगे, तो सिर्फ स्वार्य चिन्तन... भूख लगे, तो रोना... प्यास लगे, तो रोना... थोड़ा सा कष्ट अथवा पोड़ा मिले, तो रोना... जैसे रोना, खाना और मल-मूत्र में पड़े रहना

ही उनकी नियति बन चुकी है।"

"वे अब इतने अबोध सो नहीं हैं! कब वे अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करेंगे? कब पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति को समझेंगे? जिनके समझ मिद्दाश्रम का बड़े से बड़ा योगी भी पलके ऊपर कर बात नहीं कर मकता, जिनका स्मारण मात्र करते ही वे अपने आपमें नत हो जाते हैं, आज उन्होंने गुरुदेव के समझ वे गृहस्थ शिष्य कितनी छिठाई के साथ खड़े होकर आत करते हैं, उनका उपहास करते हैं, उनकी आज्ञा की अवहेलना करते हैं। कितने दुर्भाग्यशाली हैं वे? क्या हो गया इनके शिष्यत्व को?"

"... और पूज्य गुरुदेव... गुरुदेव ने तो जैसे निश्चय ही कर लिया है इन अंगारों में जलने का... बार बार मल-मूत्र से सने वर्जों को बदलने का... उनके रोने पर उन्हें दुर्घटन करने का..."

"प्रभु! व्यां नहीं आप संचयस्त स्वरूप धारण कर लेते... व्यां नहीं आप निखिलेश्वरानन्द स्वरूप में इनके सामने आकर खड़े होते... जिस प्रकार आप हमें गलती होने पर ठोकर मार देते हैं, व्यां नहीं आप इनको भी ठोकर मारते... मुझे पूरा विश्वास है प्रभु! आपकी एक ठोकर इनके पूरे जीवन को बदल देगी, इनकी खोई चेतना को जागृत कर देगी, इनके शिष्यत्व को उजागर कर देगी, ये भी अपने आपको पहिचानने लग जायेंगे, ये आपको भी समझने लग जायेंगे, अपने कुल

को, गोत्र को जानने समर्गेंगे।''

..... यह कहते-कहते
नदानी जो उठे और उठ कर पानी
पीने लगे। मैं देख रहा था, कि उनका
जल अवश्य हो चुका था, उनका
उम्र अतिकृत हो व्यथित हो चुका
था, उस-बार फूलाई रोकने के प्रयास
में उनसे बोला भी नहीं आ रहा था।

अतः मैंने स्वामी जी के नामस को देखते हुए बार्तालाप का विषय बढ़ावा और पूछा - "स्वामी जी! एक शिष्य के जीवन का क्या उद्देश्य होता है?"

वे शायद मेरे भावों को
मन्द गए थे, इसलिए मुस्कुराने का
असफल प्रयास करते हुए बोले
— “शिष्य के जीवन का लक्ष्य
जीवन की उच्चतम अवस्थाओं को
प्राप्त करना है, अध्यात्म की ऊँचाईयों
को स्पर्श करना है, संसार की सहजता
और नश्वरता को समझते हुए मोक्ष
को प्राप्त करना है। यही एक शिष्य
के जीवन का लक्ष्य है और यही
होना भी चाहिए।”

— “अच्छा स्वामी जी
एक बात और बताइए। आज के
युग में शिष्य जीवन के इन सक्षयों
को किस प्रकार प्राप्त करें ? ”

— “शिष्य अपने जीवन में इन लक्षणों को तब प्राप्त कर पायेगा, जब उसका कोई गुरु होगा, गुरु . . . सभी प्रकार से सशक्त और समर्थ . . . जीवन के सभी क्षेत्रों का अनुभवी, ज्ञाता, ब्रह्माण्ड की समस्त विद्याओं का पूर्ण ज्ञाता, योग, वेद, शास्त्र, उपनिषद् जिनके रोम-रोम से प्रकट होता हो, जो अपने आपमें तेज तथा ओज से भरपूर हों; ऐसे गुरु यदि किसी को मिल जाएं, तो बिना ना-नुच किये

उनके चरणों में अपने आपको समर्पित कर देना चाहिए।”

"जहां पूर्ण समर्पण है,
वहां जीवन का आनन्द है, ब्रह्मानन्द
है, मस्ती है, संसार के सभी
सुख-चैभव उसके समक्ष बीने हैं।
समर्पित शिष्य के उसके सामने
जीवन की पूर्णता हाथ चांधे खड़ी
रहती है। फिर व्यक्ति अपने जीवन
काल में वह सभी कुछ प्राप्त कर
लेता है, जो एक मनुष्य के जीवन
का, एक शिष्य के जीवन का लक्ष्य
होता है।"

“यह तो आप सभी गृहस्थ शिष्यों का पूर्ण सौभाग्य है, कि ऐसे सदगुर आपके मध्य विचरण करते हैं। यह तो हम सभी सन्न्यासी शिष्यों के लिए ईर्ष्या की बात है, हमें अपने सन्न्यास से भी धूषा होने लगती है। कई बार सोचता हूं, कि मैं भी गृहस्थ शिष्यों के मध्य में जाकर रहने लग जाऊं, सेकिन गुरु आज्ञा का उल्लंघन करना हम सन्न्यासी शिष्यों के बस की बात नहीं, क्योंकि हमें निखिलेश्वरानन्द का क्रोधमय स्वरूप भी मालूम है। हम ऐसी भूल नहीं कर सकते”
और ऐसा कहते-कहते वे भत्यन्त व्यथित और दुःखी हो गए थे।

मैं स्थामी जी के आश्रम में तीन दिनों तक ठहरा, इन तीन दिनों के निवास के दौरान मैंने वहाँ अहुत कुछ देखा, जिसको मैं समय-समय पर साधकों के लाभार्थि लिखता रहूँगा। —**प्रेषण**

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की वार्षिक सदस्यता

एक वर्ष के लिए पत्रिका सदस्य
बनने पर आपको प्राप्त होगा
अत्यन्त बुर्जु एवं अति

विशिष्ट उपहार

साक्षात् अर्गला

यह सौभाग्य आपको प्राप्त होगा पत्रिका सदस्यता प्राप्त कर; यदि आप सदस्य हैं, तो अपने किसी मित्र, सम्बन्धी, रिश्तेदार या स्वजन को सदस्य बनावें और प्राप्त करें यह अद्वितीय उपहार।

जिसे प्राप्त कर आप स्वतः इसकी महिमा का गुणगान करने लगेंगे, क्योंकि यह एक सिद्धिप्रदा अर्गला है और किसी भी प्रकार की साधना में सफलता के लिए आवश्यक है। इस अति विशिष्ट उपहार द्वारा पत्रिका ने तो आपके लिए सौभाग्य का द्वार खोल दिया है (इस गुटिका को सवा महीने तक स्थापित कर धूप-दीप दिखायें, मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है, फिर नदी में विसर्जित कर दें।)

अब लिशय आपको करना है, हम तो सिर्फ इतनी ही परामर्श दे सकते हैं, कि अपने आपको गणित व फैंस इस घर आये सौमान्य से।

यह योजना मात्र 30 दिनों के लिए है

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/-
डाक ऊर्च अतिरिक्त।

सम्पर्क इस पते पर करें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) , फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

आश्विन नवरात्रि के उपलक्ष्य पर

देश की राजधानी दिल्ली में

2-3-4 अक्टूबर 1997 के इन पावन दिवसों में

सिद्धिंद्राश्री नवरात्रि आधाना शिविर

शिविर स्थल : सिद्धस्थल, दिल्ली

(पहले आप सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा आ जायें,
इसके नजदीक ही अपना सिद्धस्थल है।)

शिविर शुल्क - 430/-

मेरे शिष्य, मेरे आत्मीय,

मैं पुनः तुम्हें पुकार रहा हूँ पुनः तुम्हें अपने पास लूला रहा हूँ पास लूला कर तुम्हें पुनः अपनी देवता
देना चाहता हूँ पुनः अपनी तपस्या का अंश तुम्हें प्रकाश करना चाहता हूँ क्योंकि पुनः तुम निराशा व हताशा
के बलबल में फँसने लगे हो, पुनः तजाव़ तुम पर लापी होने लगा है, पुनः समाज की विकृतियाँ तुम्हारे लिए
बेडिया बन कर उपरिख्यत होने लगी हैं, पुनः बाधाएँ तुम्हारे सामने सिर उठाने लगी हैं...

... और वह सब इसलिए हुआ, क्योंकि तुम हंस हो कर भी बगुलों के बीच जा कर खुब को बगुला
समझने लगे, सिंह हो कर भी भेड़ों के बीच खुब को भेड़ रामझने लगे, आज्ञापाशों से जाकड़ मनुष्यों के बीच
खुब को भी बन्धन युक्त मान बैठे...

मैं पुनः तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम मेरे शिष्य हो, सामाजिक मनुष्य वर्गी, मैं पुनः तुम्हें याद दिलाना
चाहता हूँ कि तुम हंस हो, बगुले वही, मैं पुनः तुम्हें छुहसास करना चाहता हूँ कि तुम सिंह हो, भेड़ वही... और
साथ ही तुम्हें पुनः यह समझाना चाहता हूँ कि तुम्हें सुरक्षा होना है, समस्त बन्धनों को काट कर फेंक केना है,
समस्त बाधाओं को पैरों की लोकर से किनारे कर केना है और प्राप्त कर लेना है उस वेष्टना, अद्वितीयता
को, जिसे प्राप्त करना तुम्हारे जीवन का लक्ष्य है, उद्देश्य है...

और इसके लिए तुम्हें पुनः मेरे पास आना होगा, पुनः मेरे पास बैठना होगा, सुन्न में विसर्जित
होना होगा, मुझमें समर्पित होना पड़ेगा और वह सब कुछ करना पड़ेगा, जो मेरी आज्ञा होगी...

... और इसीलिए मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ, आवाज दे रहा हूँ, आवाहन कर रहा हूँ... और साथ ही
आग प्रकाश कर रहा हूँ, कि तुम्हें इस अवसर पर आना ही है, हर ठाली में आना है... मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर
रहा हूँ...

तुम्हारा गुरुकेव

जीवन एक सतत गतिशील प्रक्रिया है, जिसे पूर्णता तक पहुंचाना ही प्रत्येक व्यक्ति का धर्म और कर्तव्य है। लेकिन वह इतना सहज और सरल नहीं है, क्योंकि इसके अन्दर जो दोष, जो न्यूनताएं, जो कमियाँ हैं, वे मात्र किसी एक जन्म की पूँजी नहीं, अपितु कई-कई जन्मों का सञ्चय है, जिसके अनुसार दुःख, दारिद्र्य, बाधाएं, समस्याएं, कष्ट, पीड़ा आदि व्याप्त होते रहते हैं।

लेकिन इन बाधाओं और समस्याओं से अनश्वरत जूँड़ते रहना और और इनमें पिस कर समाप्त हो जाना जीवन का हेतु नहीं है, अपितु जीवन तो इसलिए है, कि हम साधना पथ का आश्रय लेते हुए, अपने जीवन को सभी दुष्टियों से पूर्णता प्रदान करते हुए सिद्धांश्रम गमन कर सकें, योग्य प्राप्त कर सकें।

और जब साधना पथ की बात चलती है, तो सर्वप्रथम स्थान आता है शक्ति साधनाओं का, क्योंकि शक्ति की सहायता प्राप्त किये विना, शक्ति सम्पन्न हुए जिना व्यक्ति अपने जीवन की विपरीतताओं को समाप्त नहीं कर सकता और न ही वह किसी उच्चता की ओर अग्रसर हो सकता है। साधक के लिए तो शक्ति साधना महत्वपूर्ण ही नहीं, परमावश्यक भी है, पुरुष से पुरुषोत्तम बनने के लिए, मानव से महामानव बनने के लिए, क्षुद्रता से विराटता को प्राप्त करने के लिए यह प्रथम सोपान है।

और शक्ति साधनाओं के लिए नवरात्रि का महत्व तो विदित ही है। कहा भी गया है —

शरत् काले महापूजा छियते या च वार्षिकी ॥

तस्यां मैत्रत्नमहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः ॥

सर्वबाधा विनिमूको धनधात्म्यं समन्वितः ॥

मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न सशयः ॥

भगवती के शक्तिमय स्वरूप को जीवन में उतारने के लिए साधना का मार्ग अपनाना आवश्यक है और इस मार्ग के मूल सूत्रधार सदगुर ही होते हैं... और वे आपको इस शक्ति पर्व पर अपने पास बुला रहे हैं। गुरु जब भी शिष्य को अपने हृदय से लगाने के लिए उसका इस तरह का आहान करते हैं, तो इसमें अनेकों गृह रहस्य छुपे होते हैं। उन रहस्यों को तो केवल गुरु ही जानते हैं, लेकिन शिष्य का भी कर्तव्य है, कि वह हर क्षण तत्पर रहे, जिससे कि कहाँ भी चूक न होने पाये, कोई भी अवसर व्यर्थ न जाने पाये, इन पावन दिवसों में आपका उनके समीप उपस्थित होना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि एक शरीर के लिए प्राण। इन क्षणों में चूकना एक बहुत बड़ी भूल होगी, नासमझी होगी, क्योंकि उत्तम शिष्य बही है, जो सभी बाधाओं को लाघ कर गुरु के एक आहान पर उनके सामने आज्ञा पालन के लिए उपस्थित हो जाय... .

... और हमें विश्वास है, कि आप ऐसे शिष्य हैं, क्योंकि आप पूज्य गुरुदेव के चेतना रस से सिद्धित हैं... और इसीलिए हम आपका आहान कर रहे हैं इस शिविर में, जहां आप पूज्य गुरुदेव के सात्रिध्य में उच्चकोटि की साधनाएं, दीक्षाएं प्राप्त कर श्रेष्ठता और अद्वितीयता के पथ पर अग्रसर हो सकें... .

... और हमें यह भी विश्वास है, कि आप अवश्य आयेंगे, हर हालत में आयेंगे... .

सिद्धद्वारी नवरात्रि आध्या शिविर

शिविर स्थल : सिद्धस्थल, दिल्ली

इस सिद्धिदात्री नवरात्रि साधना शिविर में सम्पन्न होंगी वे अद्वितीय और दुर्लभ साधनाएं, जो न कभी देखी ज सुनी

अपने समस्त शत्रुओं का याम-मर्दन करने व शत्रु बाधा की समाप्ति हेतु एक अद्भुत प्रयोग,
जिसे सम्पन्न करने के उपरान्त शत्रु उस साधक के समक्ष सिर उठा ही नहीं सकते

○ सिद्धिदात्री शत्रुमर्त्तनी यज्ञकाली प्रयोग ○

दस महाविद्याएं इस विश्व की श्रेष्ठतम साधनाएं हैं, उन्हीं में से एक महाविद्या की अधिष्ठात्री
भगवती बगलामुखी के प्रत्यक्ष दर्शन करने हेतु एक दुर्लभ प्रयोग

○ बगलामुखी प्रत्यक्ष प्रयोग ○

जो नवरात्रि के इन दिनों में भगवती दुर्गा के सभी नौ स्वरूपों की साधना-उपासना करते हैं,
उनके लिए भगवती कात्यायनी के प्रत्यक्ष दर्शन करने व उनकी कृपा प्राप्त करने का एक स्वर्णिम अवसर

○ कात्यायनी प्रत्यक्ष दर्शन प्रयोग ○

यदि आप पर या आपके परिवार पर तांत्रिक प्रयोग होते रहते हैं और इसकी वजह से
आपके समक्ष अनेक समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं, नित्य कलह, लड़ाई-झगड़े, धनहानि, मानहानि, मुकदमे,
अकाल मृत्यु आदि का सामना करना पड़ता है, तो इस प्रयोग को सम्पन्न कर आप उनसे छुटकारा पा सकते हैं

○ तंत्र बाधा निवारण प्रयोग (रावण कृत क्रिया ल) ○

तांत्रिक विधि से ऐश्वर्य महालक्ष्मी की सिद्धि कर अपने जीवन से दरिद्रता एवं
विपन्नता को दूर करने तथा सुख, सौभाग्य, सम्पन्नता आदि प्राप्त करने हेतु एक अद्वितीय प्रयोग

○ ऐश्वर्य तांत्रिक महालक्ष्मी सिद्धि प्रयोग ○

आपके मन में कई दुःखों हो सकती हैं, जिन्हें आप शीशातिशीघ्र पूर्ण करना चाहते हों...
और अत्यन्त तीव्र और आश्वर्यवर्जनक प्रभाव युक्त यह प्रयोग इस कार्य में आपकी मदद हेतु ही है

○ शीघ्र मनोकामना सफलता प्रयोग ○

अपने जीवन में सम्पूर्ण रूप से तेजस्विता और प्रब्रण्डता को समाप्ति करने का अद्भुत प्रयोग,
जिसे सम्पन्न करने वाले साधक के समक्ष परेशानियां, विपत्तियां, शत्रु आदि टिक ही नहीं सकते
और उसके आगे सदैव नतमस्तक रहते हैं...

○ कृत्या प्रयोग ○

और साथ ही साधकों को प्राप्त होंगे कुछ अनुपम, अद्वितीय उपहार



पत्रिका के पांच वार्षिक सदस्य बना कर
रु. 195/- × 5 = रु. 975/- जमा कराने पर
निःशुल्क उपहार स्वरूप

वीर वैताल सिद्धि प्रयोग

जिसमें भाग ले कर आप पूज्य गुरुदेव के तपस्यांश को ग्रहण करते हुए
तेजस्वी वीर वैताल को सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे . . .
और इस प्रकार स्वयं भी विक्रमादित्य की तरह अद्वितीय बन सकेंगे . . .



100 पुरानी पत्रिकाएँ प्राप्त करने पर
(न्यौछावार — रु. 15/- × 100 = रु. 1500/-)
निःशुल्क उपहार स्वरूप
शत्रु संहारक प्रबल सिद्धिदायक

धूमावती दीक्षा

जो अपने आपमें महाविद्या दीक्षा है और जिसे प्राप्त कर साधक स्वयं शक्तिमय होने हुए
अजेय बन कर अपने समस्त शत्रुओं का संहार करने में सक्षम होता है,
शत्रु उसके समक्ष आते ही प्रभावहीन हो जाते हैं और
वह सिंह के समान सर्वत्र निर्भय हो कर विचरण करने में समर्थ होता है . . .



विद्वा नह
लगाने समा
योगियों क
कादाचित उ
आत्म चरण

माझान् य
जाता है; त
शोष भी त
को भी ले
रूप हो, त
अधिक न
तो किसी
वह कितन

जब चित्त
है और ज
हो जान के
द्वारा हम न
है, साथन
जगत्परम

जयति जय!

हे जगजननी!!

Nुभा ऐसा होता है, कि समस्त ज्ञान-विज्ञान निरर्थक लगने लग जाता है, बुद्धि स्वतः ही विश्राम करने लग जाती है, जगत को यद्यपि मिथ्या नहीं भी मानें, फिर भी उससे सम्बन्ध विच्छेद सा हुआ लगने लगता है और चित्त के कपाट एकाएक खुल जाते हैं। चेष्टियों को भाषा में कहें, तो चर्प चक्षु तो बंद हो ही जाते हैं, कदाचित् ज्ञान चक्षु और दिव्य चक्षु भी निस्तेज हो जाते हैं तथा आत्म चक्षुओं के जाग्रत होने का अवसर आ जाता है।

यही वह अवसर होता है, जब जगजननी का साक्षात् या आभास होता है। तब मन अपार करुणा में भीग जाता है; द्रढ़, पीड़ा, चातुर्य और कभी-कभी तो स्वयं का बोध भी विलीन हो जाता है। हम अपने जीवन में जिस वस्तु को भी लेकर गविंश हो रहे होते हैं — चाहे वह यौवन हो, रूप हो, धन हो या बुद्धिमता हो, एक छोटे से खिलौने से अधिक नहीं लगती है... जब स्वयं 'माँ' सामने आती है, तो किसी भी खिलौने का क्या मूल्य रह जाता है? भले ही वह कितना ही बेशकीमती क्यों न हो।

इसी कारणवश उनका वर्णन साध्व ली नहीं, क्योंकि जब चित्त सभी प्रकार से शून्य हो जाता है, तभी उनका बोध होता है और ज्यों ही हम उनका वर्णन करने का प्रयास करते हैं, त्यों ही ज्ञान के आधीन होकर चित्त की सहजता खो देते हैं। ज्ञान के द्वारा हम दस महाविद्याओं में से किसी का वर्णन तो कर सकते हैं, साधना को अत्यन्त श्रेष्ठ पद्धति तो खोज सकते हैं, किन्तु जगजननी के साक्षात् का वर्णन नहीं कर सकते।

जो भगवती है, वे अपने प्रिय को कभी भी कुछ देने नहीं आती, अपितु हर बार आकर उसका कुछ ले ही जाती है और शानैः-शानैः यह स्थिति आ जाती है, कि जीवन में कुछ नहीं बचता। तब दुकुर-दुकुर देखने के अतिरिक्त हमारे हाथ कुछ नहीं रह जाता। हम इस प्रकार से हो जाते हैं, कि मैं अपने ज्ञान का, न साधना का, न यौवन का या किसी भी प्रकार का गर्व कर सको। एक प्रकार से बलात् उन पर आश्रित होने की बाध्यता हो जाती है और तब वे स्वतः ही पोषण का दावित्व संभाल लेती हैं। तीक भी है, बिना शिशु हुए मातृज्ञ का आगमन हो भी कैसे? और हम तो दृष्टि में इतना रच-पच गए हैं, कि सहज शिशु वनने को भी तैयार नहीं होते। किन्तु जो भगवती जगजननी है, उनके पास अपनी सभी संतानों के लिए अलग-अलग उपाय है।

वह एक मिथ्या बात है, कि साधक को अपना अहं छोड़ देना चाहिए। आज तक अपना अहं स्वयं कौन छोड़ सका है? यह तो 'माँ' ही है, जो सब कुछ छोन लेती है और तब जात होता है, कि हम व्यर्थ में कितना अधिक बोझ ढो रहे थे, व्यर्थ में कितने अधिक मैं-मेरों के द्वन्द्व में पड़े थे और यह बोझ हटते ही जब चित्त स्वतन्त्र होता है, तो स्वतः ही आंखों से अश्रु प्रवाह होने लग जाता है। पीड़ा होने लग जाती है, कि मैं तो सदा से आश्रित ही था, सदा से बलहीन ही था, किर जीवन के इतने दिन मिथ्या क्यों गंवा दिए?

किन्तु जगजननी भगवती तो 'माँ' हैं, उनकी दृष्टि में कोई भेद कहाँ? जो दिन भर उनके पास बैठा रहा, वह भी उनका अपना और जो दिन भर इधर-उधर की खाक

शक्ति साधना का सीधा सा रहस्य है, अपना सर्वस्व न्यौष्ठावर करने को कठिबद्ध हो जाना। 'सर्वस्व' का अर्थ धन-सम्पत्ति आदि नहीं, अपितु अल्लर्मन का सर्वस्व है। शक्ति साधना अर्जित करने की बात नहीं, अपितु निवेदित कर देने की बात है। शक्ति के चरणों में अपने को खाली करने ही अपार शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। हम जब शक्ति के स्वामी बनना चाहते हैं, तो कुछ-एक सिद्धियां ही हाथ लगती हैं, जबकि समर्पण कर देने पर विश्व की समस्त शक्तियां हमारी हो जाती हैं।

छान कर लौटा, वह भी उनका अपना। हम सभी इश्वर-ज्ञान की खाक छान कर सौटने वाले उहाँ के पुत्र तो हैं।

प्रत्येक साधक की अभिलाषा होती है, कि वह महाविद्या साधना करे, शक्ति साधना करे, क्योंकि साधना का मूल स्वरूप ही शक्तिमयता होता है, जिसकी पूर्णता इस प्रकार से सम्भव होती है, किन्तु क्या इसके रहस्य को समझने की कभी वेद्या की गई? शक्ति साधना का सीधा सा रहस्य है, अपना सर्वस्व न्यौष्ठावर करने को कठिबद्ध हो जाना। 'सर्वस्व' का अर्थ धन-सम्पत्ति आदि नहीं, अपितु अल्लर्मन का सर्वस्व है। शक्ति साधना अर्जित करने की बात नहीं, अपितु निवेदित कर देने की बात है। शक्ति के चरणों में अपने को खाली करते ही अपार शक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। हम जब शक्ति के स्वामी बनना चाहते हैं, तो कुछ-एक सिद्धियां ही हाथ लगती हैं, जबकि समर्पण कर देने पर विश्व को समस्त शक्तियां हमारी हो जाती हैं।

सम्प्रवतः: साधक से अधिक स्थिर वित्त और कोई भी व्यक्ति इस संसार में नहीं होता होगा, क्योंकि जो भोगी है, वे जगत के विषयों में लीन हैं, जो योगी हैं, वे ईश्वर में लीन हैं, किन्तु साधक न तो भोगी है और न ही योगी, अतः उसका चित्त घड़ी के पेण्डुलम की ही भाँति योग और भोग दोनों के स्थय यात्रा करता रहता है। एक क्षण को उसे भोग सार्थक लगते हैं, तो दूसरे ही क्षण वह उनसे विरक्त होकर योग को और भागता है। ठीक इसी मनस्थिति में आने पर शक्ति साधना या जगदम्बा साधना की आवश्यकता एवं महत्ता समझ में आती है। ऐसी स्थिति में भगवती जगज्जननी स्वतः अपने साधक के कल्याण करने का उपाय करती है। इसी कारणवश उनको साधना के विषय में कहा गया है - 'भेरास्थ मोक्षस्थ करस्थ एत्'। वे ही अपनी क्रियाओं के द्वारा जीवन के दोनों आयामों का स्पर्श करवा कर साधक को वस्तुस्थिति का बोध कराती हैं। इसकी कोई व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ में ही कहा है, कि यह तो मां ही जानती है, कि उसकी कौन सी

संतान किस प्रकार से संतुष्ट होंगी।

अधिकांश साधक जगदम्बा के उस स्वरूप का दर्शन करने की इच्छा मन में संजोए रहते हैं, जब वे अष्टभुजी या चतुर्भुजी स्वरूप में 'प्रकट' होंगी। मैं उनकी इस मनोभावना पर चोट करना नहीं चाहता, किन्तु यह अवश्य कहना चाहता हूँ, कि इस प्रकार से वे ऐसे अनेक दुर्लभ अवसर खो देते हैं, जब 'जगदम्बा' विविध रूपों में न केवल साधक के समक्ष उपस्थित होती है, अपितु हित रक्षा का भी व्यान रखती है। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक प्रत्येक नारी मूर्ति को ही जगदम्बा-भगवती का विग्रह मानते हैं और श्रेष्ठतम साधक सम्पूर्ण चराचर जगत को ही उनका स्वरूप मानते हैं, क्योंकि जगज्जननी का स्वभाव है अपने पुत्रों का पालन करना, अतः जिस रूप में हमारा पालन हो रहा है, वह एक प्रकार से उन मां भगवती का ही 'दर्शन' है।

'माँ' को अपने पुत्र के समक्ष आने के लिए कोई आहम्बर नहीं रखना पड़ता, उन्हें आने के लिए कोई विशेष मुहूर्त भी नहीं देखना पड़ता और न ही अपनी कृपा प्रदान करने के लिए कोई आहम्बर रखना पड़ता है। बस हम जितना सहज होते जाते हैं, वे उतनी ही स्पष्ट होती जाती हैं। अनेक श्रेष्ठ साधकों ने इस बात की भली-भाँति अनुभव किया है, कि जीवन की अनेक विकट विद्यों में, जब कहाँ से आशा की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती, तभी सहसा 'चमत्कार' सा होता है और हम उन विकट परिस्थितियों से निकल जाते हैं। यदि कोई हमारा पल-पल ध्यान नहीं रख रहा है, तो ऐसा सम्भव कैसे होता है?

भगवती जगज्जननी की इस प्रकार प्रति क्षण सूक्ष्म या स्थूल उपस्थिति मानना ही व्यथार्थ में 'आस्था' है और इस प्रकार मानते हुए सदैव प्रमुदित रहना ही 'साधना' या 'उपासना' है, क्योंकि 'माँ' को अपने शिशु से मुस्कान की अपेक्षा होती है, किसी आरती या धन्यवाद ज्ञापन की नहीं।

संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं रह जाती,
जो आपके लिए अप्राप्य हो,
यदि आपने सम्पन्न कर लिया

तैलंग विश्वासि प्रणाली

 त्रिक्षेत्र में महाविद्या साधनाओं का स्थान सर्वोपरि
माना गया है और उच्चकोटि के तात्त्विक, गोणी,
यति इन साधनाओं में सफलता को ही अद्वितीय
व्यक्तित्व देने की क्षमता मानते हैं।

वैसे तो सभी महाविद्याएं अपने आपमें श्रेष्ठ हैं,
अनिवार्यीय हैं, अनुपम हैं, परन्तु फिर भी युग दृष्टि के अनुसार
आंकलन करने पर तीन महाविद्याएं स्पष्ट रूप से सामने उभर
कर आती हैं, जो कि वर्तमान काल में हर मानव के लिए
उपयोगी ही नहीं, अपितु आवश्यक हैं।

ये महाविद्याएँ हैं —

1. छिवमस्ता
2. बगलामुखी
3. महाकाली

इस बात को तैलंग स्वामी ने अपने जीवन में पहले
ही एहसास कर लिया था।

उन्होंने इस तथ्य को
भलो-भांति समझ लिया
था, कि ये तीनों शक्तियां
ही वर्तमान में अत्यावश्यक
हैं और किसी प्रकार से भी
यदि इन तीनों का सम्बन्ध

स्वरूप प्राप्त हो जाए, तो कोई भी चीज़ फिर संसार में ऐसी
नहीं रह जाती, जो व्यक्ति के लिए अप्राप्य हो, जिसे व्यक्ति चाह
कर भी प्राप्त न कर पाए, क्योंकि फिर उसके अन्दर ऐसी
क्षमता आ जाती है, कि वह हर क्षेत्र में विजयी ही रहता है।

तैलंग स्वामी वास्तव में ही उच्चकोटि के योगी थे,
परमहंस थे, अधोरेश्वर थे . . . पूर्ण रूप में ब्रह्म को अपने
अंदर स्थापित कर उन्होंने वह बतला दिया, कि वास्तविक
दिव्यता और परम तत्त्व बाहर नहीं, अपितु स्वयं के अंदर ही
स्थापित है।

तैलंग स्वामी बहुत ही विद्रोही व्यक्तित्व थे, जो
दूसरे लोग कहते था करते, वे लोक उसके विपरीत ही आनंदण
करते। यह अलग तथ्य है, कि उस समय के लोग उनको
समझ नहीं सके, हमेशा उनको प्रताड़ित ही करते रहे, परन्तु
वे फिर भी शान्त भाव से अपनी मंजिल की ओर निरन्तर
बढ़ते रहे।

उनका प्रत्येक
कार्य हमेशा आम लोगों
एवं समाज के कल्पण
के लिए ही होता था। वे
जानते थे, कि सामान्य
व्यक्ति पूर्ण विविध विधान

जहाँ बगलामुखी सिद्धि से व्यक्ति को
प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, उसके
समरत शत्रु परास्त होते हैं और वह सहज ही
यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता है, वही
उसे अद्वितीय ज्ञान लाभ भी होता।

महाकाली का अर्थ है — काल पर विजय प्रदान करने वाली देवी। अतः ऐसा व्यक्ति दीपायु होने के साथ-साथ रूपस्थ, सुन्दर एवं सम्मोहक शरीर का स्वामी होता है। यदि उसके जीवन में अल्पायु योग या आकर्षितक मृत्यु योग होता है, तो वह रूपः ही नष्ट हो जाता है।

के साथ महाविद्या साधना सिद्ध कर ही नहीं सकते... और एक से अधिक तो वे किसी भी तरह नहीं कर सकते, क्योंकि उसमें क्षमता का अभाव है, समय का अभाव है, श्रद्धा का अभाव है।

अतः अपने तप के बल पर उन्होंने एक अहितीय साधना की संरचना की, जो कि छिनमस्ता, बगलामुखी एवं महाकालों की ममग्र शक्ति से युक्त थी और उन्होंने उसी को 'तीक्ष्ण त्रिशक्ति प्रयोग' के नाम से पुकारा।

इस साधना की प्रथम विशेषता यह है, कि एक ही बार में व्यक्ति तीन महाविद्याएं सिद्ध कर लेता है और वह भी बड़े सारल एवं सुगम तरीके से।

दूसरे, इस साधना में उन सभी तथ्यों का भली प्रकार से समावेश है, जो कि आजकल के व्यक्ति के लिए सबसे अधिक उपयोगी हैं।

जहाँ बगलामुखी सिद्धि से व्यक्ति को प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, उसके समस्त शत्रु परास्त होते हैं और वह सहज शैया, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता है, वहीं उसे अहितीय ज्ञान लाभ भी होता है, किसी भी विषय पर घटें धाराप्रवाह बोलने की शक्ति उसके अन्दर स्थापित हो जाती है, बड़े से बड़े विद्वान के साथ भी शास्त्रार्थ कर वह विजयी ही रहता है। इन सब गुणों के कारण वह अपने अधिकारियों का प्रिय पात्र एवं चङ्गेता बन जाता है और वे भी यदा-कदा उससे परामर्श लेते रहते हैं।

महाकाली का अर्थ है — काल पर विजय प्रदान करने वाली देवी। अतः ऐसा व्यक्ति दीपायु होने के साथ-साथ रूपस्थ, सुन्दर एवं सम्मोहक शरीर का स्वामी होता है। यदि उसके जीवन में अल्पायु योग या आकर्षितक मृत्यु योग होता है, तो वह स्वतः ही नष्ट हो जाता है, ग्रह उस पर कृपभाव नहीं हाल पाते और उसके लिए अनुकूल बने रहते हैं। चूंकि महाकाली काल की देवी है, अतः ऐसा व्यक्ति त्रिकालादर्शी होकर भूत-भविष्य-वर्तमान की चलाचित्र की भाँति स्पष्ट

देख पाता है और चूंकि उसे हमेशा भविष्य के बारे में ज्ञान होता है, इसलिए उसकी प्रत्येक योजना सफल होती है तथा वह तीव्र गति से अपने जीवन को सफलता के शिखर पर पहुंचाने में सक्षम होता है।

अभी तक तो हमने केवल सांसारिक सफलता की ही ज्ञान की है, परन्तु शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति तब तक अपूर्ण रहता है, जब तक कि उसके जीवन में सांसारिकता एवं आश्यात्मिकता का पूर्ण सामर्ज्य न हो।

छिनमस्ता देवी की सिद्धि साधक के जीवन की इस कमी को दूर करने में सक्षम है। जन मानस में प्रचलित है, कि छिनमस्ता उग देवी है और मात्र अभिचार आदि कर्मों की प्रमुख है... यह सब बकवास है, क्योंकि छिनमस्ता तो वास्तव में पूर्ण आश्यात्मिकता प्रधान देवी है।

जो छिनमस्ता का स्वरूप है, यदि उसका सूक्ष्म विवेचन किया जाय, तो ज्या और विजया, ईडा और पिंगला हैं और स्वयं देवी मुपुमा हैं। जब अहंकार स्पृही सर छिन-भिन हो जाता है, तो वहाँ से निकलने वाले अमृत तत्त्व से तीनों ही नाड़ियों आसाधित होती हैं। विपरीत गति किया का अर्थ है, कि यह स्थिति प्राप्त होने के बाद मानव का मत्त्व, जो प्राकृतिक रूप से नीचे की ओर बहता है, फिर विपरीत दिशा यानि ऊपर की ओर गतिशील होकर समस्त शरीर में व्याप्त होता है। यह एक अत्यधिक दिव्य स्थिति है और जो इसे प्राप्त कर लेता है, वह अहा को पूर्ण रूप से अपने अन्दर स्थापित कर समस्त सिद्धियों और निधियों का स्वामी हो जाता है।

और यही सब सहजता से प्राप्त हो सकता है इस 'तीक्ष्ण त्रिशक्ति साधना' से। इस साधना को गृहस्थ, संन्यासी, स्त्री, पुरुष कोई भी सम्पत्र कर लाभ उठा सकता है। इसके लिए जाति विशेष का कोई भी बन्धन नहीं, कोई भी व्यक्ति इसे सम्पन्न कर सकता है।

नियम

प्रत्येक साधना के अपने कुछ नियम होते हैं, इस साधना में भी कुछ ऐसे ही नियम हैं, जिन्हें पंचमकार (स्थान, समय, सामग्री, संख्या एवं संयम) कहते हैं।

सर्वप्रथम इस साधन के लिए स्थान ऐसा हो, जो पवित्र हो, एकान्त में हो और वहाँ किसी का हस्तक्षेप न हो। एकान्त कमरे का भी इसके लिए उपयोग किया जा सकता है। यह साधना उत्तर की ओर मुँह कर सम्पत्र करें।



- फिर कहने वालिए,
- कहने वालिए।
- उसके इससे 1.
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.

इस जब होने पर उसकी संख्या है 30, 11.

अंत

पालन, संतुष्टि बदलने पालन की संख्या है

उपर नाम को सं

काष लगाती है

साधन

सब उत्तराभिमुख



फिर आता है समय। यह साधना रात्रि 10 बजे शुरू करनी चाहिए और प्रतिदिन इसी समय पर साधना आरम्भ करनी चाहिए। 5 मिनट इधर-उधर होने से कुछ फर्क नहीं पड़ता, इससे अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिए।

उसके बाद आती है सामग्री, जो कि निम्न है—

1. तीक्ष्ण त्रिशक्ति यंत्र
2. हल्दी का टुकड़ा
3. सिन्दूर
4. भस्म
5. त्रिशक्ति माला

इसके बाद आती है मंत्र जप की संख्या, जिसका अर्थ है, कि निम्न एक निश्चित संख्या में मंत्र जप हो।

इस साधना में निम्न 21 मालाएं जपनी होती हैं, इससे कम होने पर साधना फलीभूत नहीं होगी। साधना काल के दिनों की संख्या है तीन, अर्थात् यह साधना तीन दिनों तक करनी है, जिसे 30.11.97 या किसी भी शनिवार से शुरू करें।

अंत में आता है संयम, जिसका अर्थ है ब्रह्मचर्य पालन, सत्य बोलना, भूमि शरण आदि। चाहे कुछ भी हो, ब्रह्मचर्य पालन तो अत्यावश्यक है।

उपरोक्त चताए गए नियमों के अनुसार यदि कोई इस साधना को सम्पन्न करता है, तो निश्चित ही सफलता उसके हाथ लगती है।

साधना विद्यान

सर्वप्रथम साधक स्नान कर, श्वेत वस्त्र धारण कर, उत्तराभिमुख होकर, श्वेत आसन पर बैठें। अपने सामने श्वेत

वस्त्र से ढके बाजौट पर 'तीक्ष्ण त्रिशक्ति यंत्र' स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। इसके उपरान्त बगलामुखी देवी को स्मरण कर हल्दी की गांठ यंत्र पर चढ़ाएं और यदि कोई इच्छा विशेष हो, तो उसे व्यक्त करें। फिर छिनामस्ता को स्मरण कर यंत्र पर सिन्दूर चढ़ाएं और अपनी दूसरी इच्छा व्यक्त करें। फिर महाकाली का ध्यान कर यंत्र पर भस्म चढ़ाते हुए अपनी तीसरी इच्छा व्यक्त करें।

इसके उपरान्त 'त्रिशक्ति माला' को प्रणाम कर उससे निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें—

मंत्र

क्री स्त्रीं ह्लीं स्त्रीं क्रीं फट

KREEM STREEM HLEEM STREEM KREEM PHAT

यह मंत्र अत्यधिक तीक्ष्ण एवं शांत्र प्रभाव देने वाला है, समस्त ब्रह्माण्ड का वैभव भी इस अद्वितीय मंत्र के आगे न्यून है। साधक को ऐसा नित्य करना चाहिए। साधना समाप्त होने के अगले दिन समस्त पूजन सामग्री को किसी जलाशय में अपीत कर देना चाहिए।

इसके बाद तीन बालिकाओं को इन तीनों देवियों का स्वरूप मान कर रेम से भोजन कराएं और शक्ति अनुसार भेट आदि दें। ऐसा करने से यह अद्वितीय साधना सिद्ध होती है।

जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है, उससे तो इन्द्र आदि देवता भी ईर्ष्या करते हैं एवं उसे सम्मान प्रदान करते हैं... उसके एक हाथ में भोग एवं दूसरे हाथ में मोक्ष होता है और पूरे ब्रह्माण्ड में कोई ऐसी चीज नहीं है, जो उसे प्राप्त न हो सके।

नौकावर—(प्रयोग एवं लेख) - 240/-

अत्यतस्त्रियां जीवन की प्रत्येक विषम परिस्थितियों को शीघ्र परिवर्तित कर देने का
अद्भुत और आश्चर्य भना अद्वितीय मूलभूत कवच

विशेष

तंत्र रक्षा कवच

बहुते कर्त्तव्य जाते हों।	हरे-सफेदी से लिह भी रुह दुराते लगे हों।	मणि भाइ से आपकी प्रतिष्ठा यरक्षा रही हो।	दिवाह ने बात बह कर बिल्ड जाए।
व्याधि, गंड, रुक्षिक दिनांकों से धिरे हो।	अपहर ही खून (पुकारि) खून के प्यासे हो रहे हों।	जीतोद परिष्कार के बाइ भी यदि लक्ष्मी रथ गई हो।	सातु बाधे दलभीज ली तइ ह बढ़ते लगी हो।

या फिर झागडे-झांडाटों में बार-बार फैस जाना, मुकदमेवाली जैसी बातों के पीछे गम्भीर तात्रिक प्रयोग कुप्त होने हैं। तंत्र की
सेकड़ों पद्धतियाँ हैं... उनमें से किस पद्धति से प्रयोग कराया गया है, उसे जात कर समाप्त करने के लिए संस्थान के योग्य विद्वानों
के निर्देशन में कर्यकाण्ड के थेट ज्ञात्याणों द्वारा विशेष मुहूर्त में मंत्रसिद्ध रक्षा कवच उपलब्ध कराने का सोकहितार्थ प्रयास...
न्यौष्ठान 11000/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यव मात्र ही है।

ज्ञान और चेताना की अनमोल कृतियाँ

पूज्य गुरुदेव "ठॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी" द्वारा रचित
ज्ञान की शरिमा से युक्त... सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली
कुछ नवीन अद्भुत और अनमोल कृतियाँ

हिन्दी में

गुरुदेव
दीक्षा
साधना और सिद्धि

अंग्रेजी में

GURUDEV
DIKSHA

Sadhana and Siddhi

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306, कोहरा एवलेय, पीतमपुर, नई दिल्ली - 110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र चिज्जान, डॉ. श्रीमाली नारा, बाईकोट कलोनी, श्रीधरपुर (गाज.) फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

बहुत सं

फिर
जाए



ये चारों ओ
नम्बर थे। भ
ये थे और नि
कह रही थी
अकाशा तर
लिए अपूर्व
म

बम गई हो
आया। आव
गया। यास
सैकड़ों पक्षि
वृक्ष, जिसम
या, प्रवक्ता
के
जात्यन्ययम

बहुत संभाल कर कदम उठाते हैं आप अपने घर को सुचारू
रूप में गतिशिल करने के लिए

22.11.97

फिर भी अनायास हो जाता है – कलह और मतभेद,
जाथदाद का बटवारा और अनेक तरह की धमकियाँ,
— ये ऐसे कारण हैं,
जो आपके मानसिक सुख-चैन को छीन लेते हैं
इन समस्याओं का समाधान है—

त्रि

रव की रथ स्थली शमशान ! जगह-जगह चितायें जल रही
थीं। चड़इ-चड़इ की ध्वनि के साथ मृत मानवों के चर्पं,
मांस-मज्जा जल कर बातावरण को एक विचित्र गंध से भर रहे
थे। चारों ओर व्याप्त भय जनक शब्द कठोर हृदय मानव को भी दहला देने में
मरम्भ थे। भारों पंखों से वृक्षों पर फड़फड़ते गिर्द भास के टुकड़ों की प्रतीक्षा
में थे और चिता से उतरी धूम की अंतिम लपट शून्य में खिली होती हुई मानों
कह रही थी – बस! इस मृतक का जो शेष रह गया है, उसे लेकर मैं कूपर
आकाश तत्त्व में मिलाने जा रही हूँ... किसी के लिए वीभत्स, तो किसी के
लिए अपूर्व शान्तिदायक दृश्य।

मन्द चलती बायु एक क्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही इत्तम
थम नहीं हो। अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झाँका उड़ा चला
आया। आकाशीय विद्युत के प्रकाश में अनेक हिस्स पशुओं का उपद्रव शुरू हो
गया। पास ही एक वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ा। कोलाहल मच गया,
सैकड़ों पश्चियों के साथ-साथ अनेक भटकती आत्माओं की प्रिय स्थली नह
वृक्ष, जिसकी उभरी जड़ों पर बैठ मैं नित्य जाह्नवी का सौन्दर्य निहारा करता
था, शब के समान धराशायी पड़ा था।

बीज मंत्र का जप निरन्तर जारी था, एक क्षण के लिये भी मैंने
आत्मसंयम नहीं छोड़ा था। अविचलित भाव से मैं साधना के अंतिम चरण की

कं

क्षा

ल

वायव

पूर्णहुति में लीन था। एक ही भावना, एक ही लाग्न थी कि किसी भी क्रीमत पर 'कंकाल भैरव' को सामने उपस्थित करना ही है। चाहे प्रकृति किसी भी परीक्षा ले, भले ही यह देह समाप्त हो जाय, परन्तु यदि अब प्रत्यक्षीकरण नहीं हुआ, तो मेरा साधक होना ही व्यर्थ है,

वेमानी है। अपने गुरु का इतना बड़ा अपमान असहा है मेरे लिये, किसी प्रार्थना के बाद उन्होंने मुझे अनुमति प्रदान की थी इस तीक्ष्ण साधना के लिए।

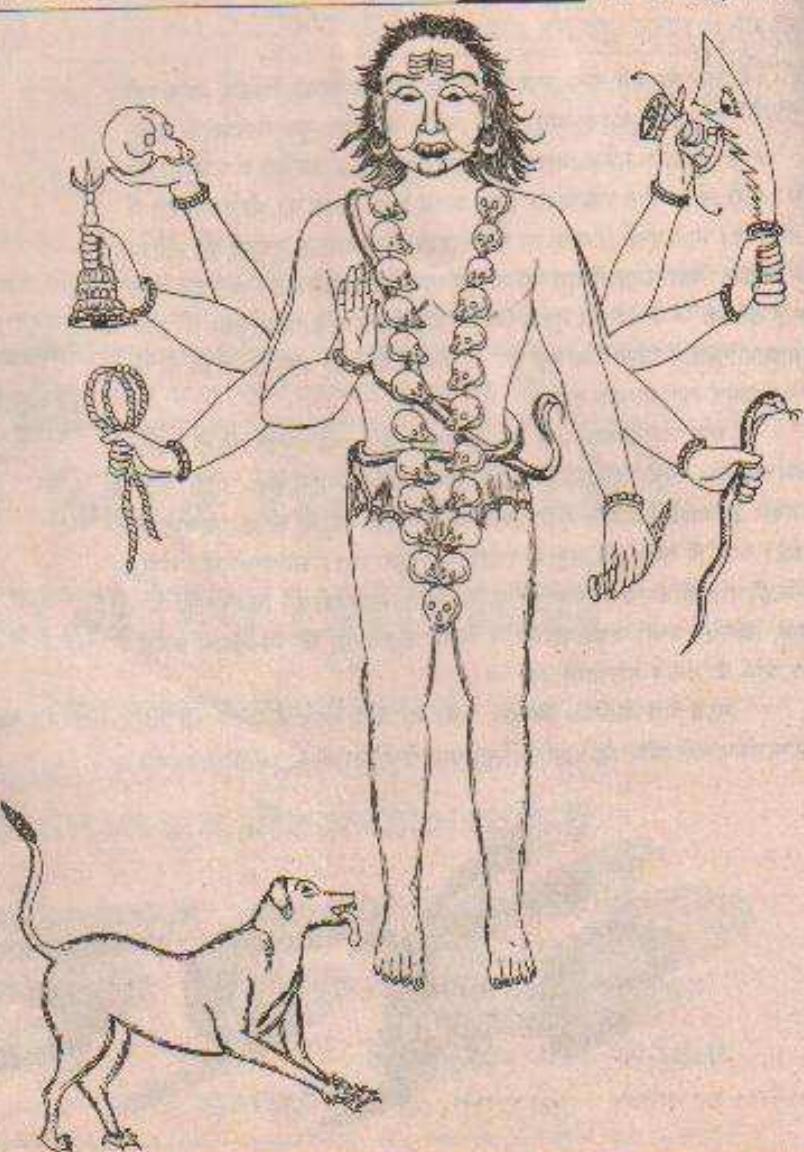
बधी से मुझे वे इसका अद्वितीय साधक बनाने की प्रक्रिया कर रहे थे। उन्होंने परम दुर्लभ 'कंकाल भैरव दीक्षा' प्रदान कर मेरे एक-एक अणु को बैतन्य करने, उसे शक्तिभान बनाने की क्रिया की है। भला असफल या अपूर्ण कैसे हो सकती है मेरे सर्वसमर्थ गुरु द्वारा दी गयी अनुपम दीक्षा और उनके द्वारा बताया गया वह अद्भुत प्रयोग।

अब तो पूर्ण क्षमता के साथ कंकाल भैरव जैसे प्रचण्ड पुरुष को अपने वशीभूत करना ही है, साक्षात् अपनी देह में उतार कर ही गुरु चरणों को रूपर्श करूंगा। विजय की आकांक्षा से विद्युत सी दौड़ गई मेरे सुदृढ़ शरीर में और विशिष्ट रक्षा मंत्र का उच्चारण कर सरसों के दाढ़ें आंधी की दिशा में उछाल दिये . . .

बातावरण साफ होता

मन्द चलती वायु एक क्षण के लिए रुकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वास थम गई हो। अचानक एक ओर से आंधी का प्रधण्ड झोंका उड़ता चला आया। आकाशीय विद्युत के प्रकाश में अनेक हिंल पशुओं का उपद्रव शुरू हो गया। पास ही एक वृक्ष जड़ से उखड़ कर गिर पड़ा। कोलाहल भर गया, सैकड़ों पक्षियों के साथ-साथ अनेक भटकती आत्माओं की प्रिय स्थली वह वृक्ष, जिसकी उभरी जड़ों पर बैठ मैं नित्य जाहूकी का सौन्दर्य निहारा करता था, शव के समान धराशायी पड़ा था।

चला गया। पृथ्वी का कम्पन, आकाश की गड़गड़ाहट और पवन का वेग स्वतः ही शान्त हो गये थे। तीव्र मंत्रों के घोष और आग्नेय नेत्रों से निःसुत लापटों के सामने हवन कुण्ड की अग्नि भी मंद पड़ गयी थी। आङ्गान मंत्रों



के सब प्रत्येक आहुति देते हुए इष्ट दर्शन की मेरी आतुरता बढ़ते रही थी ।

अभी भैरवनाथे भूतयो योगिनी पति ।
मूलपणि खदगपाणि कंकाली धूमलोचनः ॥
तिनेत्रे बहुनेत्रश्च तथा पिंगललोचनः ॥
कंकाल कालशमनः कलाकाष्ठानुः कविः ॥
रक्तः पात्रः सिद्धः सिद्धिः सिद्धसेवितः ॥
स्मशनवसी मांसाशी श्वर्पराशी स्मशनकः ॥

भैरव के पहले एक अपूर्व प्रकाश स्मशान में फैल जा । चारों ओर से अपूर्व सुगम्भ आने लगा । अचानक एक उच्चकोटि कृष्णवर्णीय श्वान प्रकट हुआ और थोग का लड्डु उठा कर तीव्र गति से भाग गया । मुझे स्मरण था, कि उच्चकोटि के हृष्ट अपने साक्षात् दर्शन से पूर्व अपने किसी गण को भेजा करते हैं और श्वान तो भैरव का वाहन ही है । . . मैं बिना विचलित हुए यह कार्य में तल्लीन रहा ।

अन्तिम आहुति . . . सारा वातावरण एकदम से कोलाहल पूर्ण हो उठा, सैकड़ों प्रकार की चीखें, हलचल और भगदड़, ज्यों कोई दैवी विपदा आ पड़ी हो । दूर बहती जाहवी ने छटपटाहट कुछ और तीव्र हो गयी थी, पता नहीं वायु के बेग से अथवा उछल कर अधिति हो रही एक विलक्षण घटना का याकृष्ट बनने के लिये . . .

. . . और तभी एक भीमकाय तेजपुञ्ज पुरुषाकृति साकार हो उठी, ऐसा लग रहा था मानो स्वयं काल ही पुरुष रूप धारण कर साकार हो गया ही । उसके आगमन के साथ ही उस निर्जन स्मशान में प्रचण्ड बेग से पवन प्रवाहित होने लगे, निकट अवस्थित शिलाखण्ड थराने लगे, देखते ही देखते सूर्य के समान तेजस्वी कंकाल भैरव के तेजस् ताप से सारा वातावरण झूलने सा लगा, तीव्र ताप से आकुल मैं अधर्यना के लिए झुका ही था, कि वह भौपण प्रचण्ड स्वरूप एक अत्यन्त शोतल सौम्य स्वरूप में परिवर्तित हो उठा, जिसका हाथ अध्य मुड़ा मैं उठा हुआ था . . .

कुछ ही क्षणों में वह दिल्ली तेजपुञ्ज शून्य में विलीन हो गया ।

मेरा अन्तर अपूर्व आनन्द से उद्भासित हो उठा । मेरी एकनिष्ठ उग्र साधना

पूर्ण सफल हुई थी । मन ही मन में गुरुदेव के चरणों में आर-बार प्रणिपात कर उठा, जिनकी असीम अनुकम्पा के फलस्वरूप मैं भैरव के जाज्वल्यमान स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन कर सका, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सका । मेरा रोम-रोम हर्षित हो रहा था, मेरे शरीर का एक-एक कण मानो कह रहा हो, कि आज मैंने एक अप्रतिम साधना प्रत्यक्ष कर स्वयं तो एक सिद्धि प्राप्त की ही है, एक दुर्लभ शक्ति को हस्तगत किया ही है, साथ ही आज मैंने अपने गुरु के गौरव को भी प्रवर्धित किया है ।

भैरव साधना ही वस्तों?

आज के युग में, जबकि वाधाएं पग-पग पर हों, व्यापिचार की प्रवृत्तियां सिर चढ़ कर बोलने लगी हों, तब भैरव साधना का प्रभाव स्वतः ही सबसे अधिक महस्त्वपूर्ण सिद्ध हो गया है ।

जिस प्रकार एक पवित्र स्थान के चारों ओर कांटों को बाढ़ लगाई जाती है, कि उसे कोई अपवित्र न कर दे, उसी प्रकार अपने जीवन के श्रेष्ठ चिन्तन को, अपने परिवारिक जीवन को सुरक्षित रखने के लिये इस प्रकार की तीक्ष्ण साधना की बाढ़ अवश्य लगानी चाहिये, जिससे कि वह अपवित्र न हो सके ।

धर में पितृ दोष हो, अनाद्यास कलह होते रहते हों, कोई विशेष कारण न होने पर भी मतभेद हों, जायदाद के बंटवारे की स्थितियाँ बनती हों, हत्या आदि की घमकी मिल रही हो, मानसिक सुख-सन्नोष चला गया हो, भय और तनाव व्याप्त रहता हो या जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या या बाधा आ गई हो, यदि व्यक्ति 'कंकाल भैरव' साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसी क्षण से उसे सम्पादन मिलना प्रारम्भ हो जाता है ।

उच्चकोटि की साधनाओं में सिद्धियों का प्रश्न हो अथवा गृहस्य जीवन की पूर्णता, भैरव साधना सम्पन्न किये बिना व्यक्ति न तो सामान्य जीवन में भय-बाधा रहित हो सकता है और न ही महाविद्या साधना सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि ग्रत्येक महाविद्या के एक विशिष्ट भैरव होते हैं, जिनको सिद्ध करने के पश्चात् ही साधक उच्चकोटि की महाविद्या

सारा वातावरण एकदम से कोलाहल
पूर्ण हो उठा, सैकड़ों प्रकार की चीखें, हलचल और भगदड़, ज्यों कोई दैवी विपदा आ पड़ी हो । दूर बहती जाहवी में छटपटाहट कुछ और तीव्र हो गयी थी ।

साधना में प्रवेश का अधिकारी समझा जाता है।

विशेष रूप से जो साधक तंत्र के क्षेत्र में जाना चाहते हैं, तीव्रता से बढ़ना चाहते हैं, समाजोपयोगी और प्रखर बनना चाहते हैं, उन्हें कंकाल भैरव साधना को अपने जीवन में उतारना ही पड़ेगा, अर्थात् शिवल्प से युक्त, क्रोध युक्त बनना ही पड़ेगा।

इस साधना के प्रथम दिवस से ही साधक को अपने आसपास एक ऐसी विलक्षण अनुभूति होने लगती है, जिससे वह कहीं भी बिना भय के आ जा सकता है तथा आत्मविश्वास से भरा रहने लगता है।

जो साधक मानसिक दौर्बल्य से पीड़ित हो या जिन्हें शत्रु भय अथवा अकारण भय बना रहता हो, उन्हें गुरु से अनुमति प्राप्त कर इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

'कंकाल भैरव' का स्वरूप मूलतः अल्पन्त उग्र और तीक्ष्ण है, पर विशेष साधनाओं के सहारे वे सौम्य रूप में भी सिद्ध किये जा सकते हैं। भगवान् शिव के ही अंश होने के कारण वे शिव स्वरूप में अर्थात् शान्त स्वरूप में वरदायक भी हैं, भय के बिनाशक हैं, सुरक्षा प्रदान करने वाले हैं और साथ ही साथ पूर्ण रूप से अमृतमय होते हुए साधक के बल-वीर्य का वधन करने वाले, उसकी पाप राशि को समाप्त करने वाले भी हैं।

कंकाल भैरव साधना का प्रस्तुत विधान अत्यन्त सौम्य व किसी भी तामसिक क्रिया-कलाप से सर्वथा शून्य है। इसके द्वारा गृहमय व्यक्ति भी उन सभी वरदानों को प्राप्त कर सकता है, जिसके लिए इमशान के उग्र वातावरण में साधनाएं सम्पन्न करनी पड़ती हैं।

साधना विद्यान

कंकाल भैरव साधना के लिए यह अनिवार्य है, कि साधक 'कंकाल भैरव दीक्षा' प्राप्त कर ले, क्योंकि इसके अभाव में उसके अंदर वह साहस और जल आ ही नहीं सकता, कि वह भैरव के प्रचण्ड, अत्यन्त तेजस्वी स्वरूप का दर्शन कर सके, उन्हें आत्मसात् कर सके। साथ ही कमज़ोर दिल वाले, वृद्ध वा अशक्त व्यक्तियों को गुरुदेव की अनुमति प्राप्त करके ही इस तीक्ष्ण साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। किसी भी कृष्ण पक्ष के गविवार की रात्रि में चारह बजे के बाद या 22.11.97 को यह साधना आरम्भ की जा सकती है।

साधक स्नान कर काले चस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके ऊनी आसन पर बैठें। तेल का अखण्ड दीपक लगा लें। अपने सामने ताप्रपत्र में 'कंकाल भैरव दंत्र' की स्थापना करें, जिसमें भैरव के समस्त 108 स्वरूपों को आबद्ध किया जाता है तथा आवरण पूजा, बलि आदि की आवश्यकता भी नहीं होती।

सर्वप्रथम गुरु पूजन व गुह मंत्र का एक माला जप करें तथा साधना सफलता के लिए गुहदेव से प्रार्थना करें। तदुपरान्त कंकाल भैरव के पूर्ण सात्त्विक स्वरूप का स्परण कर, उनके आङ्गन की प्रार्थना कर, लाल पुष्प तथा सिन्दूर यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्नांकित व्यान का उच्चारण करें—

व्यान

उद्धृ-भास्कर - सत्रिभं त्रित्यन्
रक्तांश् - राग सूजम
स्मेरास्य वरदं कपालभूमयं शूलं
दधान् करैः।

नील - ग्रीवमुदार भूधण - शतं
शीतांशु - चूडोज्ज्वल्
बन्धूकारुण - वाससं भय - हं
दे वं सदा भावये॥

अब विशिष्ट 'कंकाल भैरव माला' से मंत्र जप आरम्भ करें—

मंत्र

ॐ द्वे क्लेम क्लैम द्वलूं द्वां द्वीं
द्वं द्वः वं ऊं

OM KLEM KLEEM KLOOM HRAM
HREEM HROOM SAH VAM OM

नित्य 11 माला मंत्र जप करने के उपरान्त सामने चड़े हुए गुड़ के नैवेद्य को किसी कुत्ते को खिला दें। यह क्रम 21 दिनों तक जारी रखें।

मंत्र जप के दौरान यदि विचित्र ध्वनियाँ या चौत्कार इत्यादि सुनाई पड़े, तो भी अविचालित बने रह कर साधना करते रहें, क्योंकि जब साधक धीरे-धोरे कंकाल भैरव की भूमिल छवि देखते हुए क्रमशः भयमुक्त होने लगता है, तभी वे अपना सम्पूर्ण स्वरूप प्रकट करते हैं, अतः साधक को अपने मन में कोई शंका नहीं लानी चाहिए। प्रतिदिन मंत्र जप के समाप्तन पर अपने इष्ट के दाहिने हाथ में जप समर्पण अवश्य कर दें।

अन्तिम दिन इष्ट के सौम्य स्वरूप का दर्शन प्राप्त हो, तो उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें और उनसे विनयपूर्वक प्रार्थना करें, कि वे जीवन भर सहायक व रक्षक बने रहें। अगले दिन यंत्र व माला को नदी में विसर्जित कर दें। चौलाल —(प्रयाग ऐकेंट) - 300/-

म

शिवि

आयो

श्री गिर

श्री मोह

श्री घना

श्री रवि

श्री मिति

श्री नारा

पु

1.9.97
शिव-

शिवि स्था

श्री चन्द्रेश च

गुरु

श्री गीर्जा भ

श्री महेश च

श्री किशोर

श्री परेश भ

श्री राम राम

श्री विपिन

श्री रमेश प

महादुर्गा-महालक्ष्मी-महाकाली

साधना शिविर

एवं शत चण्डी महायज्ञ

दिनांक 9-10 अक्टूबर 1997

शिविर स्थल : कम्यूनिटी सेन्टर हॉल, सेक्टर-6,
बोकारो इस्पात नगर प्रांगण, बोकारो (बिहार)

आयोजक मण्डल

श्री गिरधारी लाल चौथरी, बोकारो
(फोन : 06542-40124, 88239)
श्री मोहन सिंह, बोकारो
श्री घनश्याम प्रसाद, बोकारो
श्री रविन्द्र कुमार, बोकारो
श्री मिश्रिलोक पुरी, बोकारो
श्री नारायण महतो, बोकारो

शाखा कार्यालय

नेपाली कॉलोनी, जनवत-1 श्री,
बोकारो इस्पात नगर, बिहार

शिविर शुल्क — 550/-
(एक वर्ष की पत्रिका सदस्यता
निःशुल्क उपहार स्वरूप)

एक दृष्टि में : साधना शिविर पुर्वं दीक्षा समारोह

1.9.97	सोमनाथ (गुजरात)
	शिव-शक्ति-महालक्ष्मी साधना शिविर (सोमवती अमावस्या)
	शिविर स्थल : नटराज गेस्ट हाउस, प्रभास पाटन, सोमनाथ, सौराष्ट्र, गुजरात
	श्री चन्द्रेश जे. पाण्ड्या, वाटर टैक कम्पाण्ड, वेसवल, सोमनाथ, गुजरात (फोन : 02876-20218 Off: 41817 PP)
	श्री गीजू भाई रावल, पुलिस लाइन, प्रभास पाटन, सोमनाथ
	श्री महेश चन्द्र पाण्ड्या, धारे, अमरेली (02797-21336)
	श्री किशोर भाई एन. सोजित्रा, राजकोट (451504, 368197)
	श्री परेश भाई जी. घटेल, राजकोट (68283, 229549)
	श्री राम राव एन. गायकवाड़, महुआ (0364290-24299)
	श्री विपिन चन्द्र बी. गांधी, राजकोट (236469)
	श्री रमेश पाटिल, नवसारी (02637-53188)

28.9.97	मुम्बई
	शिविर स्थल : हिन्दुजा हॉल, रोड नं. - 9, दौलत नगर, बोरीबली (पूर्व), मुम्बई
	श्री गणेश वटाणी (फोन : 022-8057110, 8625254)
2-3-4 अक्टूबर 97	दिल्ली
	सिद्धिदात्री नवरात्रि साधना शिविर
	सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 (फोन : 011-7182248, टेलीफँक्स : 011-7196700)
29-30 अक्टूबर 97	जोधपुर
	समुद्दिप्रदा महालक्ष्मी साधना शिविर
	सम्पर्क : गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) (फोन : 0291-32209, टेलीफँक्स : 0291-32010)

निःशुल्क!

सर्वथा मुफ्त!!

देह चैतन्य यंत्र

मानव योनि सबसे दुर्लभ योनि मानी गई है, जीवात्मा को चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के उपरान्त इस दुर्लभ मानव देह की प्राप्ति होती है, जिसे प्राप्त करने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं और कभी राम के रूप में, तो कभी कृष्ण आदि के रूप में इसे धारण भी करते हैं। लेकिन सामान्य मानव शरीर मल-मूत्र में लिप्त होता है, में, तो कभी कृष्ण आदि के रूप में इसे धारण भी करते हैं। लेकिन सामान्य मानव शरीर मल-मूत्र में लिप्त होता है, रोग और व्याधियों से जकड़ा रहता है, अष्ट पाशों से बद्ध हो कर कष्ट और पीड़ा को भीगता रहता है। इन अष्ट पाशों से मुक्त हो कर दिव्यता और पूर्णता के पथ पर आरूढ़ होने के लिए यह आवश्यक है, कि यह देह दिव्यता युक्त बने, इसके अन्दर स्थित सातों शरीर पूर्णतः चैतन्य एवं जाग्रत हों और आपके समस्त कर्म बन्धनों का क्षय हो। और इसके लिए आपको मात्र इस दुर्लभ यंत्र को, जो आपके अन्दर के सभी शरीरों को जगत कर आपको कर्म बन्धनों से मुक्त करने वाली शक्तियों को अपने अन्दर समाहित किये हुए है, अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसके समक्ष 'ॐ नमः श्री सत्त शरीर हुं फट् स्वाहा' मंत्र का तीन महीनों तक नित्य आधा घंटा मंत्र जप करना है। तीन माह बाद यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान — ज्ञान दान

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। आप भी 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मन्दिरों में, अस्पतालों में, समाजों में, मंगल कार्यों में, आद्यार्थों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलेकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बच्चत हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीरिलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप दिया करें?

आप को बल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड) भेज दें, कि "मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क 'देह चैतन्य यंत्र' 330/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 30/-) की बी०पी०पी० से भिजवा दें, बी०पी०पी० आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि देकर छुड़ा लूंगा। बी०पी०पी० छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।"

आपका पत्र आने पर तथा 300/- - डाक व्यय 30/- = 330/- की बी०पी०पी० से 'देह चैतन्य यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

:: सम्पर्क ::

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-342001, फोन : 0291-32209, टेलीफँक्स : 0291-32010



विजय गणपति साधन

जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि

ये तो गणपति के हजारों रूप हैं, और प्रत्येक रूप अपने आप में कलादायक है। अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों की कल्पना की गई है, पर 'विजय गणपति' स्वरूप गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो श्रेष्ठतम् उत्तम् है क्योंकि यह 'भोग और मीक्षा' दोनों को ही प्रदात करने वाला है, जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में सक्षम है।

मंत्र सिद्ध शान प्रतिष्ठायुक्त 'विजय गणपति विश्व' रूप में ही रिहिंदि दायक है, फिर बित्य वृजन-अच्चन और फिसी जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती। निरा प्रकार अग्रसरती जहां होगी, वही सूरगन्ध देगी, अतः विजय गणपति विश्व जहां स्थापित होगा, वही ऋद्धि, सिद्धि, उत्तमि, सफलता देने में सहायक होगा। चाहे वह घर का पूजा कक्ष हो, कारखाना हो, कम्ब या फैक्टरी हो . . . एक महत्वपूर्ण लेख . . .

कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देवता माने गये हैं। जीवन में किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व गणपति की पूजा आवश्यक मानी गई है। गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने वाले देवता माने गये हैं। यद्यपि गणपति के कई रूप प्रचलित हैं और अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों का ध्यान और पूजा का प्रचलन है, परन्तु सभी साधकों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है, कि गृहस्थ जीवन के लिए विजय गणपति साधना सर्वश्रेष्ठ है और वही एकमात्र ऐसी साधना है, जो गृहस्थ जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में समर्थ है।

दक्षिण में विजय गणपति का भव्य मन्दिर है, महाराष्ट्र में प्रत्येक गृहस्थ अपने घर में विजय गणपति की स्थापना को शुभ मानते हैं। बाली, जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों में भी विजय गणपति के मन्दिर हैं। विजय गणपति के बारे में साधकों की ऊंची राय है। मैं कुछ साधकों के विचार नीचे दे रहा हूं।

"सामान्य गृहस्थ जटिल साधनाएं नहीं सम्पन्न कर सकते, पर उनके घर में विजय गणपति तो स्थापित हो ही सकते हैं, क्योंकि यही एक मात्र ऐसे गणपति हैं, जो कि गृहस्थ जीवन को पूर्णता देने में समर्थ हैं।"

— सीताराम स्वामी



"जिसके घर में विजय गणपति की मूर्ति या विग्रह नहीं है, वह घर शमशान के तुल्य है।"

— स्वामी बोधानन्द

"धन, वश, मान, पद, प्रतिष्ठा, उत्तरति, स्वास्थ्य-सुख, वाहन, सत्तान, पली-सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, पति सुख, आर्थिक उत्तरति आदि सभी कुछ विजय गणपति में समाहित हैं, फिर वह गृहस्थ दुर्भाग्यशाली हो कहा जायगा, जिसके घर में ऐसा विग्रह स्थापित नहीं होगा।"

— त्रिजटा अध्योरी

"कली चण्डी विनायकों के अनुसार कलियुग में देवी और गणपति ही शीघ्र फलदायक हैं। गणपति में भी विजय गणपति तुरन्त और पूर्ण फलदायक देवता है। जिसके घर में विजय गणपति की स्थापना नहीं होती या पूजा नहीं होती, उसके घर में उत्तरति कैसे सम्भव है? वह व्यक्ति वैसा ही है, जैसे कि

ॐ मं-तं-यं विज्ञान 'सिराम' 1997 १६



गणपति के
बतीस अद्दरो
का गंगा सर्पण
काजाओं फो
देने पाला तथा
धर्म, अर्थ,
काम एवं जोक्षा
का फलदायक
गंगा गाना
तथा है।



गंगा के किनारे कोई प्यासा हो।"

— मां शोगत्री

वसुतः साधकों ने इस बात का अनुभव किया है, कि विजय गणपति जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण मफलतादायक है। प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए, कि वह अपने पूजा स्थान में अन्य देवताओं के साथ-साथ विजय गणपति विग्रह की भी स्थापना अवश्य करे।

विजय गणपति

साधक को श्रेष्ठ शुभ समय में गणपति की मूर्ति बनानी चाहिए या किसी योग्य कारीगर से इस प्रकार की मूर्ति का निर्माण कराना चाहिए। जब गणपति विग्रह तैयार हो जाय, तो उसे पुष्य नक्षत्र में अधिष्ठेत्र द्वारा साधना कक्ष में स्थापित करना चाहिए।

इसके बाद शोडशोपचार पूजा करके इसे विशेष मंत्रों से संजोषण करना चाहिए और साथ ही साथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करना चाहिए, तभी वह मूर्ति

व विग्रह वित्तन्य औ
धातु निर्मित
उल्लङ्घन का विषय
उल्लङ्घन का विषय
उल्लङ्घन से वित्तन्य
जब गणप
गणेश गायत्री मंत्र
अधिष्ठेत्र में दूष्ट, व
उल्लङ्घन से गणेश ग
गणेश गा
// एक बलार्थी

YEK DANTAYE
TAN

जब अ

लिंगिं गणपति म

यह मंत्र

// औं श्री हौ

कर्त्त्वं विरचि

OM SHRI

BHRAMHASHO

PRADESHA

यह ब

देने वाला तथा

जना गया है।

विग्रह पूर्ण मिनि

इसके

किया जाता है।

जिन है —

// औं गं व

OM

दीपा

वह भास्त मै

बसा है, कि

का प्रामाणिक

ने पूजन सम

ऐश्वर्य प्राप्त

तथा अनेक

वह विग्रह चैतन्य और फलदायक होता है।

थातु निर्मित गणपति मूर्ति ही श्रेष्ठ मानी गई है, क्योंकि उन इकार का विग्रह कई पौष्टियों तक सुरक्षित रहता है और उन इकार का विग्रह घर के पूजा स्थान में स्थापित होने से पूरा एक कल्प ही चैतन्य हो जाता है।

जब गणपति विग्रह में प्राण-प्रतिष्ठा हो जाय, तब गणेश गायत्री मंत्र से उस पर अधिषेक करना चाहिए। इस अधिषेक में दूर्वा, जल और दूध का प्रयोग होता है तथा निरन्तर वारह सौ गणेश गायत्री मंत्र से अधिषेक होता है।

गणेश गायत्री मंत्र निम्नलिखित है –

**// एक दन्ताय विक्रम्हे वक्तुण्डय धीमहि तङ्गो
कन्ती प्रचोदयत् //**

**YEK DANTAYE VIDMIHE BHAKRAKUNDYE DHIMAHI
TANOO DANTI PROCHODAYAT**

जब अधिषेक सम्पन्न हो जाय, तो उस पर 'सर्व मिद्दि गणपति मंत्र' का जप एक लाख करना चाहिए।

वह मंत्र निम्नलिखित है –

**//ॐ श्री हृषी कर्त्ता गणेशवश्य ब्रह्मस्वक्षरपाय द्वास्ते
वर्द्धि विद्धि प्रदेशाय विज्ञविनादिवे द्वास्ते//**

**OM SHRIM HRIM KLIM GHANESHOWRAYE
SHRAMHASHOWROOPAYA CHAKHE SHARWO SHIDHI
PRADESHAYE BHIGHINESHAYE NAMO NAMHA**

यह बत्तीस अक्षर का मंत्र सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का फलदायक मंत्र जना गया है। इस मंत्र के एक लाख जप से वह गणपति विग्रह पूर्ण सिद्धिदायक हो जात है।

इसके बाद इकारोंसे हजार मंत्रों से गणपति को चैतन्य किया जाता है। यह मंत्र गणपति चैतन्य मंत्र कहलाता है, जो निम्न है –

//ॐ गं गौ गणपतये विज्ञविनादिवे द्वास्ते//

OM GHAM GHOUM GHANAPATAYE

BHIGNBINASHINE SHWAHA

इस प्रकार जब वह विग्रह चैतन्य हो जाय, तब अनन्त कलातीत साधना से भी उस विग्रह को चैतन्य किया जाता है। इससे वह विग्रह वा मूर्ति अनन्त समय तक फलदायक बनी रहती है।

कौपर मैंने विजय गणपति साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट किये हैं। मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं की हैं और हजारों गुहस्थ लोगों को मंत्र-ज्ञान और साधनाएं सिखाई हैं, जिससे कि वे जीवन में सभी दूर्दियों से उप्रति और पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

साधकों का वह अनुभव है, कि विजय गणपति साधना अन्यत ही श्रेष्ठ, आवश्यक और तुरन्त फलदायक है। प्रत्येक गृहस्थ के घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होना परम सौभाग्य का संकेत माना जाता है। वास्तव में वह गृहस्थ धन्य है, जिसके घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होता है।

कोई भी गृहस्थ अपने घर में सिद्धि दायक, मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त विजय गणपति विग्रह स्थापित कर इसका फल स्वयं ही अनुभव कर सकता है।

यह लेख सन् 1981 के फरवरी में प्रकाशित किया गया था, जिसमें बहुसंख्यक साधकों को सफलता भी प्राप्त हुई थी। उसी लेख का पुनर्प्रकाशन किया जा रहा है, जिसकी साधना सामग्री आप नि-शुल्क ग्राहक कर सकते हैं। आप केवल दो पत्रिका सदस्य बनायें (जो आपके परिवार के सदस्य न हों) और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर हमें भेज दें।

हम 423/- (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क 195/- + 195/- - 390/- + डाक व्यय 33/- = 423/-) की बी0 पी0 पी0 से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'विजय गणपति विग्रह' भेज देंगे और आपके दोनों परिवितों को नियमित पूरे वर्ष पर्यन्त पत्रिका भेजने रहेंगे।

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना

दीपावली वर्ष पर भास्तुर्वर्ष का प्रत्येक वर्ष, चाहे वह भारत में रुक्ख हो या भासा के बाहर, यही प्रथास करता है, कि किसी भी प्रकार से महालक्ष्मी एवं महागणपति का प्रामाणिक पूजन विश्वल प्राप्त हो जाय, जिसके माध्यम से पूजन सम्पन्न कर सम्पूर्ण वर्ष के लिए सम्पन्नता और ऐश्वर्य प्राप्त हो सके। अतः वह अनेक शंथ, अनेक परिष्ठियों तथा अनेक विचारों के जाल में उलझ जाता है।

इस जाल से आपको बाहर निकालने के लिए ही तो एस-सीरिज ने प्रस्तुत किया है – “ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना” नामक ग्रंथ, जिसमें पूर्ण प्रामाणिक भास्तुर्वर्ष पद्धति से महालक्ष्मी का पूजन बताया गया है, माथ ही ‘श्री सूर्य’ की प्रामाणिक प्रस्तुति की गई है तथा आप स्वयं लक्ष्मी के ऐश्वर्य प्रदायक स्वरूप के स्थापित्व के लिए हवन कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

चौल्हा - 40/-

साधक

साधक, गाठक तथा सर्वजन सामाजिक के लिए समय के बें मध्यी रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो कि किसी भी उपलिखि के जीवन में उचित या अवशिष्ट के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप उन्हें उपलेख का योग्य प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे ही गई सारणी में समय को शीत रूपों में प्रस्तुत किया गया है — शेष, नध्यम और निकृष्ट। शेष समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, जाहे वह आपात से प्रबन्धित हो, जोकरी से संबन्धित हो, पर मैं दूध उत्पाद के सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं।

इस काल में भी मध्यम करने पर कार्य पूर्ण होते हैं जिसका फल होता है, किन्तु सकलता प्राप्त होती है।

इस वाह में 16 सितम्बर तक के दिनों के लिए अगस्त अंक में इसी स्थाप्त के अन्तर्गत प्रकाशित सारणी हो लागू होगी, यथा 7 व 14 सितम्बर को रविवार के अनुसार, 1, 8 व 15 सितम्बर को सोमवार के अनुसार, 2, 9 व 16 सितम्बर को मंगलवार के अनुसार, 3 व 10 सितम्बर को बुधवार के अनुसार, 4 व 11 सितम्बर को गुरुवार के अनुसार, 5 व 12 सितम्बर को शुक्रवार के अनुसार अगस्त अंक में प्रकाशित सारणी होती है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (21 और 28 सितम्बर)	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 6:00 तक दूध 7:36 से 10:00 तक दिन में 12:24 से 2:48 तक शाम 7:36 से 9:12 तक रात्रि 11:36 से 2:00 तक	दिन में 10:00 से 12:24 तक दिन में 2:48 से 4:30 तक रात्रि 9:12 से 11:36 तक रात्रि 3:36 से 4:24 तक	सुबह 6:30 से 7:36 तक दिन में 4:30 से 7:36 तक रात्रि 2:00 से 3:36 तक
सोमवार (22 और 29 सितम्बर)	सुबह 6:03 से 10:48 तक दिन में 1:12 से 6:00 तक रात्रि 8:24 से 11:36 तक रात्रि 2:00 से 3:36 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 6:00 तक शाम 6:00 से 8:24 तक रात्रि 11:36 से 2:00 तक	दिन में 10:48 से 1:12 तक रात्रि 3:36 से 4:24 तक
मंगलवार (23 और 30 सितम्बर)	सुबह 6:00 से 7:36 तक दिन में 10:00 से 10:48 तक दिन में 12:24 से 2:48 तक रात्रि 8:24 से 11:36 तक रात्रि 2:00 से 3:36 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 6:00 तक दूध 7:36 से 10:00 तक शाम 5:12 से 8:24 तक रात्रि 11:36 से 2:00 तक	दिन में 10:48 से 12:24 तक दिन में 2:48 से 5:12 तक रात्रि 3:36 से 4:24 तक
बुधवार (17 और 24 सितम्बर)	सुबह 6:48 से 11:36 तक शाम 6:48 से 10:48 तक रात्रि 2:00 से 4:24 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 6:00 तक दिन में 11:36 से 12:00 तक दिन में 1:30 से 2:00 तक शाम 5:12 से 6:00 तक रात्रि 10:48 से 2:00 तक	सुबह 6:30 से 6:48 तक दिन में 12:00 से 1:30 तक दिन में 2:00 से 5:12 तक शाम 6:30 से 6:48 तक
गुरुवार (18 और 25 सितम्बर)	सुबह 6:00 से 6:48 तक दिन में 10:48 से 12:24 तक दिन में 3:00 से 6:00 तक रात्रि 10:00 से 12:24 तक	ब्रह्म शुद्ध 5:12 से 6:00 तक सुबह 8:24 से 10:48 तक दिन में 1:12 से 1:30 तक शाम 7:36 से 9:12 तक रात्रि 12:24 से 2:48 तक रात्रि 3:36 से 4:24 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 5:12 तक सुबह 6:48 से 8:24 तक दिन में 12:24 से 1:12 तक दिन में 1:30 से 3:00 तक शाम 6:00 से 7:36 तक रात्रि 9:12 से 10:30 तक रात्रि 2:00 से 3:36 तक
शुक्रवार (19 और 26 सितम्बर)	दिन में 9:12 से 10:30 तक दिन में 12:00 से 12:24 तक दिन में 2:00 से 6:00 तक रात्रि 8:24 से 10:48 तक रात्रि 1:12 से 2:00 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 9:12 तक दिन में 12:24 से 2:00 तक शाम 6:00 से 7:36 तक रात्रि 2:00 से 4:24 तक	दिन में 10:30 से 12:00 तक शाम 7:36 से 8:24 तक रात्रि 10:48 से 1:12 तक रात्रि 2:00 से 2:48 तक
शनिवार (20 और 27 सितम्बर)	दिन में 10:48 से 2:00 तक शाम 5:12 से 6:00 तक शाम 8:24 से 10:48 तक रात्रि 12:24 से 2:48 तक	ब्रह्म शुद्ध 4:24 से 6:00 तक सुबह 7:36 से 9:00 तक दिन में 2:48 से 4:24 तक शाम 6:48 से 8:24 तक रात्रि 10:48 से 12:24 तक रात्रि 2:00 से 4:24 तक	सुबह 6:00 से 7:36 तक दिन में 9:00 से 10:48 तक दिन में 2:00 से 2:48 तक शाम 4:24 से 5:12 तक शाम 6:00 से 6:48 तक

ग्रन्थ गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीभाली जी द्वारा रचित संग्रह 'ज्योतिष और श्वाल निष्ठांय' पर आधारित

३२८ संख्या - द्यूम् विज्ञान 'सितम्बर' 1997-98

चूं की अवधारणा काल में सांकेतिक विद्या निर्देश भी प्राप्त हो अविस्मरणीय है।

उस यात्रा विद्यामें व्याप्ति के अन्तर्गत विद्यालयों के अवधारणा अनुसार जायेगा, बाहर चलावान, ऐसे मुख्य नहीं आँकड़ों।

उस यात्रा विद्यालयों में जाप कर हो रही थी। यह लेटी थी, मैंने सबसे कूपर की आशीर्वाद की मुहर हो, सब ठीक है, मैं जैसे बढ़ने लगा। मेरी नकार का कुछ उक्सान हुआ। इसलिये पल हमारे

मैंने यह के पृष्ठ संख्या करने का नियम लिया, जबकि दूसरा सम्पर्क पर बढ़ाई दी गई जिसकी चलती है।

साधक साक्षी है

बाढ़ में रक्षा

यूं तो अनेक बार अनोखी घटनाएं घटित हुई हैं और जलवान काल में समय-समय पर पूज्य गुरुदेव द्वारा मार्गदर्शन व दिव्य निर्देश भी प्राप्त हुए हैं, परन्तु 26 जून 96 को जो घटित हुआ, वह अविस्मरणीय है।

उस रात खेंकर आंधी के साथ खूब बरसात हुई, जिससे मकानों में तीन फुट तक पानी भर गया। घर का सारा जलवान लंचे हिस्से में रख दिया गया था। गांव के सब लोग अपना यामान निकाल कर घर लौट रहे थे, परन्तु मैंने ऐसा कोई उत्कृष्ट नहीं किया। सभी लोगों ने मुझसे कहा थी, कि मकान नित जायेगा, बाहर आ जाओ, परन्तु मैंना एक ही उत्तर था — मेरे जलवान, मेरे गुरुदेव मेरी व मेरे मकान की रक्षा करेंगे, मैं बाहर नहीं आऊंगा।

उस रात गांव की करीब 100 मकान धराशायी हो गए। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था और मैं बराबर गुरु मंत्र का चाप कर रही थी। 26 जून को करीब तीन बजे जल में चारपाई तरलेटी थी, मैंने तंद्रावस्था में देखा, कि पूज्य गुरुदेव आये और जबसे ऊपर की छत पर जा कर खड़े हो गए। फिर उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा कर मुझसे कहा — "घबराओ नहीं, सब ठीक हो जायेगा।"

मैं जैसे ही उर्द्धे, गुरुदेव जा चुके थे। उसी झण से पानी घटने लगा। मेरे मकान में लागभग सात दिन तक पानी रहा, परन्तु मकान का कुछ भी नहीं बिगड़ा, जबकि दूसरे लोगों का खूब नुकसान हुआ। मैं ऐसे महापुरुष के चरणों में नमन करती हूं, जो प्रत्येक पल हमारी रक्षा करते हैं।

श्यामा देवी,
ताड़सर, नागौर

महाकाली के दर्शन

मैंने और एक गुरु भाई ने जनवरी-96 अंक की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 56 पर प्रकाशित 'महाकाली तंत्र साधना' सम्पन्न करने का निश्चय किया। परन्तु मैं सम्बन्धित सामग्री नहीं मिला सका, जबकि दूसरे गुरु भाई ने सामग्री प्राप्त कर निश्चित दिवस पर साधना सम्पन्न की। दूसरे दिन मैंने उस दिवस को सम्पन्न करने पर व्यथाई दी और घर आ कर अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए सो गया, जिसकी वजह से मैं इस साधना को सम्पन्न नहीं कर सका था।

श्री मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997

सोने के बाद मैंने स्वप्न में देखा, कि एक सात वर्षीया बालिका मेरे आम के बर्पीचे में एक पेड़ को नुत्य कर रही है, वह नुत्य ऐसा था, माने प्रलय आ जायेगा। मैंने उसे नुत्य करने से रोका, तो वह लुप्त हो गई और वहाँ आंधी और बारिश शुरू हो गई, साथ ही एक विचित्र इकार की रोशनी वहाँ लगभग पचास फौट के अन्दर फैल गई, जिसमें से निकलना मेरे लिये मुश्किल हो गया था। मैंने गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया, तभी एक दिव्य एकुष ने उपस्थित हो कर मुझे वहाँ से बाहर निकाल लिया।

उसके बाद मेरी आंख खुल गई। फिर ज्यों ही मैंने करबट बदल कर सोना छाला, मेरे मुँह से एक चीख निकल गई, बर्पीकि मेरे सामने भगवती महाकाली का विष्व स्पष्ट था। थोड़ी देर बाद वह विष्व अद्वय हो गया। फिर भी मुझे पांच दिन तक उस कमरे में भगवती की उपस्थिति का आभास होता रहा।

दिनेश कुमार अच्छन,
बंगला, सहरसा, बिहार

दुर्घटना में रक्षा

22 सितम्बर 93 को मैंने गुरु दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा के उपरान्त मेरे पास कुछ धन का आवास हुआ और मैंने व्यापार प्रारम्भ किया।

व्यापार के सिलसिले में ही हम तीन व्यापारियों ने मिल कर टूक लौड कराया और स्वयं भी उसी के पिछले हिस्से में बैठ गए। कूछ दूर चलने पर वह टूक अचानक विपरीत दिशा से आ रही बस से टकरा गया, जिससे उसका पिछला भाग बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया।

टूकर के समय अचानक ही मेरे मुँह से तीन-चार शब्द 'गुरुदेव-गुरुदेव' की आवाज निकली और हम सभी व्यापारी बाल-बाल बच गए, किसी को खरोंच तक नहीं आई, ऐसा लाग रहा था, जैसे यह घटना हमारे साथ नहीं, किसी और के साथ चढ़ी है।

गुरुदेव का सहारा हमें इस तरह प्राप्त है, अब हमें और क्या चाहिए।

रंजन कुमार,
निमियाघाट, गिरिडीह, बिहार



गुरुदेव की अनुपम कृपा

 मैंने 13-14 जनवरी को भोपाल में अयोजित 'दिव्य ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना शिविर' में 'गुरु दीक्षा' और 'दिव्य सूर्य यंत्र साधना' प्राप्त की। शिविर से लौटने के बाद मैंने निष्ठ गुरु मंत्र का 8 माला तथा सूर्य मंत्र का 14 माला मंत्र जप प्रारम्भ किया। लेकिन दो दिन बाद ही मेरे समुर द्वारा मेरी पल्ली के नाम सच्च बारंट निकला, जो कि मुरैन जिला के अच्छाह थाने से निकाला गया था, जो मेरे गांव से 700 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। भिण्ड मुरैन डाक्टरों का गढ़ माना जाता है।

हम दोनों पति-पत्नी को गिरफतार कर दिया गया। हमने अन्तर्जातीय विवाह किया है, अतः जिन्दा रहने की उम्मीद छोड़ दी थी, हमारे गांव वालों को भी हमारे जीवित जापस लौटने की उम्मीद नहीं थी।

हम निरन्तर गुरु मंत्र का जप करते रहे, इसके अलावा हमारे पास अन्य कोई सहारा नहीं था और हमें आश्चर्यजनक खरिणाम प्राप्त हुए। उस थाने के दौरान हमारे पास के गांव के ही निकले और जिन पुलिस वालों ने हमें गिरफतार किया था, उन्होंने हमारे साथ अच्छता सहानुभूति पूर्ण व्यवहार किया। मेरी पल्ली ने वहां मेरे पक्ष में बयान दिया और पूज्य गुरुदेव की कृपा से हम सकुशल प्रयत्नप्रयोग से गांव वापस पहुंचने पर गांव वालों ने एक विजय तून्हास निकाल कर हमारा स्वागत किया।

पूज्य गुरुदेव की कृपा दर्दिव हम पर बनी रहे, ऐसी ही कामना है।

राजेन्द्र जायसवाल,
लीकरी (म.प्र.)

गुरु कृपा से तंत्र बाधा नियारण

 मुझे चार-पांच सालों से नौ दौ में बहुत धयानक सपने दिखाई देते थे, कि मेरे सपने भूत-प्रेत नाच रहे हैं और मुझे रकड़ रहे हैं। सपने देखते देखते मुझे भिंगी के दौरे आने लगते और मुँह से झाग निकलने लगता और दातों में फंसने के कारण जिहा से खून निकलने लगता। जब मैं होश में आता, तो ठीक से किसी से बात नहीं कर पाता। मेरे मां-बाप ने मुख्य के सभी बड़े डॉक्टरों से इलाज कराया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ और बीमारी बढ़ती गई। मुझे कहर बार आत्महत्या का विचार भी आता।

एक दिन मैं अखबार खरीद रहा था, जब पूज्य गुरुदेव की कुछ कृतियों पर मेरी निगाह पड़ी और 'तांत्रिक सिद्धियाँ', 'गोपनीय दुर्लभ मंत्रों के रहस्य', 'प्रैक्टिकल हिपोथिज', 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' आदि कृतियों को खरीद कर मैं घर ले आया।

श्रृंग मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 का था।

उसके बाद मैंने गुरु दीक्षा ली और तभी से डरावने सन् भूत-प्रेत, भिंगी के दौरे आदि न जाने कहां भाग गए। अब भी यदि कभी मुझे डर लगता है, तो पूज्य गुरुदेव को बाद करता हूँ और एक गिलास जल को 21 बार गुरु मंत्र से अभिनवित कर पी लेता हूँ। ऐसा करने के उपरात अपने आस-पास एक सुगन्ध का अनुभव होने लगता है और जो प्रसन्नता स्वाप्न होती है, वह अवर्णनीय है।

यह सब पूज्य गुरुदेव की ही कृपा है।

विजय गोपाल भारती,
चंचगेट, मुम्बई

गुरु कृपा सम अण कछु नाही

घटना 30 दिसम्बर-96 को है, जब मैं 'राज्याभियेक दीक्षा समारोह' में शामिल होने के लिए घर से निकला और अभी दूसरे बारह किलोमीटर दूर ही पहुंचा था, कि अचानक पीछे से पुलिस पहुंच गई और दो वर्ष पूर्व के एक मामले में गिरफतारी वारपट दिखा, गिरफतार कर थाने ले आई, जहां लाख निवेदन करने वाले दीक्षा समारोह में शामिल होने की बात बताने पर भी मुझे सामान सहित बिदा दिया गया।

पुलिस मेरी बात भी नहीं सुन रही थी, यहां तक कि जमानत के लिए पहुंचादार को भी नहीं बुलाने दिया और जेल भेजने की पूरी तैयारी के साथ तत्काल न्यायालय में पेश कर दिया गया। मैं असहाय हो कर जेल जाने की कल्पना और गुरुदेव के पास नहीं पहुंच पाने की वेदना से एकबारी रो पड़ा और गुरु मंत्र का निरन्तर जप करने लगा।

तभी वहां मैंने किसी अन्य कार्यवारा पहले से पहुंचे अपने छोटे भाई को देखा और उसे घटना का विवरण देते हुए तत्काल जमानतदार लाने के लिए घर भेजा। तभी अचानक एक व्यक्ति, जिसे मैं अपना विरोधी और प्रतिष्पर्यासी समझता था, मेरी जमानत लेने पहुंच गया और इसके लिए व्यवस्था करने में जुट गया। संध्या के समय माननीय जज महोदय ने मेरे आवेदन को स्वीकार कर मुझे जमानत दे दी।

जमानत पर हृष्टने के बाद मैं पुनः शिविर के लिए निकला, परन्तु मेरी अन्तिम बस भी बूट चुकी थी। मैं बेहत बहाश था, क्योंकि रेलवे स्टेशन वहां से सी किलोमीटर दूर था और दैन आने में मात्र दो घंटे शेष थे। अचानक एक मेटाडोर आई और उसने मुझे समय पर रेलवे स्टेशन पहुंचा दिया। इस प्रकार मैं 'राज्याभियेक दीक्षा समारोह' में शामिल हो पाया।

धारावत में गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ करते ही सभी बाधाएं स्वतः ही समाप्त होने लगती हैं।

भागवत विश्वकर्मा,
बांकी भोगरा, विलासपुर (म.प्र.)

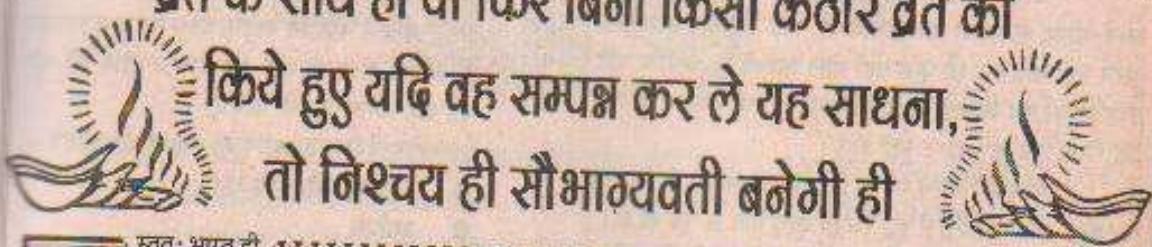
त्यैहारो क
इत्यैहार
है, अद्वित
जला उ
त्यैह दु
त्यैहार स
ज्ञाने के
प्राप्ति, जि
है, वहां पे
क्षंचाइयो

क्षंचियो
भी अनेक
महत्व व
पूर्ति कर

संवेदनम
अपने म
वह बड़े
समाज

सुहाग पंचमी

हर स्त्री की इच्छा होती है अखण्ड सौभाग्यवती होने की,
 इसीलिए वह अनेक प्रकार के कठोर व्रत रखती है,
 व्रत के साथ ही या फिर बिना किसी कठोर व्रत को
 किये हुए यदि वह सम्पन्न कर ले यह साधना,
 तो निश्चय ही सौभाग्यवती बनेगी ही



SUHAG: भारत ही ऐसा देश है, जहां इतने सारे त्यौहारों की व्यवस्था है और हर त्यौहार अपने आपमें धिन है, अद्वितीय है, अपना एक अलग अर्थ एवं प्रयोजन लिए हुए हैं। जहां कई त्यौहार समृद्धि, धन, कैम्पव आदि के लिए हैं, पुत्र-पुत्री प्राप्ति, विद्या प्राप्ति के लिए हैं, वहीं ऐसे त्यौहार भी हैं, जिनके सहयोग द्वारा पूर्ण आध्यात्मिक उंचाइयों को स्पर्श किया जा सकता है।

अनेक कथाएं जुड़ी हैं इन त्यौहारों से। इन त्यौहारों में ऋषियों ने स्त्रियों को भी विशेष महत्व दिया है, उनके लिए भी अनेक पर्व निर्धारित किए हैं, जिससे कि ये उन पर्वों के महत्व को समझ कर, उनका सही तरह से उपयोग कर, अभीष्ट पूर्ति कर सकें।

स्त्रियां स्वभाव से एवं प्राकृतिक रूप से अत्यंत सर्वेदनशील होती हैं और अत्यधिक लज्जाशील होने के कारण अपने मन की बात खुल कर दूसरों से व्यक्त नहीं कर पाती। यह बड़ी ही गम्भीर स्थिति है, क्योंकि हमारे न्रसिंह कालीन समाज में स्त्री को हमेशा खराबर का दर्जा दिया गया और

जहां 'अखण्ड सौभाग्य' का ज्ञानिक अर्थ यह है, कि स्त्री पति से पूर्व ही इस संसार से प्रवृत्तन करे, वहीं इसका तात्त्विक अर्थ है — जीवन में ठब प्रकार से सम्पूर्ण अखण्ड सौभाग्य, याहे वह इच्छित पति हो, याहे धन-दान्य, पुत्र प्राप्ति आदि, ज्यसे प्राप्त हो सके। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सुख जीवन में प्राप्त हो सके और किसी भी क्षेत्र में व्यूनता न रहने पाए।

उनके विचारों, इच्छाओं को सर्वोपरि समझा गया। परन्तु आज स्थिति ऐसी नहीं है। कई कारणों से स्त्री अपने मन की इच्छा को खुल कर प्रकट नहीं कर पाती और मन ही मन बुटती रहती है। यह एक विचारणीय स्थिति है और इस स्थिति को भाँप कर ही ऐसे पर्वों की संरचना हुई, जो स्त्रियों के लिए ही विशेष रूप से हों।

ऐसे ही पर्वों में से एक है सुहाग पंचमी। स्त्रियों के जीवन में विशेषतः निम्न स्थितियां हो सकती हैं, जिनसे वे खुल कर बोल नहीं पाती और मन मसोस कर रह जाती हैं — पहली स्थिति यह है, कि स्त्री किसी इच्छित वर से विवाह करना चाहती है या किसी से उसका प्रेम है, तो वह जाहिर नहीं कर पाती और उसके घर बाले उसकी सलाह लिए बगैर उसका विवाह कहीं और तय कर देना चाहते हैं, तो उस स्त्री के लिए यह बड़ी ही मानसिक तनाव की स्थिति होती है तथा कई बार तो वह आत्महत्या जैसे जघन्य कदम भी उठा लेती है।

दूसरी स्थिति यह है, कि स्त्री का पति किसी दूसरी स्त्री पर मोहित हो गया हो और उसके सास-श्वमुर उस बेचारी अबला को ही दोषी ठहराते हों; इस प्रकार वह पति की कटुता एवं सास-श्वमुर के तानों के बीच पिस कर रह जाती है।

तीसरी स्थिति यह है, कि वहां पर बहु को तब तक बहु नहीं माना जाता, जब तक वह 'पुत्र' को जन्म न दे और एक बंश को बढ़ाने वाले को पैदा न करे। अतः जब तक स्त्री समुराल खालों की यह मांग पूरी नहीं कर देती, वह नित्य तनाव में हो रहती है और चुपचाप सब दुःख सहन करती है।

चौथी स्थिति यह है, कि घर में कलह रहती हो, धन-धान्य, सम्पत्ति का अभाव हो, पति शराबी-जुआरी हो और स्त्री चाह कर भी कुछ नहीं बोल सकती हो, क्योंकि यदि वह साहस कर बोलती भी है, तो प्रताङ्गना एवं अपमान या भार के सिवा उसे कुछ प्राप्त नहीं होता।

पांचवीं स्थिति यह है, कि हर स्त्री चाहती है, कि वह अखण्ड सौभाग्यशालिनी हो, उसकी मृत्यु पति से पूर्व ही हो।

उपरोक्त पांच स्थितियों में से कोई न कोई स्थिति प्रत्येक स्त्री के जीवन में होती है और वह इनसे परेशान होकर मानसिक तनाव की शिकार होती रहती है। ये समस्याएँ ही ऐसी, कि स्त्री चाह कर भी कुछ कर नहीं सकती, उसके हाथ में कुछ भी नहीं रहता और वह समयता के अभाव में पूरी तरह बिखर जाती है।

इन्हीं समस्याओं के निराकरण के लिए ही है यह दिवस, जिसे 'सुहाग पंचमी' के नाम से जाना जाता है और इसी दिवस से सम्बन्धित है यह अद्वितीय साधना पद्धति, जिसे 'अखण्ड सौभाग्य कल्प' कहते हैं। बास्तव में ही यह साधना अपने आपमें अद्वितीय एवं सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ, कि यह साधना फलीभूत न हुई हो।

जहां 'अखण्ड सौभाग्य' का शाब्दिक अर्थ यह है, कि स्त्री पति से पूर्व ही इस संसार से प्रस्थान करे, वहां इसका तात्त्विक अर्थ है — जीवन में हर प्रकार से सम्पूर्ण अखण्ड सौभाग्य, चाहे वह इच्छित पति हो, चाहे धन-धान्य, पुत्र प्राप्ति आदि, उसे प्राप्त हो सके। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक का सुख जीवन में प्राप्त हो सके और किसी भी क्षेत्र में न्यूनता न रहने पाए।

इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है, कि स्त्री इसके द्वारा अपने मन की सभी दबी इच्छाओं को पूरा कर सकती है, उसे दूसरों के निर्णय पर निर्भर होने की ज़रूरत नहीं होती, अपने मन की बात किसी पर प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती, वह अपनी आकृक्षा

इस साधना के द्वारा पूर्ण कर सकती है।

अखण्ड सौभाग्य कल्प साधना

प्रत्येक साधना के अपने कुछ विशेष नियम होते हैं जिनके फलस्वरूप वह साधना शीघ्र सिद्ध होती है। इस साधना के भी नियम निम्न हैं —

1. यह साधना एक दिवसीय ही है और इसे 05.11.97 को या किसी भी सोमवार को सम्पन्न करें। इस दिन एक बार ही भोजन ग्रहण करना चाहिए।
2. साधना के दिन प्रातःकाल सूर्य देव को जल चढ़ाकन, उससे मन ही मन साधना में सफलता हेतु आशीर्वाद मारें। इस साधना में कोई भी बड़िया वस्त्र धारण कर सकते हैं, आसन पीला हो और यह साधना उत्तर की ओर मुंह कर सम्पन्न करनी चाहिए।
3. इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है —
 - अखण्ड सौभाग्य यंत्र
 - अर्पणा
 - कल्प माला
4. इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है —

साधना विधान

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान कर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर उत्तराभिमुख होकर बैठ जाएं और अपने सामने पीले वस्त्र से इके बाजोट पर 'अखण्ड सौभाग्य यंत्र' को स्थापित कर उसका पंचापचार पूजन सम्पन्न करें।

तदुपरांत उस पर 'अर्पणा' अर्पित करते हुए अपनी समस्या या इच्छा विशेष का उच्चारण कर, उसके निकान के लिए प्रार्थना करें, और फिर 'कल्प माला' से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

ह्रीं गौरि योगेश्वरि हुं फट्

HREEM GOURI YOGESHWARI HUM PHAT SWAHA

प्रयोग समाप्त होने पर आगे दिन यंत्र, माला तथा अर्पणा को नदी में प्रवाहित करें। आप स्वयं इसके प्रभाव को देख कर दांतों तले ऊंगली दबा लेंगी। इसके प्रभाव से स्त्री का इच्छित विवाह होता है, पुत्र योग न हो तो भी पुत्र उत्पन्न होता है, पति दूसरी स्त्रियों, जुआ आदि को छोड़ कर पूर्ण रूप से प्रेम करता है और वह जीवन में प्रत्येक प्रकार से धन, वैधव, ऐश्वर्य प्राप्त कर 'अखण्ड सौभाग्यवती' होती हुई इस संसार से विदा लेती है।

गौलाल —(प्रयोग यंत्र) - 240/-

हृष्णोऽप्यु

शक्तीस्थ पांचों चक्रों — मूलश्चान् स्वाधिष्ठन, मणिपुर, अनाहत और विशुद्ध के पद्मबों को अब तक आपके क्रमशः पार किया है और हनके विभिन्न आयामों को अपने जीवन में जारी है। आपके हनके सफलता प्राप्ति की खूबना पा कर छाता भी उत्साह बढ़ है और अपने प्रयत्नों की सार्थकता पर द्वा गौव्यान्वित भी हैं।

अब होण बद्दे हैं 'आज्ञा चक्र' और 'चलसार' . . .
तो आह्वाय! हनके बारे में भी जावे . . .

आज्ञा चक्र

आज्ञा चक्र को स्थिति धूमध्य में मानी गई है। मानव शरीर में आज्ञा चक्र का अत्यन्त हो महत्वपूर्ण स्थान है। इस चक्र की सहायता से सम्पूर्ण शरीर को नियन्त्रित किया जा सकता है। जब सद्गुरु किसी शिष्य को दीक्षा प्रदान करते हैं, तब वह दीक्षा भौतिक उपलब्धियों हेतु हो या आध्यात्मिक उपलब्धियों हेतु, तो वे उस साधक या शिष्य के आज्ञा चक्र को ही अपने अंगुष्ठ से स्पर्श करते हुए अपने तपस्यांश को उसके अन्दर समाविष्ट करते हैं, जिससे कि साधक दिव्यता के पथ का आश्रय ले कर अपने लक्ष्य के समीप तत्काण गहुंच सके और उसे प्राप्त कर सके।

इसका अर्थ यह है, कि मात्र आज्ञा चक्र को नियन्त्रित कर लेने मात्र से भी समस्त भौतिक और आध्यात्मिक स्थितियों और उपलब्धियों को नियन्त्रित किया जा सकता है और मनोबाधित को प्राप्त किया जा सकता है। पूज्य गुरुदेव की कृति 'दीक्षा संस्कार' के 'दीक्षा योग' नामक अभ्याय में वर्णित है, कि मनुष्य को यदि उसके आज्ञा चक्र में निहित

आन्तरिक बिन्दुओं का ज्ञान हो जाये, तो वह किसी भी समस्या, चूनता या परेशानी को स्वयं दूर कर सकता है।

आज्ञा चक्र पर ही 'दिव्य नेत्र' या 'तृतीय नेत्र' स्थित होता है, जो कि कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया में आज्ञा चक्र जागरण के पश्चात् व्यक्ति को अनुभूत होता है।

शरीर में स्थापित गुरु की स्थिति भी आज्ञा चक्र में ही होती है अर्थात् गुरु आज्ञा चक्र में ही विराजमान होते हैं। इसी कारणावश उन्हें 'द्विदलकमलमध्ये स्थितः' कहा गया है।

इस चक्र का स्वल्प दो दल के कमल के रूप में माना गया है, जिसका वर्ण इवेत है। यह चक्र पञ्चमलापूर्तों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से भी परे 'महतत्व' का प्रतिनिधित्व करता है। इसका लोक 'महः', देवता 'लिंग' और उनकी शक्ति 'हाकिनी' है।

इबोधी में आज्ञा चक्र को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जैसा कि अभी तक आपने देखा है, कि अलग-अलग उपलब्धियों को प्राप्त करने व समस्याओं का

निदान प्राप्त करने के लिए अलग-अलग चक्रों की साधनाओं का विद्यान मिलता है; लेकिन मात्र आज्ञा चक्र की साधना सम्पन्न कर, उसे पूर्णतः स्पन्दन युक्त बना कर भी इन सम्पन्न उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सकता है, जिनका वर्णन-विवरण इस लेख के माध्यम से अंतिका के पिछले अंकों में दिया जा चुका है।

इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त फिर व्यक्ति को अन्य निम्न प्रदेशस्थ चक्रों की साधना अलग-अलग सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं रह जाती है और वह एक बार में ही सम्पन्न उपलब्धियों को प्राप्त कर अपने आपको सम्पूर्ण रूप में रोग मुक्त करने में समर्थ हो जाता है।

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'आज्ञा चक्र यंत्र' की आवश्यकता होती है। किसी भी गुरुवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नियमों से निवृत्त हो कर सफेद रंग के बिना सिले हुए वस्त्र धारण कर सफेद रंग के आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कारके बैठ जायें। अपने सामने बाजोट पर भी सफेद वस्त्र बिल्ला कर उस पर आज्ञा चक्र यंत्र को स्थापित करें।

सबसे पहले गुरु ध्यान करें—

ध्यान

पृथिव्ये प्रभेदनपदु परिशुद्धरूपं,
आधारपद्मगत कृष्णलिनी स्वरूपं।
हंकार बीजमूलं भवपाशनाशं;
भूमध्यं मद् गुरु सततं प्रणीमि॥

ध्यान के उपरान्त गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु मंत्र का 4 माला मंत्र जप सम्पन्न करें—

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥
Om Param Tatvay Narayanay
Gurubhyo Namah

इसके उपरान्त आज्ञा चक्र यंत्र का भी सामान्य पूजन कर उसे देखते हुए एकाग्र चित्त हो कर दो घंटे तक निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

ॐ हं क्षं प्रणव रूपाय सिद्धये ॐ नमः॥
Om Ham Ksham Pranavroopay Siddhye
Om Namah

मंत्र जप समाप्त होने पर एन: 4 माला गुरु मंत्र का जप करें। इस प्रयोग को आठ दिनों तक नित्य सम्पन्न करें।

ॐ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान 'सितम्भर' 1997 ३६ ॐ—

ऐसा करने से आज्ञा चक्र पूर्णतः चैतन्य हो जाता है। जब गुरुवार को प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को नदी में विमर्जित कर दें।

वौषाधार — 120—

अब आप अपनी जिस इच्छा को पूर्णता देना चाहते हैं या जिस रोग की निवृत्ति करना चाहते हैं, उसके लिए गुरुवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत रंग के आसन पर बैठ कर गुरु पूजन और गुरु मंत्र का 4 माला जप सम्पन्न करने के उपरान्त मनोवाचित संकल्प ले कर आज्ञा चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें और उसके देवता 'लिंग' व उनको शक्ति 'हाकिनी' से संकल्प की पूर्णता की प्राप्ति करें। ऐसा करने से आप अपना मनोवाचित प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

सहस्रार

सहस्रार को 'ब्रह्मरन्ध' या 'दशम द्वार' की संज्ञा से भी सम्बोधित किया जाता है, जो कि मस्तिष्क में जिस स्थान पर चोटी रखी जाती है, उस स्थान पर स्थित होता है। इसकी संरचना भहस्त दल कमल के समान मानी गई है। यह एक उल्टे कटोरे के समान दिखाई देता है, जो ऊपर से तो सूर्यवत् और नीचे से चांदी के कटोरे में भी 'मर्करी लाइट' के समान प्रतिभासित होता है।

जब इबोपी के माध्यम से सहस्रार को स्पन्दन प्रदान कर धैत्य किया जाता है, तो उसमें सहस्र धाराओं के रूप में अमृत तत्त्व प्रवाहित होने लगता है, जो कि धोरे-धीरे पूरे मस्तिष्क और शरीर में फैल जाता है। इस अमृतीकरण क्रिया के फलस्वरूप शरीर दिव्य और चैतन्य हो जाता है, उसको कांति बढ़ जाती है और एक स्वर्णिम आभा से चापा हो जाती है। यह स्थिति कायाकल्प से भिन्न व अधिक उच्च है, जिसे प्राप्त करने के उपरान्त व्यक्ति सदा के लिए रोगों, व्याधियों अदि की चिनाओं से मुक्त हो जाता है। इसके साथ ही साथ समाधि की क्रिया, जो अनाहत चक्र से प्रारम्भ होती है, वह भी यहाँ पर आ कर पूर्णता प्राप्त करती है।

सहस्रार तत्त्वातीत अर्थात् सभी तत्त्वों से परे है। इसके देवता 'परब्रह्म' और उनकी शक्ति 'महाशक्ति' हैं। मस्तिष्क में अवस्थित यह चक्र 'सत्यम्' लोक का प्रतिनिधित्व करता है।

साधना विधान

किसी भी गुरुवार के दिन ब्रह्म मुहूर्त में श्वेत वस्त्र

वाला कर इन्हें उपरान्त लगाने का 'सहस्रार यंत्र'

इसके द्वारा त्वये व आनन्द व्रद्धाण्ड हंसात्मा व्यान

४ माला मंत्र जपनट तक जप नित्य करे —
मंत्र

ॐ आनन्द व्रद्धाण्ड हंसात्मा व्यान

समय की गति के फल अधिकतम होता है इस सकलता प्राप्त 20.9.97 —

मंत्र

ॐ प्राम 25.9.97 —

मंत्र

(Om

ज्ञान कर श्वेत आसन पर उत्तराभिमुख हो कर बैठे और उन्हें सामने बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछा कर उसके ऊपर 'तत्त्वारथंत्र' को स्थापित करें।

इसके बाद गुरु ध्यान करें -

मंत्र

तत्त्वमेव तत्त्वारथंपरारथंचिन्त्यं,
आनन्द मूर्ति नियतं परिपूर्णचन्द्रं ।
ब्रह्माण्डवर्धनमधिगम्य च तद् विधेयं;
हंसात्मकं मद् गुरुं प्रणमस्मि नित्यम् ॥

ध्यान के उपरान्त गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु मंत्र का 4 माला मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात् निम्न मंत्र का 30 नियंत्र तक जप यंत्र पर एकाग्र दृष्टि रखते हुए तीन दिनों तक नियंत्र करें -

मंत्र

ॐ अं क्षं हंसाय तत्त्वारथंत्र ॐ ॥
Om Aam Ksham Hansay Tatvablijay Om

मंत्र जप समाप्त होने पर पुनः 4 माला गुरु मंत्र का जप करें। तीन दिनों के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

यहां यह तथ्य भी ध्यान रखने योग्य है, कि यह साधना आज्ञा चक्र की साधना के उपरान्त ही सम्पन्न की जानी चाहिए, अन्यथा साधक इसका पूरी तरह लाभ नहीं उठा पाता है।

न्यौछावर - 125/-

इसके साथ ही पूर्ण होती है इबोपी की यह यात्रा। आपके पत्रों से यह स्पष्ट है, कि यह यात्रा आपको भी पूरी तरह रास आई है और मुझे विश्वास है, कि वह सम्पूर्ण रूप से आपके जीवन में अपना स्थान बनाने में सक्षम होगा। आप अपने आपको पूर्ण रूप से रोग मुक्त करते हुए दिव्य आध्यात्मिक ऊंचाइयों को स्पर्श कर सकें, दिव्यता की ओर अग्रसर हो सकें, अमृतांकरण किया को सम्पन्न कर सकें, समाधि अवस्था को प्राप्त कर सकें और देवमय बन सकें, ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद प्रदान कर रहा हूं।

कालचक्र

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग विशिष्ट महत्व है। इस काल चक्र की गति के फलस्वरूप कुछ देसे विशिष्ट क्षण भी व्यक्ति के जीवन में आते हैं, जिनमें साधना विशेष को सम्पन्न करने पर सफलता का प्रतिशत अधिकतम होता है और श्रेष्ठ साधक इन विशेष क्षणों को अपने जीवन में उतार लेते हैं।

इस समय के अन्तर्गत ऐसे ही चार विशिष्ट साधन युहूर्त को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनमें सम्पूर्ण साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होगी ही...।

20.9.97 - अश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्थी, शनिवार को भरणी नक्षत्र में सिंह योग और सर्वोर्ध्व सिंह योग चार्टिंग हो रहा है। इस दिन रात्रि 8:24 से 10:12 के मध्य निम्न मंत्र का 'शनि गुटिका' (न्यौछावर - 100/-) के समक्ष तेल का दीपक लगा कर जप कर आप शनि के कुप्रभावों को समाप्त कर सकते हैं -

मंत्र

ॐ प्रां प्रीं शं शनैश्चरश्य स्वाहा ॥

(Om Pram Preem Proum Shamb Shanaishchray Swaha)

25.9.97 - गुरु युध्य योग, परिश योग, अनुरूप सिंह योग तथा सर्वोर्ध्व सिंह योग के समन्वय के साथ अश्विन कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि धन प्राप्ति के लिए अन्यतन्त्र श्रेष्ठ योग है। इस दिन रात्रि को 9:15 से 10:30 के मध्य 'कमलानाक' (न्यौछावर - 60/-) के समक्ष निम्न मंत्र का जप करें, सातवें दिन कमलानाक को नदी में ड्रवाहित कर दें -

मंत्र

ॐ फ्लौं फ्लौं श्री ह्रीं फद ॥

(Om Phloum Phloum Shreem Hreem Phat)

श्री मंत्र-नाम-यंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 ३७ श्री

6.10.97 - अश्विन शुक्ल पक्ष की पंचमी, सोमवार को अनुराध नक्षत्र में आयुष्मान योग एवं सर्वोर्ध्व सिंह योग चार्टिंग हो रहा है, जो घर में सुख-सौभाग्य प्राप्ति को साधना हेतु सर्वोर्ध्व प्रदायक है। इस हेतु साधक प्राप्तकाल 6:00 से 8:12 के मध्य 'सौभाग्य गुटिका' (न्यौछावर - 80/-) के समक्ष निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

ॐ क्रीं श्रीं क्रीं अ ॥

(Om Kreem Shreem Kreem Om)

11.10.97 - विजय दशमी पर्व, अश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी, शनिवार को प्रवण नक्षत्र में धृति योग व सर्वोर्ध्व सिंह योग चार्टिंग हो रहा है, जो कि अपने शनुओं पर विजय प्राप्त करने का श्रेष्ठ अवसर है। इसके लिए साधक को अपने सामने 'कल्ता' (न्यौछावर - 60/-) को रख कर उसके समक्ष रात्रि को 8:24 से 10:45 तक निम्न मंत्र का जप करना चाहिए -

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं फद ॥

(Om Hreem Hreem Phat)

दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

परम पूज्य गुरुदेव
की पावनतम वाणी में

दीपावली की रात्रि में महालक्ष्मी के
पूजन-अर्चन के लिए अद्वितीय कैसेट

महालक्ष्मी पूजन

इसके अतिरिक्त महालक्ष्मी के विविध स्वरूपों की प्रामाणिक
साधनाओं के लिए ये कैसेट्स भी उपलब्ध हैं —

- * लक्ष्मी सिद्धि
- * लक्ष्मी मेरी चेरी
- * श्रीं लक्ष्मी साधना
- * पारदेश्वरी लक्ष्मी प्रयोग
- * ऐश्वर्य महालक्ष्मी प्रयोग
- * महालक्ष्मी स्वरूप साधना
- * लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग (3 भागों में)

न्यौछावर प्रति कैसेट — 30/-, डाक व्यय अतिरिक्त

:: सम्पर्क ::

आदेश चाहें तो जोधपुर टेलीफोन पर या फैक्स से भी भेज सकते हैं
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-32209, टेलीफैक्स : 0291-32010

सवा
धन
है

पु

ले उनके मा
को आध्यात्मि
है, जिसे आ

जिन्होंने आ
चबन किए
मानसरोवर
विष्णु तीर्थ
धिरा यह

कार्य की
उच्चताको दि
सभी ने प
और वह

में छोटे
स्वयं ब्रह्म
के माध्य

विश्वकर्मा सप्तमणि

सम्पन्न कर ली जाय, तो निश्चय ही सुख, सौभाग्य धन, वाहन तथा यश प्रतिष्ठा से प्रफुल्लित हो उठता है साधक का घर-आंगन . . .



रातन काल में, जब उच्चकोटि के ऋषियों ने यह निश्चय किया, कि जनमानस में दिव्यता और चेतना का विसार निरन्तर करते रहना होगा, तो उनके सामने मुख्य प्रश्न जो उत्तर, वह था, कि किस स्थान को आध्यात्मिकता का केन्द्र बनाया जाय? ऐसा कौन सा प्रदेश है, जिसे आत्म ज्ञान का सर्वोच्च सोपान घोषित किया जाय?

इस समस्या का समाधन किया सप्तऋषियों ने, जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर एक चतुर्भुज स्थान का चयन किया, जिसके एक ओर शिव का धाम कैलाश नानसरोवर था, तो दूसरी ओर ब्रह्म ताल एवं तोसरी ओर विष्णु तीर्थ था, चौथी ओर उच्च श्रेणी के देवों के स्थान में धिरा यह प्रदेश आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में चुना गया।

अब दूसरी कठिनाई जो सामने आई, वह थी निर्माण कार्य की। प्रदेश का चयन तो हो चुका था, परन्तु अब इस उच्चकोटि की योजना को टेस रूप कौन दे? मंत्रणा के बाद सभी ने एक स्वर से एक ही नाम का उच्चारण किया . . . और वह नाम था विश्वकर्मा का।

विश्वकर्मा, जो देवताओं के शिल्पकार हैं, जो सूर्य में छोड़े-मोटे रूप में ब्रह्मा के सहायक हैं और सही अर्थों में स्वयं ब्रह्मा के ही अंश हैं . . . और विश्वकर्मा ने अपनी कला के माध्यम से वहाँ एक दिव्य केन्द्र की संरचना की, एक

विश्वकर्मा, जो देवताओं के शिल्पकार हैं, जिन्होंने सिद्धाश्रम का निर्माण किया है, उनकी यह 'विश्वकर्मा सप्तमणि साधना'

अद्वितीय अश्रम की रचना को, एक 'ऊ' के आकार की चैतन्य स्थली को भूतं रूप प्रदान किया, जो कि बाद में 'सिद्धाश्रम' के नाम से पुकारा गया।

उस सिद्धाश्रम की विशेषता यह है, कि वहाँ न तो मृत्यु है, न ही शोक, भय, कोलाहल, वृणा, प्रतिमार्ध आदि। वह पूर्ण रूप से मानवीय पंच विकारों के प्रभाव से मुक्त है। वहाँ 24 घण्टे निरन्तर एक आनन्द, एक भस्ती एवं आध्यात्मिकता का एक निर्झर बहता रहता है और यहाँ स्थली आज भी आध्यात्मिकता का सर्वोच्च केन्द्र है।

यदि उच्चकोटि के ऋषि-मुनि विश्वकर्मा की महायता प्राप्त करने को लालायित हुए, तो वह अपने आपमें ही विश्वकर्मा की सर्वोच्चता एवं अद्वितीयता का द्योतक है।

आज मानव जीवन चारों ओर से विभिन्न परेशानियों से जकड़ा हुआ है। व्यक्ति चाह कर भी इच्छित स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाता और उसके द्वारा किए गए सभी प्रयत्न स्पृष्टि: विफल ही होते हैं। आज जब महागाई आसमान को छू रही है, सामान्य मानव के लिए सुन्दर भवन, वाहन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य आदि मात्र कल्पना बन कर ही रह गए हैं। इसके अलावा व्यक्ति, चाहे वह किसी भी श्रेणी का हो, उसका जीवन, शोक, मोह, रोग, भय, झृण, व्याधि आदि से धिरा रहता है, वह एक-एक पग आशंकित सा उठता हुआ चलता

रहता है और खुद हमेशा आनन्द से विजित रहता है।

परन्तु यह मानव की नियति नहीं, कि वह इस प्रकार
का चेतना शून्य जीवन जिये, इस प्रकार का पश्चात् जीवन
जिये, कर्मीक उसके स्वयं के अन्दर दिव्यता का लोत स्थित है,
जो उसे साधना मार्ग पर अग्रसर कर उसकी समस्या न्यूनताओं
को समाप्त करने में सहायक हो सकता है एवं उसे सफलता के
उच्चतम शिखर पर पहुँचा सकता है।

जीवन की एक ऐसी ही अद्वितीय साधना है 'विश्वकर्मा सप्तमणि साधना', जो समस्त साधनाओं में अग्रणी है, जिसका कोई मुकाबला नहीं, क्योंकि जीवन में इस साधना से स्वतः ही प्राप्त होती है ये सात अनुपम स्थितियाँ -

- इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त व्यक्ति को उच्चकोटि का भवन, बाहन आदि का मुख प्राप्त होता है, जो उसके लिए हर दृष्टि से अनुकूल होता है।
 - इस साधना को सिद्ध करने के उपरान्त व्यक्ति के जीवन में वश, मान, प्रतिष्ठा, धन, वैभव एवं अदृढ़ लक्ष्मी का आगमन होता ही रहता है।
 - उसके घर में रोग, शोक, भय, व्याधि आदि रह नहीं पाते, वह समस्त ऋणों से मुक्त होता हुआ प्रसंभवता

विश्वकर्मी राष्ट्रमणि साधाना

यह एक तांत्रिक साधना है, जो अस्थायिक तीव्र एवं शीघ्र प्रभाव देने वाली है। इसकी श्रेष्ठता का अदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है, कि कई बार तो साधक को साधना काल में ही अनुकूल अनुभव होने लगते हैं।

इस एक विश्वसीय साधना को किसी भी बुधवार को शुरू करना चाहिए। वैसे विश्वकर्मा जयन्ती (01.11.97) को सम्पन्न करें, तो अत्यधिक सफलतादायक भवति जाता है।

आवश्यकता पड़ती है—

- विश्वकर्मा सुजन यंत्र
 - श्रेष्ठत्व माला
 - सप्त भण्डार

इन सभी सामग्रियों का गव्वां चैतन्य हेतु अत्यधिक है।

सामाजिक विषय

四

माधव को सबों ब्रह्म मुहर्त में डूँ कर, स्नान आदि से निवृत होकर, पौले वस्त्र धारण कर, पौले आसन पर उत्तराधिपूज्य होकर बैठ जाना चाहिए, और फिर अपने सामने पौले वस्त्र से डके बाजी पर 'विश्वकर्मा मुजन चंद्र' को स्थापित कर उल्का सामान्य एजन सम्पन्न करना चाहिए।

इसके बाद निम्न पंत्र का उच्चारण करते हुए एक-एक कर सभी मणियों को धन्त्र पर चढ़ाएं ।

八

ਮੁੰ ਫਲੈਂ ਰਲੈਂ ਫਦ

OM FLOUM FLOUM PHAT

आखिरी भणि अपूर्णत करते समय यदि कोई इच्छा विशेष हो, तो उसका उल्लंघन कर दे और किर 'ओष्ठुव माला' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

ॐ ह्लै फ्लै नमः
OM HLEEM FLOUM NAMAH

यह मंत्र देखने में भल ही लौटा है, पर वह अनुभूत प्रयोग है और आज तक असफल नहीं तुआ। जो व्यक्ति इस साधना को लम्हा ही नहीं दिनों के भीतर ही अनकृतता प्राप्त होती ही है।

यह साधना तीन दिनों तक निरस्त करने चाहिए। इसके उपरान्त समस्त पूजन सामग्री को किसी नदी या जलाशय में आपत्ति कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना कल्पी भूत होती है।

निश्चय हो यह साधन वर्तमान काल की परेसाइटों का देखते हुए, वरदान स्थल है और जो व्यक्ति जीवन में सब प्रकार से आनन्द, सुख, सपृष्ठि, धन, चश, मान, प्रतिष्ठा का आकर्षणी है, उसे यह साधन सम्पन्न करनी ही चाहिए। ग्रामात् - (प्रयोग पैकेट) - 180/-

जाप अद्वयजनक शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं
वही आपके अन्दर गुरु की चुम्बकीय शक्ति समाप्ति हो जाय...
और इसी देहु पत्रिका के इन पृष्ठों पर यह लेख प्रकृत है -

शक्तिपात दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा में गुरु की चुम्बकीय शक्ति
कार्य करती है और शिष्य की प्रसुप्त कुण्डलिनी को
बाह्य कर परम चेतना से उसका साक्षात्कार कराती है। गुरु
वह व्यक्ति होता है, जिसके प्राण और मन ईश्वरीय सीमा में विद्युत
होते हैं। जिनसु के प्राण और मन विना स्तर पर अवश्य नहीं होते हैं।
जिन्हें गुरु अपनी शक्ति से उद्धरणामी बना देता है।

- विजय शर्मा -

शक्तिपात दीक्षा भारत की सनातन विद्या है। इस दीक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य को अपने ही समान शक्तिशाली और समर्थ बना देता है। इसमें गुरु की शक्ति ही शिष्य में संक्रमित होती है, इसीलिए इसे शक्तिपात दीक्षा कहा जाता है। इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद शिष्य के व्यक्तित्व का दिव्य रूपान्तरण हो जाता है। कारण यह है, कि गुरु की शक्ति जब शिष्य में संक्रमित होती है, तब शिष्य का व्यक्तित्व पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। दीक्षा के पूर्व शिष्य का जैसा व्यक्तित्व होता है, दीक्षा के बाद उसमें परिवर्तन इसीलिए हो जाता है, क्योंकि गुरु अपनी सुदृढ़ इच्छा शक्ति से शिष्य के चिन्त में मनोनुकूल परिवर्तन कर देता है। कभी-कभी गुरु शिष्य के चिन्त-पठल

को पूर्णतः नवीन रूप में निर्मित कर देता है। इस तरह शिष्य के व्यक्तित्व का दिव्य रूपान्तरण हो जाता है। भारतीय साहित्य में ऐसे संकेत हैं, कि चित्त-निर्माण की इस कला का प्रवर्तन सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल प्रह्लि ने किया था।

शक्तिपात दीक्षा आर्यों द्वारा प्रवर्तित ऊर्जा-सिद्धान्त का एक अंग है। इस सिद्धान्त के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक विलक्षण ऊर्जा तरंगित रहती है। बिना इस ऊर्जा के किसी का कोई अस्तित्व नहीं रह सकता। भौतिक रूप में ऊर्जा का सूक्ष्म रूप 'प्राण' (वायु) को स्वीकार किया गया है। प्राण में जीवन-रस चेतना का समावेश होने से उसे भौतिक भी नहीं माना जाता। पूर्णतः भौतिक नहीं होने के कारण यांत्रिक उपकरणों के द्वारा इसे प्रकट नहीं किया जा सकता। प्रकृति को यह

ईश्वर के अमूल्य वस्त्रान के रूप में मिला है।

ब्रह्माण्ड में जितने शरीरधारी प्राणी हैं, उन सबकी प्रेरक शक्ति अथवा जीवनी शक्ति यह प्राण ही है, जो सतत सबको क्रियाशील बनाए रखता है। प्राण की यह विशेषता होती है, कि वह जीवन के अस्तित्व को अधिक्षयक करता है। न केवल धौतिक शरीर, अपितु मन और बुद्धि के आध्यात्मिक और गोपनीय स्तरों को भी प्राण प्रभावित करता है। प्रणियों के स्नायु-तंत्र में प्राण की शक्ति विशुद्ध धारा की तरह प्रवाहित होती है। मनुष्य के धौतिक शरीर और मानसिक शरीर के मध्य प्राण सेतु का कार्य करता है। प्राणमय आवरण का अतिक्रमण किए बिना किसी की चेतना आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश कर ही नहीं सकती।

वैदिक वाद्यम्
में धौतिक शरीर, मन
और बुद्धि के समस्त
क्रिया-कलापों का
सूत्राधार प्राण को ही
माना गया है। इसमें
सिद्ध होता है, कि प्राण
को अनुशासित कर
मनुष्य शरीर, मन और
बुद्धि से इच्छानुरूप
कार्य सम्पन्न कर सकता

है। ऐसी स्थिति में योगी शरीर, मन और बुद्धि के समस्त कार्यों को रोक भी सकता है। वह चाहे, तो अपनी सांसों को भी रोक सकता है और हृदय की शडकनों को भी बंद कर सकता है। आज के वैज्ञानिक यह देख कर आश्वर्य चकित रह जाते हैं, कि समाधि की अवस्था को प्राप्त योगी मृत्यु की सीमा में प्रवेश कर पुनः जीवित हो जाता है।

प्राण शक्ति की यह विशेषता होती है, कि वह मनुष्य के मन को इंट्रियो से सम्बद्ध करती है, जिसके कारण मनुष्य मन्दिव बहिर्मुखी रहता है। जब भी मनुष्य अंतर्मुखी होने का प्रयास करता है, प्राण शक्ति के आरोह-अवरोह उसे बहिर्मुखी बना देते हैं। प्राणाधाम की साधना के द्वारा मेरुदंड के पथ से जब प्राण शक्ति को महस्त्रार तक ऊर्ध्वमुखी किया जाता है, तो मन धौतिक शरीर से सञ्चर्य विच्छेद कर देता है, तब एकाग्रता की अवस्था में समाधि का बोध होने लगता है। साधकों का अनुभव है, कि प्राण शक्ति मूलाधार में केन्द्रित होती है। योग शास्त्रों में ऐसी अवस्था को प्रसुत्त कुण्डलिनी

शक्ति की संज्ञा दी गई है। ऐसी कल्पना की गई है, कि मूलाधार में स्वयंभू शिव को यह शक्ति सार्पकृति में परिवेशित किए रहती है और अपने पुच्छ से मेरु-पथ (सुषुप्ता नाड़ी) को अवरुद्ध किए रहती है। यह शक्ति जब जागृत होती है, तो अनेकशः चमत्कार स्वतः विद्यत होने लगते हैं।

भारतीय धर्म-साधनाओं के क्षेत्र में ऐसा विश्वास
किया जाता है, कि इस शक्ति के जागृत हुए बिना मोहन पथ प्रशास्त नहीं हो सकता। इसके जागरण के लिए कठोर व्यक्ति निष्काम कर्म योग का निष्पादन कर सकता है। गम्भीर ध्यान की प्रणाली का अनुसरण कर सकता है। शक्ति के आवेश में ईश्वर के प्रति प्रेमोन्माद को अनुभव कर सकता है अथवा हठयोग की क्रियावें सम्पन्न कर सकता

है। इन समस्त विधियों में कुण्डलिनी जागृत हो सकती है, किन्तु कुण्डलिनी जागरण की सर्वसामान्य स्तरल विधि गुरु प्रदत्त शक्तिपात्र की दीक्षा मानी गई है।

शक्तिपात्र दीक्षा में गुरु को तुम्बकोय शक्ति कार्य करती है

और शिष्य की प्रसुत्त कुण्डलिनी की जागृत कर परम चेतना से उसका साक्षात्कार करती है। गुरु वह व्यक्ति होता है, जिसके प्राण और मन ईश्वरीय सीमा में रिश्त छोड़ते हैं। जिजामु के प्राण और मन निम स्तर पर अवस्थित होते हैं, जिन्हें गुरु अपनी शक्ति से ऊर्ध्वगामी बना देता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया की तुलना विशुद्ध प्रवाह से की जाती है। विशुद्ध प्रवाह जैसे प्रकाशहीन वल्वों को आलोक से भर देता है, उसी प्रकार शक्तिपात्र से गुरु शिष्य के भीतर नवीन चेतना का सञ्चार कर देता है। किन्तु यह सम्पूर्ण प्रक्रिया गुरु की इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है। गुरु अपनी इच्छा शक्ति से शिष्य को जो प्रदान करता है, उसे वापस भी ले सकता है। हमारे देश में ऋषि-मुनियों द्वारा दिये जाने वाले वरदान और शाप का भी यही रहस्य है।

अनेक आचार्य शक्तिपात्र को परामनोवैज्ञानिक आवेश के रूप में परिभाषित करते हैं, जिसके माध्यम से मनुष्य का पारमार्थिक अभ्युत्थान सम्भव होता है। अनुभव में यह पाया गया है, कि जब गुरु शिष्य के परामनोवैज्ञानिक शक्ति केन्द्र

को जागृत कर देता है, तब शिष्य के स्नायु मण्डल में एक हलचल सी मच जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप शिष्य को अनन्द भाव का अनुभव होने लगता है, जिसे ब्रह्म का स्वरूपभूत गुण कहा जाता है। शक्तिपात की प्रक्रिया को 'दृष्टिवश' ऐसे जादू की क्रिया अथवा सम्पोहन की क्रिया से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसी क्रियाओं का प्रभाव क्षणिक होता है, जबकि शक्तिपात का प्रभाव स्थायी होता है।

समर्थ गुरु शिष्य में नेत्र शक्ति द्वारा, वाक् शक्ति द्वारा अथवा स्पर्श शक्ति द्वारा शक्तिपात कर सकता है। भिन्न-भिन्न साधक शक्तिपात के बाद अनुभूत अनेकशः लाभों का वर्णन करते हैं। इस दीक्षा से मनुष्य का आध्यात्मिक विकास तो होता ही है, उसकी प्रतिभा भी अत्यन्त उत्तम अवस्था को प्राप्त होती है चिभिन्न कार्यों को सम्पादित करने की उसकी कृशलता का भी विस्तार होता है, वह नैतिक पूर्णों के प्रति अतिशय जागरूक हो जाता है और बौद्धिक दृष्टि से वह दूरदर्शी बन जाता है। सबोंधिक महाच्छूल्य उपलब्धि यह होती है, कि मनुष्य को आत्मा के आनन्द स्वरूप का बोध हो जाता है। ईश्वर के प्रति भक्ति और ग्रेम की भावना इतनी प्रगाढ़ हो जाती है, कि वह हर पल व्याकुलता के भाव को अनुभव करता है। इस भाव विशेष के ऊर्जावर्ष के कारण ही सिद्ध ममाज में कुण्डलिनी को ईश्वर की आहुदिनी शक्ति कहा जाता है, जिसके दृष्टि विक्षेप मात्र से साधकों को अमर जीवन का रहस्य विदित हो जाता है।

शक्तिपात वस्तुतः: शक्ति का विलक्षण अन्तर्वाह है। दीक्षा के क्षणों में समर्थ गुरु शिष्य के अन्तर्जीन्तर में परामानसिक शक्ति की धारा प्रवाहित कर देता है। इस दीक्षा में मंत्र शक्ति का विलक्षण चमत्कार देखा जाता है। मंत्र चैतन्य होने के कारण सम्बन्धित देवता का आशीर्वाद त्वरित गति से अवतरित होता है और शिष्य प्रबुद्ध हो जाता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया अत्यन्त दिव्य मानी गई है। जैसे ही गुरु की शक्ति का शिष्य में सम्प्रेषण होता है, महाशक्ति कुण्डलिनी उद्बुद्ध हो जाती है, तब सम्पूर्ण स्नायु तंत्र झंकृत हो जाता है, सुषुमा पथ का अवरोध समाप्त हो जाता है और कुण्डलिनी घट्चक्रों का भेदन करके सहस्रार में स्थित परम शिव से मिलने अग्रसर होने लगती है। योगशास्त्रों में इसोलिए इस दीक्षा को वेद दीक्षा कहा जाता है। वेद का अर्थ होता है भेदन। इस दीक्षा में चूंकि पट्चक्रों का भेदन होता है, अतः इसे 'वेद दीक्षा' कहा पूर्ण समीचीन है।

दीक्षा संस्कार

— “जो तुम नहीं प्राप्त कर सकतो, शुलु तुम्हें दे।” तुम शाश्वताओं के माध्यम से सफलता प्राप्त नहीं कर सकते, घण्टो-घण्टों मंत्र जप करके भी तुम आपने लक्ष्य तक जहीं पहुंच पा रहे हो, उसे मैं जब शुलु आपने हाज-चन्द्रों के माध्यम से यह ज्ञात कर लेते हैं, कि शिष्य मैं कहा, कौन सी न्यूनता है, जिसके कारण वह इस जीवन-पथ पर उज्ज्ञाति की ओर धातिशील नहीं हो पा रहा... उस न्यूनता को, उस कर्मी को शुलु आपनी तपरया, कर्जा से शिष्य के आज्ञा चक्र में स्थित विशेष विनु को स्पर्श कर, उस अशुद्धता, उस दोष की समाप्ति कर उसे सफलता प्रदान करते हैं... और तब वह जिस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रवत्तशील होता है, सफलता प्राप्त कर लेता है।

दीक्षा प्राप्त कर व्यक्ति फिर चाहे कोई भी क्रेत्र हो, कैसा भी कार्य हो, इसफल हो ही नहीं सकता, दीक्षित व्यक्ति जीवन के सभी आयागों को स्पर्श करता हुआ मात्रव जीवन की श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेता है, जो उसे शुलु की देव है।

यह तो शुलु-शिष्य का सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है, जिसे प्रदान कर शुलु, शिष्य के जीवन का रक्षक बन जाते हैं और समय-समय पर उसे सचेत करते हुए, उसके लिए पश-पश पर उज्ज्ञाति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दीक्षा से शिष्य के कुसंस्कारों का ब्रह्म होता है... और जब तक कुसंस्कारों का, कर्म-वासना का क्षय नहीं होता, तब तक दीक्षा की वारतविक शार्यकता रिक्ष्व नहीं हो सकती।

दीक्षा के विविध आचारों से परिपूर्ण कराने के लिए ही परा-सीरिज शृंखला ने इस अंथ की भाषण के लिए प्रस्तुत किया है।

चौंडावर - 15/-

हलचल

जहां सौभाग्य आपका द्वार खटखटाता है

16.3.97 को मुख्यमंत्री दीक्षा समरोह भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर साधकों लोगुदेव की ऊजी प्रदान करने में विशेष माध्यम बने हैं श्री गणेश बटाणी। इस अवसर पर विशेष दीक्षाओं को प्राप्त कर अनेक लोगों ने रथयोग की व्रेष्ट्या प्रदान की।

रंग भरा मौसम साधनाओं का

होली का रंग-बिरंगा उत्तरार्द्ध घटपुर में 23-24 मार्च को अनेक दुर्लभ साधनाओं तथा दीक्षाओं के रंग से रंगा हुआ था। इस अवसर पर जोधपुर में गृह सेवा कार्य में सलान सभी गृह भाई अपनी भूल-चास को भूल कर, अनन्द धूक हो कर साधकों की देख-रेख कर रहे थे, जिससे कि उन्हें किसी प्रकार की असुविधा का सम्मन न करना पड़े। पूज्य गुरुदेव द्वारा पुष्पों के माध्यम से खेली गई होली किसी दिव्यतोक का अनुभव करा रही थी।

साधना की धूम मधी

गुजरात में साधना शिविरों को जो धूम मधी है, उसी शुभला में 30.3.97 को यारी, बलगढ़ में साधना शिविर का आयोजन हुआ। श्री गणेश पटेल, श्री प्रवीण पटेल, श्री रमेश भाई पटिल, श्री मुनोज अच्छर, श्री रमेश प्रजापति ने भिल कर जिस सहयोग भवना का प्रशंसन किया, वह अपने आपमें उदाहरण है।

सिद्धिदात्री प्रत्यक्ष साधना शिविर

8-9-10 अप्रैल 97 को मण्डी में नवरात्रि के मावन अवसर पर 'सिद्धिदात्री प्रत्यक्ष साधना शिविर' का आयोजन हुआ। प्रकृति के गम्भ सम्पन्न इस शिविर लोगों देख कर ऐसा संग रहा था, कि प्राचीन ऋषि कालीन दृश्य उपस्थित हो गया है। साधकों ने पूज्य गुरुदेव के सामित्र्य में विशेष साधनाएं सम्पन्न की तथा अनेक दुर्लभ दीक्षाओं को हस्ताप्त किया। श्री एम० आर० नवाश्च, डॉ सुरेन्द्र निहित, श्री कर्नेश शर्मा, श्री विनोद आनन्द एवं श्री जोहन कपूर ने अन्य गुरु भाइयों के सहयोग से इस आयोजन को सफलता प्रदान की।

अमृत महोत्सव

पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस 'अमृत महोत्सव' के रूप में इस बार भोपाल में 19-20-21 अप्रैल को मनाया गया। वहाँ उपस्थित साधकों लोगुदेव भूल-भड़ के कारण पण्डाल भी छोटा भड़ गया था। साधकों ने जिस उत्साह और उम्मुक्ति के साथ यह पर्व मनाया, वह काल के भाल पर अंगठ लाप छोड़ गया। यह सफल

आयोजन श्री अरविंद सिंह, डॉ माधना सिंह और श्री पवन खेताल के करों श्रम का ही परिणाम था।

मुख्यमंत्री का साधना शिविर

11.5.97 को मुख्यमंत्री में आयोजित साधना शिविर सम्पन्न हुआ। यह आयोजन श्री गणेश बटाणी द्वारा मुख्यमंत्री में आयोजित होने वाले साधना शिविरों की ही एक कही था।

शिव शक्ति महालक्ष्मी साधना शिविर बैतूल में सम्पन्न

बैतूल में प्रथम बार इस प्रकार के साधना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ, यह बैतूल के सम्मन निवासियों की अद्दत श्रद्धा और विश्वास का फल था। शिविर में भाग लेने आये हजारों साधकों को उत्साह देखते ही बनता था। इस शिविर के मुख्य आयोजक श्री आर० एम० पद्म, श्री एस० पल० धूर्वे, श्री आर० डी० कुमार, श्री जे० के० मवासे तथा श्री के० के० धाड़े थे।

प्रकृति के क्रोड में साधनाएं सम्पन्न हुई

व्यास नदी के तट पर प्रकृति की क्रोड में 15-16 जून को शिव, शक्ति तथा गृह, इन तीन महाशक्तियों की साधनाएं सम्पन्न हुई। पूज्य गुरुदेव तथा पृथ्यनीया माता जी की उपस्थिति साधात् शिव और शक्ति की उपस्थिति का ही प्रत्यय एहमास करा रहे थे। श्री एम० आर० वशिष्ठ, श्री एम० आर० लक्ष्म, डॉ सुरेन्द्र निहित, श्री कर्नेश शर्मा, श्री विनोद आनन्द एवं श्री जोहन कपूर ने अन्य गुरु भाइयों के सहयोग से इस आयोजन को सफलता प्रदान की।

मंत्रों का गुजरण राजकोट में

22.6.97 को राजकोट में साधना शिविर तथा दीक्षा समरोह आयोजित हुआ, जिसमें सैकड़ों साधकों ने भाग ले कर लाभ उठाया। श्री वसन्त पटिल, डॉ चहाण, श्री कुदले तथा श्री विसपुत्र इस सफल आयोजन के लिए प्रसंगा के पात्र हैं।

पुणे में सम्पन्न हुआ एक दिवसीय शिविर

29 जून को पुणे, महाराष्ट्र में पूज्य गुरुदेव, पृथ्यनीया माता जी द्वारा पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी के पावन सानिध्य में यह अद्वितीय शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर समाप्ति के उपरान्त सभी साधकों ने पूज्य गुरुदेव के साथ जा कर वहाँ में 120 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'भीमशंकर ज्योतिलिंग' के दर्शन भी किये। इस प्रकार के अत्यन्त मुन्द्र आयोजन के लिए श्री वसन्त पटिल, डॉ चहाण/कदम, श्री कुदले तथा श्री विसपुत्र साधुबाद के पात्र हैं।

नवरात्रि में जोतन में तेज तुर हो गई बनाने वाली उज्ज्वला में स्व दिवसों में उ है, साथ ही कुछ प्रदान करने के तानि तत्त्व करना ही, अथात् वा आदि से जिसे सम किया जा जाता है।

करना ही, अथात् वा आदि से जिसे सम किया जा जाता है।

यह साथ तेज, उस दृढ़ निष

नवरात्रि

नवरात्रि के धूधुला छनक ३००



धना पथ पर अग्रसर होना तो किसी भी साधक के पुण्यों के जाग्रत होने का प्रतीक है, उसकी उच्चता की ओर गतिशीलता का प्रमाण है, परन्तु नवरात्रि में साधना सम्पन्न करने का अर्थ है, कि साधक के जीवन में तेजस्विता और चैतन्यता का समावेश होने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। साधना तो साधक के भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाली प्रक्रिया है। तभी तो तपस्यात्मक, साधनात्मक ऊर्जा से स्वयं को पूर्ण करने हेतु साधक नवरात्रि इन विशिष्ट दिवसों में अपने-अपने साधना स्थलों की ओर अग्रसर हो जाते हैं, साथ ही इन दिनों में भगवती स्वयं अपने साधकों को सब कुछ प्रदान कर देने के लिए व्यग्र रहती है।

जीवन में उच्चता प्राप्त करने के लिए, श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए जिस आधार की आवश्यकता होती है, उस शक्ति तत्त्व की साधना प्रमुख क्यों है?

प्रायः देखा जाता है, कि जब किसी व्यक्ति का अपमान करना हो, तो उसे शक्तिहीन कहना आरम्भ कर दिया जाता है, अर्थात् वह व्यक्ति श्री, ऐश्वर्य, बल, पुष्टा, यश, प्रतिष्ठा आदि से हीन है। इससे उसमें कायरता आ जाती है। साथ ही जिसे सम्मानित करना हो, उसे शक्ति सम्पन्न कह कर विभूषित किया जाता है, अर्थात् वह उपरोक्त वर्णित तत्त्वों से युक्त हो जाता है।

यह तो शक्ति तत्त्व का भौतिक रूप है। अध्यात्म में यह साधक की आन्तरिकता से सम्बन्धित होता है। उसका तेज, उसकी ऊर्जा, उसकी क्षमता, उसका मानसिक बल, उसका दृढ़ निश्चय, उसकी संकल्प शक्ति, उसका जुझारूपन — यही

तो एक साधक का सौन्दर्य है और जब वह इन गुणों को प्राप्त कर लेता है, तो उसमें शक्ति तत्त्व को समाहित करने की क्षमता आ जाती है।

यह तो सत्य है, कि दुर्बल चित्त का व्यक्ति, दुर्बल संकल्प शक्ति से युक्त व्यक्ति जीवन में न्यून ही रहेगा, वह उच्चता तथा श्रेष्ठता को प्राप्त कर ही नहीं सकता। भगवती का साधक स्वयं भगवती की ही भौति दुर्गति के नाश को उद्यत रहता है और जब वह अपनी न्यूनताओं को, अपने दोष को, पूर्ण रूप से समाप्त कर सकेगा, तभी वह भगवती का साक्षात्कार कर सकेगा। इसलिए ही शक्ति साधना की प्रमुखता बतायी गयी है।

प्रायः साधक का साधना के क्षेत्र में पदार्पण शक्ति साधना के माध्यम से ही होता है और प्रारम्भ में साधक की क्षमता को बढ़ाने के लिए शक्ति साधना ही सम्पन्न करवाई जाती है। साधक अन्य दिनों में जितना मंत्र जप सम्पन्न करता है, यदि उसका शतांश भी इन नौ दिनों में विधि-विधान पूर्वक जप करे, तो वह सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है और फिर उसका साधनात्मक आधार इतना दृढ़ हो जाता है, कि बाधायें उसके सामने खड़ी रह ही नहीं सकती।

शक्ति पर्व

यों तो नवरात्रि के दिनों में भगवती का चिन्तन करना ही साधक के जीवन में पुण्योदय के जाग्रत होने के समान है, परन्तु साक्षात् गुरु के सान्निध्य में आकर साधनाएं सम्पन्न करना और दीक्षाएं प्राप्त करना साधक की साधनात्मक ऊर्जा में अत्यधिक वृद्धि करता है। यदि इस विशिष्ट समय में वह

कि
वा नहीं, सफल
पर वह स्वयं
प्रति
जाप / कुछ से
दिवस के अ

15 सितम्बर

16 सितम्बर

17 सितम्बर

18 सितम्बर

19 सितम्बर

20 सितम्बर

मन्त्र —

(2)
21 सितम्बर

22 सितम्बर

23 सितम्बर

24 सितम्बर

25 सितम्बर

26 सितम्बर

27 सितम्बर

28 सितम्बर

साधना सम्बन्धी दीक्षा प्राप्त कर साधना आरप्त करता है, तो निष्ठय ही सफल होता है।

इसलिए ही तो गुरुदेव इस बार निष्ठय किया है, कि वे न सिफ साधनाएं ही सम्पन्न करायेंगे, अपितु साधकों की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक आधारों को भी दूर करेंगे। इस बार कुछ अद्वितीय साधनाएं सम्पन्न होंगी, कुछ ऐसी श्रेष्ठ दीक्षाएं प्रदान की जायेंगी, जो अद्वितीय हैं, श्रेष्ठ हैं। एक बार शक्ति का वज्र हाथ में आ गया, संकल्प दृढ़ हो गया, तो फिर छोटी-छोटी आधारों तो स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी।

यदि आप श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न करेंगे, तो अवश्य ही सफलता आपके कदमों में होगी।

इस बार नवरात्रि में निर्मित ज्योतिर्धीय योग को देखकर ऋषियों, मुनियों एवं साधु-समाज में भी एक विशेष प्रकार की हलचल व्याप्त हो गई है।

वे सभी प्रवत्तशील हैं, कि इस बार का जो दुर्लभ योग बन रहा है, इसमें अवश्य ही कुछ हस्तगत कर लेना है, इस बार तो अवश्य ही भगवती जगदम्बा की कृपा को प्राप्त कर लेना है और अपने जीवन को अद्वितीयता से युक्त बना देना है।

इस आर तो सिद्धाश्रम में भी विशेष हलचल व्याप्त है, वहाँ के संन्यासी, ऋषि और मुनि सभी चाहते हैं, कि निखिलेश्वरानन्द जी इस बार नवरात्रि के अवसर पर सिद्धाश्रम में आ कर प्रयोग सम्पन्न करवायें। इस विशेष पूर्णत को ले कर सिद्धाश्रम में, योगियों में एक प्रकार सी फुसफुसाहट सी होने लगी है। उनकी स्वयं की साधनाएं रुक गयी हैं और वे अपनी समस्त 'इन्द्रियों' को जाग्रत कर उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगे हैं, जब पूज्य गुरुदेव उन्हें कुछ नवीन प्रदान करेंगे। यह उनके लिए ईर्झा का विषय है, कि पूज्य गुरुदेव साधना के दुर्लभ रहस्यों को उजागर करते हुए वेहिचक अपने गृहस्थ शिष्यों को सब कुछ यों ही सहजता से प्रदान कर देते हैं,



श्री शंकर-तंत्र-यंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 ४६

जैसे शिशु की उल्कटा को समझ कर मां उसी प्रकार उसके अनुरूप कार्य करने लगती है और वे समस्त योगी, यति संन्यासी अपने बारे में सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं, कि हमने जिन साधनाओं को प्राप्त करने में वर्षों कठोर श्रम किया, अपने आपको मुखाश्य, उसे कितनी सहजता से गुरुदेव अपने गृहस्थ शिष्यों में लुटा देते हैं।

गुरुदेव भी गर्व से कहते हैं, कि वे शिष्य घेरे हैं और मेरे पास जो कुछ भी है, उसे मैं इनको प्रदान कर इनकी न्यूनताओं को समाप्त कर ही दूंगा . . . और सिद्धाश्रम में हलचल मचा जाती है, कि गुरुदेव यह क्या कर रहे हैं? जो साधनाएं गोपनीय रखने के लिए कहीं गई हैं, उन साधनाओं को वे सहजता से अपने नेत्रों द्वारा शक्तिपात कर प्रदान कर रहे हैं, आखिर ऐसा क्यों कर रहे हैं गुरुदेव?

परन्तु गुरुदेव तो अपनी मरती में जहाँ कहीं भी अवसर मिलता है, वहाँ उपस्थित होते ही हैं और साधकों को साधनाएं प्रदान करते ही हैं, साधनाएं भी लघु नहीं, अपितु वे साधनाएं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए गुरुदेव स्वयं कहते हैं, कि उन्हें भी कई महीने तक कठोर श्रम करना पड़ा।

इस बार जब से नवरात्रि शिविर की चर्चा चली है, तभी से सभी साधकों के दिलों में एक हलचल आरम्भ हो गई है, क्योंकि इस बार पूज्य गुरुदेव ने साधकों को जो प्रदान करने का निष्ठय किया है, उसका अर्थ हो है, कि सफलता प्राप्त कर लेना, पूर्णता प्राप्त ही जाना।

फिर इस बार किसी संशय में मत फंस जाइएगा, अन्यथा इस बार सम्पन्न होने वाली अद्वितीय साधनाओं से वञ्चित होकर अपने दुर्भाग्य को कोसने के सिवा आपके हाथ कुछ नहीं आयेगा।

आप इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाते हुए अपने जीवन को अद्वितीयता की ओर अग्रसर कर सकें, श्रेष्ठता को प्राप्त कर सकें, इसके लिए मैं आपका आवाहन कर रहा हूं, आपको आधार दे रहा हूं, आपको बुला रहा हूं।

ह्र

यह हमारे नहीं बाहुमिलि ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की धावना रहती है, कि वह कहाँ सफल होगा नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो तपरिष्ठत नहीं हो जायेगी, परन्तु नहीं दिन का ग्राम्य किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति वह स्वयं को तनाखराहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल, आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रसुत हैं, जो वरहामिहर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें वह प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रसुत किया गया है तथा जिन्हें सम्प्रस करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलता दायक बन सकता।

- | | |
|---|---|
| 15 सितम्बर — प्रातःकाल पांच चित्व एवं शिवलिंग पर 'ॐ
नमः शिवाय' का उच्चारण करने हुए चढ़ाए। | 29 सितम्बर — प्रातःकाल 'अनिता' (न्यौछावर — 24) को भगवान शिव के मन्दिर में चढ़ायें। |
| 16 सितम्बर — प्रातःकाल हनुमानाश्वर का पठ करें। | 30 सितम्बर — हनुमान की मूर्ति पर सिन्दूर का लेपन कर बैसन की बस्तु का नैवेद्य चढ़ायें। |
| 17 सितम्बर — अपने साथ 'ईशुल' (न्यौछावर — 30/-) रखें, अधिकतर कार्यों में सफलता मिलेगी। | 1 अक्टूबर — एक कागज पर कुंकुम से अपना नाम लिख कर उसमें 'ह्रीम क्लीम श्रीम' (Hreem Klicem Shreem) मंत्र का तीन बार उच्चारण करते हुए केसर का तिलक लगा कर ही बाहर जायें। |
| 18 सितम्बर — बाहर जाने से पूर्व 'शून्या' (न्यौछावर — 30/-) को किसी को दान में दे दें। | 2 अक्टूबर — 'ह्रीम श्रीम' (Hreem Klicem Shreem) मंत्र का तीन बार उच्चारण करते हुए केसर का तिलक लगा कर ही बाहर जायें। |
| 19 सितम्बर — प्रातःकाल 'श्री सूक्त' का पाठ करें। | 3 अक्टूबर — दुर्गा के चित्र के समझ 'हु महिष मर्दिनी स्वाहा' (Hum Mahish Mardini Swaha) मंत्र को पांच बार बोलते हुए पांच लाल पुष्प चढ़ाएं। |
| 20 सितम्बर — प्रातःकाल काली उड़द के पांच दाने सेकर, एक-एक करके चारों दिशाओं में निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए फौक दें तथा एक दाना ऊपर आकाश की ओर डें। | 4 अक्टूबर — पीपल के पते जर रख कर दृथ की बनी कोइ वस्तु मन्दिर में चढ़ा दें। |
| मंत्र — ऐं ह्रीं उल्का देव्यै नमः॥
(Ayem Hreem Ulka Devyo Namaḥ) | 5 अक्टूबर — प्रातःकाल भगवती दुर्गा के विप्रह के समक्ष धी का दीपक लगा दें। |
| 21 सितम्बर — मिट्टी के एक दीपक में पांच लौंग डाल कर किसी धीपल के बृक्ष के नीचे जला दें। | 6 अक्टूबर — दुर्गा चालीसा का पाठ करें। |
| 22 सितम्बर — भोजन करने के पश्चात् कृते या गाय को रोटी का ढुकड़ा स्वयं खिलायें। | 7 अक्टूबर — प्रत्येक कार्य से पूर्व भगवती काली के मंत्र 'क्रीम कालिके स्वाहा' (Kreem Kalike Swaha) का ग्यारह बार उच्चारण करें। |
| 23 सितम्बर — चना तथा गुड़ को एक साथ मिला कर किसी हनुमान मन्दिर में चढ़ा दें। बाधाएं समाप्त होंगी। | 8 अक्टूबर — प्रातःकाल 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ करें। |
| 24 सितम्बर — एक गिरावट जल 'ॐ नमः दुर्गे दुर्गे ऋक्षणि स्वाहा' (Om Namah Durge Durge Nakshni Swaha) मंत्र से ग्यारह बार अभिमंत्रित कर पूरे घर-आंगन में छिपक दें। | 9 अक्टूबर — सरसों को 'ॐ श्लीम पशु हुं फट' (Om Shleem Pashu Hum Phat) मंत्र बोलते हुए अपने सिर पर से नीं बार धुमा कर छें। |
| 25 सितम्बर — प्रत्येक कार्य से पूर्व 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' (Om Namo Bhagwate Vaasudevay) का सात बार उच्चारण करें। | 10 अक्टूबर — भगवती दुर्गा के चित्र के समझ लाल पुष्पों की माला चढ़ायें। |
| 26 सितम्बर — प्रातः 'सुदर्शन' (न्यौछावर — 60/-) की गुलाब वो उष्य पर स्थापित कर, उसका सामान्य पूजन करें, महात्पूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। | 11 अक्टूबर — प्रातःकाल नवार्ग मंत्र का एक माला जप करें। |
| 27 सितम्बर — सरसों के तेल का दीपक जला कर अपने छायी में रख दें। | 12 अक्टूबर — प्रातःकाल भगवान सूर्य का पूजन कुंकुम पुष्प, अष्टत में करें। |
| 28 सितम्बर — प्रातःकाल भगवान सूर्य को अर्प्य दें। | 13 अक्टूबर — प्रातः दही तथा शहद से शिवलिंग को स्नान करायें। |
| | 14 अक्टूबर — घर से निकलने से पूर्व गुड़ का पक्षण करें। |

देण का छुश्मन-मोटापा,
स्वस्थ नीवन हेतु मोटापे को मिटाना ही है

आयुर्वेद के चमत्कार वक्ति

जिसमें आहार, व्यायाम, योग का
अद्भुत सम्मिश्रण है . . .

**मोटापा नीवन का अभिशाप है, और इसको
अपने से दूर करने के लिये
आयुर्वेद में सर्वश्रेष्ठ उपाय हैं। 30 दिन
तक नीचे लिखे विवरण के अनुसार कार्य
करें और दख्खे चमत्कार -**

सो भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में सबसे पहले
आप का ध्वनि उसकी दैहिक संरचना की ओर
ही जाता है। यदि व्यक्ति का शरीर सुगड़ित है, तो
उसका व्यक्तित्व भी आकर्षक बन जाता है, जबकि चेहरा चाहे
कितना ही सुन्दर हो अथवा रंग गोरा हो, लेकिन यदि देह में
मोटापा है, भारीपन है, पेट आगे बढ़ा हुआ है, तो सारे शरीर का
आकर्षण ही खट्ट ही जाता है।

स्त्रियों की स्थिति तो और भी बिकट है। आज तक
किसी भी ग्रन्थ में मोटी स्त्री की प्रशंसा नहीं की गई
है। काव्यों में पतली, छरहरी नारी देह के बारे में
हजारों रचनाएं की गई हैं, क्योंकि सुन्दरता और
पतलापन एक दूसरे के साथ-साथ ही जुड़े हैं।

यद रखें, कि यह मोटापा आपने अपने
कपर स्वयं अपने कार्यों के द्वारा, खान-पान के
द्वारा पाया है, ईश्वर द्वारा वरदान में प्राप्त नहीं
हुआ है और न ही किसी श्राप का परिणाम है। तो
फिर इसे दूर करने के लिये आपको ही कुछ
करना पड़ेगा, अन्यथा वास्तव में देह का भार
जीवन पर भार बन जायेगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े
बताते हैं, कि पतले आदमी की अपेक्षा मोटे
आदमी की औसत आयु 10 वर्ष कम होती
है। प्रतिवर्ष भूख से जितने व्यक्तियों की मृत्यु
नहीं होती, उससे कई गुना अधिक व्यक्ति
मोटापे के दुष्परिणामों के कारण मृत्यु का
शिकार होते हैं। मोटापे से ब्लड प्रेशर और
हृदय रोग इत्यादि की सम्भावना पतले व्यक्ति
की अपेक्षा 72 प्रतिशत ज्यादा रहती है।
मोटापे के कारण व्यक्ति की कामशक्ति भी
क्षीण होती है।

शरीर को क्या आवश्यक है?

शरीर को चलाने के लिये पांच तत्त्वों
को सबसे अधिक आवश्यकता रहती है, ये हैं -

1. प्रोटीन
2. कार्बोहाइड्रेट
3. वसा
4. खनिज-लवण और
5. विटामिन।

इन सबके संयोग के कारण ही शरीर के
विभिन्न अंगों के क्रियाकलाप चलते हैं और इनमें से
किसी भी एक तत्त्व की कमी अथवा बढ़ती
लीमारियों को जन्म देती है। यहां हमारा विषय केवल
मोटापा है, अतः उस पर विशेष ध्यान देते हैं।

शरीर की संरचना और उसके विकास के लिये सबसे
पहले प्रोटीन आवश्यक है और यह तत्त्व हमें दूध, दालों इत्यादि
में विशेष रूप से प्राप्त हो जाता है। दूसरा प्रथम तत्त्व
कार्बोहाइड्रेट है, जो कि शरीर का आग्नि तत्त्व है। जो भी हम
खाते हैं, उसका विखण्डन करने की जिम्मेदारी कार्बोहाइड्रेट पर
है और यह मुख्य रूप से रोटी, ब्रेड, चावल, शक्कर, गुड़, जौ
इत्यादि से प्राप्त होता है। वसा का कार्य सबसे अधिक उपयोगी
है, वह शरीर में हार्मोन्स का निर्माण करता है, जो कि सबसे

**आज तक किसी भी ग्रन्थ में मोटी स्त्री
की प्रशंसा नहीं की गई है। काव्यों में पतली,
छरहरी नारी देह के बारे में हजारों रचनाएं
की गई हैं, क्योंकि सुन्दरता और पतलापन
एक दूसरे के साथ-साथ ही जुड़े हैं।**

खनिज-लवण का कार्य शरीर को गोष्ठक तत्त्व तथा जल तत्त्व प्रदान करता है तथा विटामिन्स का कार्य शरीर को चैतन्य रखना और रोग रक्षा है, क्योंकि इन दोनों तत्त्वों में वे गुण होते हैं। मूल रूप से ये दोनों तत्त्व हरी सब्जियों में, दूध तथा फलों में ही पाये जाते हैं।

उपर दिये गये विवरण से यह तो स्पष्ट हो गया कि शरीर को चलाने के लिये कौन-कौन से तत्त्व आवश्यक हैं, लेकिन इनका अनुपात जब तक उचित मात्रा में नहीं होता है, तो फिर शरीर का बैलेन्स बिगड़ने लगता है।

आर्थिक सोटापा होता क्यों है?

एक सबैक्षण के अनुसार सौ में से दो व्यक्तियों के मोटापे का कारण बंशानुगत होता है, वाकी 98 प्रतिशत का कारण उनका आहार-विहार ही होता है। जब जीवन को चलाने के लिये सभी चीजें आवश्यक हैं, तो फिर किसको कम किया जाय और किस प्रकार?

व्यायाम, आहार, विहार और उपचार ये चार स्वरूप स्वास्थ्य रक्षा के लिये माने गये हैं। जिन व्यक्तियों के शरीर में मोटापा बढ़ने लगता है, तो उसे रोकने के लिये उन्हें ये चारों ही उपाय एक साथ करने पड़ते हैं।

आहार-विहार

— सब प्रकार का भोजन करें, लेकिन अनुपात में नियमित, तली हुई बस्तुएं, शी, तेल का सेवन एकदम कम कर दें।

— जब भूख लगे तो थोड़ी देर और रुकें, जब तीव्रतम इच्छा हो जाय, तभी भोजन प्रहण करें।

— भोजन नियमित रूप से समयानुसार करें, ऐसा नहीं कि कभी सुबह जल्दी और कभी दोपहर को तो कभी दिन भर का भोजन एक ही बार में।

— दोपहर के भोजन तथा शाम के भोजन के बीच में कम से कम तीन घण्टे का अन्तर अवश्य ही होना चाहिए।

— भोजन के आधा घंटा पहले आधा गिलास पानी पी लें, उसके बाद भोजन के बीच में तथा भोजन के बाद

शारीरिक श्रम का कार्य कम करने वाले व्यक्तियों पर मोटापा जल्दी हावी होता है, क्योंकि भोजन को पचा कर जो शक्ति सभी अंगों को देता चाहिए, वह किया पूर्ण रूप से सम्पन्न नहीं हो पाती और वसा का भण्डार बन जाता है, अतः नियमित व्यायाम आवश्यक है।

एक ढेह घटे तक पानी न पियें और उसके बाद एक गिलास पानी पियें, तीन घंटे बाद इच्छानुसार पानी पियें।

— जितनी भूख हो, उससे दो रोटी कम ही खाएं।

— रोटी कम करके हरी सब्जियों की मात्रा बढ़ा दें।

याद रखें कि शी, तेल इत्यादि शरीर के लिये आवश्यक हैं, लेकिन यदि ये शरीर में आवश्यकता में अधिक पहुंच जाते हैं, तो एकत्रित हो जाते हैं और यह एकत्रित वसा ही आपका मोटापा है। जब शरीर में एक बार यह तत्त्व अपना भण्डार अधिक बनाने लगता है, तो इसे रोका तो जा सकता है, लेकिन इसको बिलकुल समाप्त नहीं किया जा सकता, अतः सभी नियमों का पालन बराबर करना पड़ेगा।

व्यायाम

— शारीरिक श्रम का कार्य कम करने वाले व्यक्तियों पर मोटापा जल्दी हावी होता है, क्योंकि भोजन को पचा कर जो शक्ति सभी अंगों को भिलानी चाहिए, वह किया पूर्ण रूप से सम्पन्न नहीं हो पाती और वसा का भण्डार बन जाता है, अतः नियमित व्यायाम आवश्यक है।

— व्यायाम में सबसे पहले प्रातः जल्दी उठ कर शौच इत्यादि से निपट कर बिना चाय इत्यादि लिये कम से कम दो-तीन किलोग्राम नेज-तेज ध्यान अवश्य करें।

— जो कार्य स्वर्य कर सकते हैं, वैसा शारीरिक कार्य स्वर्य करना चाहिए। एक ही स्थान पर ज्यादा देर बैठेन रहें। कार्यालय में भी थोड़ा-बहुत हाथ पैर तो हिला ही सकते हैं।

— कुछ खेल इत्यादि की आदत ढालें और उसे पूरे उत्साह से खेलें।

— योगासनों में मोटापा दूर करने हेतु पांच योगासन सबसे उत्तम हैं, ये हैं —

1. परिचमोत्तानासन 2. हलासन 3. उत्तानपादासन

4. चक्रासन 5. धनुषासन। इन्हें नियम पूर्वक अभ्यास से थोड़ा-थोड़ा कर बढ़ावें।

— और तो और व्यायाम के लिये घर में भी घृण सकते हैं और भोजन के बाद कम से कम आधा घण्डा तो ध्यान अवश्य ही करें।

उपचार

— कई व्यक्ति विशेष बीमारी से ग्रसित हो जाते हैं, और उनके लिये व्यायाम करना सम्भव नहीं होता, तो वे आहार, परिहार या विशेष ध्यान दें।

मानसिक तनाव के कारण भी मोटापा बढ़ता है तथा तनावग्रस्त व्यक्ति भोजन भी आवश्यकता से अधिक करता है, अतः ज्यान, साधना इत्यादि की आदत डालें। मस्तिष्क को चिन्ताओं से मुक्त करें, नित्य प्रति प्रभु चरणों का ध्यान करें। अपनी सारी चिन्ताएं उन्हें सौंप कर अपना कर्म करें, तो तनाव अपने आप समाप्त हो जायेगा।

— पेट व कमर का आकार कम करने के लिये एक बर्तन में पानी भर कर उसमें एक मुट्ठी अजवाइन और एक मुट्ठी नमक डाल कर उबालें, जब भाष पठने लगे, तो उस पर एक जली रख दें और इस जली पर दो छोटे नेपकीन ठंडे पानी से निचोड़ कर गीले ही रखें और इन नेपकीन को पेट पर रखें, जब नेपकीन ठंडे हो जायें, तो पुनः जली के ऊपर रख कर भाष लें और पुनः पेट पर रखें। प्रतिदिन 10 से 20 मिनट तक सेंकाई करने से पेट व कमर का आकार कम होता है।

— थाइरेडियम 30, ग्रफाइटिस 30, बूलेसिस 30, जगलन सिरेजिया 30 और आयोडियम 30 — ये पांचों 30

शक्ति के बराबर-बराबर मात्रा में ले कर एक साथ मिला कर शीशी में भर कर रख दें।

शाम को खाना खाने के एक घटे बाद (सोने से पूर्व) मुंह साफ कर जीध पर किसी ड्रापर से इस विश्रण की पांच बूंद टपका लें, इसके बाद दो घटे तक पानी आदि कुछ न लें। सुबह उठने समय बिना कुलला दातून किये, इस विश्रण की पांच बूंद जब्बान पर टपका दें, और फिर आधा चंदा सोते रहें, आधा चंदा बीतने पर ही उठ कर कुलला बोरेह करें या चाय आदि लें।

— नित्य भोजन में गाजर, पत्ता गोभी, खीरा-ककड़ी, बड़ी हरी शिमला मिर्च और सेलेमी इन पांचों चीजों को भी शामिल करें और ज्यादा से ज्यादा इन बस्तुओं से पेट भरें। सम्भव हो तो एक समय का खाना छोड़ दें।

— नित्य प्रातः शौच से निषट कर दो चम्मच शहद को एक गिलास पानी में मिला कर पियें, यह अचूक उपचार है।

उपरोक्त सभी विवरण लाभदायक हैं, लेकिन इन्हें अपनाना आपको है अपने व्यक्तिगत चिकित्सक से सलाह लेकर, नियमों का पूरा-पूरा पालन करें, और 30 दिन में चमकार देखें। आप अपने आपको पचासों तरह की बोमारियों से मुक्त पायेंगे। हर कार्य में आनन्द आयेगा और दूसरे भी आपके व्यक्तित्व को सराहेंगे।



शरीर इस है और व नहीं कि स्थापना अर्जन की सी



सीमा अ संज्ञा से इसमें

है मानव इहै क मम

सीन्दू है ..

स्थितस्थित साहू में सम्पाद्न होने वाली साधनाएं, जो पत्रिका के 'जुलाई' अंक में प्रकाशित हैं

6.9.77	मधुश्रवां गम्भर कन्दा	— जो साधक को उदाम योजन से समरोद कर उसे नीत-गृह्य संगीत त्र कला के क्षेत्र में अद्वितीय बना देती है।
15.9.97	नारायणाक्षी प्रयोग	— अनन्त साधनाओं सिद्धियों का निवेद है।
16.9.97	चन्द्र शहर	— किसी भी प्रकार की साधना सम्पन्न करने का श्रेष्ठतम पहुंच है।
किसी भी दिन	मदामृत्युज्य साधना	— भगवान शिव का प्रिय तथा गोपमुक्ति लेतु सर्वशेष साधना है।
किसी भी सप्तम्य	वैद्याहिक जीवन के लिए	— गृहस्थ जीवन में आनन्द, मधुरता, उल्लास, उमंग की प्राप्ति के लिए।
23 सितम्बर	मंत्र साधना के द्वारा	— भयंकर रोग पर भी विनाय प्राप्त कर सकते हैं।
किसी भी रविवार	एन्हर विशेष शिद्धियां	— शिद्धियों को जीवन में प्राप्त कर व्यक्ति शीघ्रता से आने पथ पर गतिशील ही जाता है।
लेखक के अनुसार	राधा के '६ प्रयोग	— राधा ने जिन प्रयोगों के साधन से कृष्ण को वशीभूत कर लिया था। एक ऐसी अद्वितीय मंत्र साधना जो मत्स्यिक रोग से मुक्त प्रदान करने में सक्षम है।
किसी भी रविवार	मानसिक रोगों का	— जगनहत चक्र जाग्रत करने की साधना
गुरुवार	इचोदी	— जोवन में पुत्र की ओर से दुःख, अधाव, कष्ट, बाधाएं, झूण रोग एवं परेशानियों की समाप्त करने की साधना है।
11.9.97	गणपति साधना	— जिससे जनम-जनन के पाप-ताप, झूण समाप्त हो जाते हैं।
17.9.97 से 1.10.97 तक	पितॄमुक्ति साधना	— जो आज के सुग में प्रश्नेक व्यक्ति के लिए पहलवपूर्ण है।
6.9.97	ऋग्य पंचमी साधना	— शनि का प्रभाव आप पर है तो उसे समाप्त करने के लिए इसे करिए।
शनिवार	शनि प्रयोग	— इस मिळ गुरुत्व में साधना सम्पन्न करना जरूरी ही नहीं आवश्यक भी है।
1.9.97	दोमवती अमावस्या	

— मंत्र-त्रै-चंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 ७० श्रृंग

शिव शरीर

शास्त्रों में बताया गया है, कि हमारा शरीर मात्र एक ही नहीं है, अपितु इसके अलावा कई शरीर इस शरीर के अन्दर समाहित हैं, एक शरीर के भीतर दूसरा शरीर, दूसरे के भीतर तीसरा शरीर है और जब तक इन सभी शरीरों की सीमाओं को हम पार नहीं कर सकें, तब तक ब्रह्माण्ड को स्पर्श नहीं किया जा सकता। अपने अन्दर ब्रह्माण्ड की स्थापना नहीं की जा सकती। जब अन्दर ब्रह्माण्ड की स्थापना हो जाती है, तब फिर बाहर देखने की कोई जल्दी ही नहीं होती। मगवान् श्रीकृष्ण ने अनुग को वक्तव्यल में ब्रह्माण्ड को दिखा कर उसी बात को सिद्ध किया था, कि वे इन सात शरीरों की सीमा से परे हैं और उनक अन्दर पूरा ब्रह्माण्ड व्याप्त है।

एक अद्भुत और तेजस्वी लेख आपके लिए . . .

Jह समस्त अंतरिक्ष अत्यन्त विस्तारित है . . . इसका कोई ओर-छोर नहीं . . . अनन्त-अनन्त ब्रह्माण्डों से निर्मित हुआ है यह, अतः इसकी सीमा अपार है . . . इसीलिए ऋषियों ने इसे महाशून्य की संज्ञा से विभूषित किया है . . . अनगिनत रहस्य छुपे हुए हैं इसमें . . .

और इन विभिन्न रहस्यों में से सबसे अधिक रहस्यमय है मानव शरीर। स्वयं कृष्ण ने गोता में कहा है —

इहैकस्थं जगत्कृतस्तं पश्याद्य सच्चाचरथ ।

मम देहे गुडोश यथान्यद्रभ्दुमिच्छसि ॥

जैसे यह ब्रह्माण्ड बाहर है, वैसे ही पूर्ण सौन्दर्य के साथ पूरी तरह से शरीर में भी स्थापित है . . . सब कुछ!

और ऐसा नहीं, कि यह वक्तव्य केवल कृष्ण ने ही

दिया हो, ऐसा नहीं कि केवल कृष्ण ने ही ऐसी आत कही हो, क्योंकि ठीक इसी आत की ओर जीसस भी इंगित करते हैं, जब वे कहते हैं —

"The kingdom of god is within you."

इसलिए बास्तविक रूप में जो कुछ भी बाहर दृष्टिगोचर होता है, वही हमारे शरीर में भी स्थापित है और अगर ब्रह्माण्ड अनन्त है, तो हमारे शरीर की सीमाएँ भी अनन्त हैं . . .

परन्तु आजकल लोग अत्यधिक 'धार्मिक' (धर्म संकीर्ण) हो गए हैं, और धर्म से उनका सहज-मतलब होता है 'सम्प्रदाय' जैसे हिन्दू, मुस्लिम, जैन, क्रिश्चियन . . . और वे जो सम्प्रदाय हैं, केवल बाहरी धर्मिक लोगों के हैं, आप जितने भी ऐसे धार्मिक लोगों को देखेंगे, उनकी आत्मा मरी हुई है, वह गहरी मच्छरी में है, वह अचेतन पड़ी हुई है . . .

तभी तो उनके लिए हिंसा, लूटपार, दंगे
एक सहज कार्य है... पर वास्तव में धर्म का अर्थ
होता है खुद को जानना, स्वयं के स्वभाव से अवगत
होना, जपने असली स्वभाव में जीना, क्योंकि आप
जब तक स्वयं को नहीं जानेंगे, तब तक कृष्ण,
महावीर, बुद्ध, क्राइस्ट को जानने से भी क्या हो
जाएगा? और ये नाम उन शिव-चुने लोगों के हैं,
जिन्होंने दूसरे को जानने की अपेक्षा स्वयं को ही
जाना था, जो अपने वास्तविक स्वभाव को जान
सके थे, उसमें स्थिर हो सके थे...

और यह स्थिरता तभी पाई जा सकती है,

जब व्यक्ति केवल बाहर न भटक कर अपने अन्दर उतरने की क्रिया करता है, अपनी ही खोज करने की दिशा में अग्रसर होता है, व्यक्ति जो यह भौतिक शरीर है, इसके अन्दर सात शरीर और है, जिन्हें हमने पहले कभी अनुभव नहीं किया और जिनका अनुभव ही स्थय को जान लेने की प्रक्रिया है . . .

और ठीक ऐसे ही सात शरीर हमारी देह के बाहर भी हैं, और इन दोनों में अन्नर यह है, कि जहाँ देह के अन्दर वाले शरीर आध्यात्मिक यात्रा के परिमुचक हैं, वहाँ बाह्य सात शरीर धौतिक यात्रा की सीढ़ियां हैं।

आज के युग में मानव के बाह्य शरीर ही अधिक जाग्रत रहते हैं, व्यांकि जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी सारी खोज बाहर की ही है, बाह्य है . . . उसे धन चाहिए, पद चाहिए, प्रतिष्ठा चाहिए, प्रेमिका चाहिए और चूंकि ये सब बाहरी भावनाएँ हैं, अतः मानव के बाह्य शरीर आन्तरिक शरीरों की अपेक्षा ज्यादा जाग्रत रहते हैं . . .

वास्तव में धर्म का अर्थ होता है खुद को जानना, स्वयं के स्वभाव से अवगत होना, अपने असली स्वभाव में जीना, क्योंकि आप जब तक स्वयं को नहीं जानेंगे, तब तक कृष्ण, महावीर, बुद्ध, इस्ट को जानने से भी क्या हो जाएगा?

फिर भी चाहे वह कितनी ही कोशिश कर ले, उसके ये शरीर भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाते और इसलिए वह जीवन से चाहे कितना ही प्राप्त कर ले, उसकी लिपा कभी समाप्त नहीं होती, उसकी दौड़ कभी खत्म नहीं होती। उसे और अधिक धन चाहिए, और बढ़ा पद चाहिए, और अधिक प्रतिष्ठा चाहिए तथा ऐसे ही वह अपना सारा जीवन एक मगरुष्णा में बिता देता है।

पर यह उसकी सबसे बड़ी वेवकूफी होती है, क्योंकि वह हवा में महल खड़ा करना चाहता है, क्योंकि वह एक-एक पत्ते को पानी देकर वश को लायादार करना चाहता है।

जब कोई इमारत बनती है, तो पहले नींव खोद कर उनको चुनियाद तैयार की जाती है और जितनी गहरी और मजबूत नींव होती है, उतनी ही मजबूत इमारत बनती है . . . अर्थात् धरती के अन्दर जितनी गहरी और मजबूत नींव होगी, उतनी ही मजबूत इमारत धरती के बाहर होगी।

इसी तरह व्यक्ति को छायादार वृक्ष प्राप्त से के लिए पत्ते-पत्ते में पानी देने की आवश्यकता नहीं है। इसकी अपेक्षा अगर जड़ों में ही पानी दे दिया य, तो वृक्ष स्वतः ही घना और छायादार हो जाएगा, तरकी जड़ें जितनी ही स्वस्य एवं गहरी होंगी, उतनी ऊँचाई वह वृक्ष प्राप्त करेगा। टीक इसी प्रकार कि बाहर की दौड़ में ही लगा हुआ है . . . जो भी आम करता है, बाह्य करता है, उसका सारा व्यक्तित्व नहीं है, ऊपरी है, सारहीन है . . . लेकिन वह हमेशा संतुष्ट ही रह जाता है, क्योंकि वह नींव को भूल ही नहीं है, जड़ों को भूल ही जाता है।

मूर्खता में वह यह भूल जाता है, कि बाहर जो कुछ भी है, मात्र अन्दर का प्रतिक्रिया

व्यक्ति वाहर की दौड़ में ही लगा हुआ है... जो भी काम करता है, बाह्य करता है, उसका सारा व्यक्तित्व बाह्य है, ऊपरी है, सारदीन है... लेकिन वह हमेशा असंतुष्ट ही रह जाता है, क्योंकि वह नीव को भूल ही जाता है, जड़ों को भूल ही जाता है...

है। यदि वह अपने आन्तरिक शरीरों को ही जाग्रत कर ले, तो पिर अनेक प्रतिबिम्ब जो बाहर दिखाई देते हैं, स्वतः ही सुदृढ़ हो जायेंगे . . .

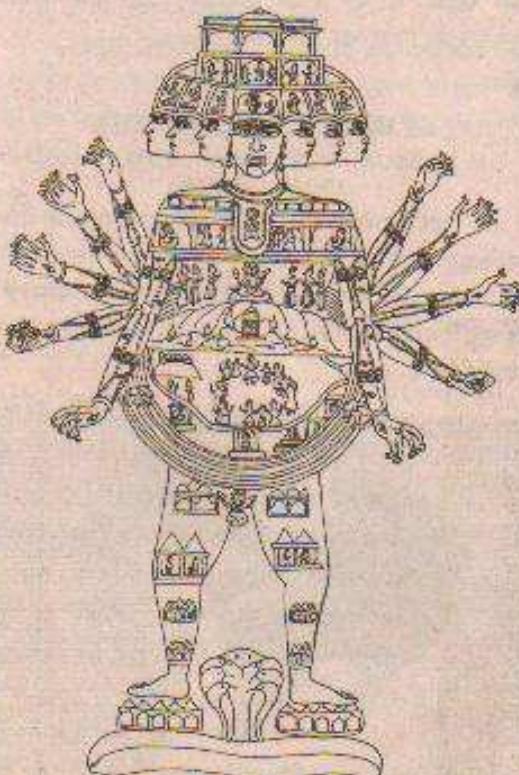
परं ये सात शरीर कौन से हैं और इन्हें किस प्रकार से जाग्रत किया जा सकता है?

वे सात शरीर और उनके रंग निम्न हैं —

भौतिक शरीर	Physical body & Violet
आकाश शरीर	Etheric body & Blue
सूक्ष्म शरीर	Astral body & yellow
मनस शरीर	Mental body & orange
आत्म शरीर	Spiritual body & white
ब्रह्म शरीर	Cosmic body & silvery
निर्वाण शरीर	Absolute body & golden

तो यह जो देह (Gross body) है, वह टीक मध्य में है और इसके अन्दर सात सूक्ष्म शरीर हैं, जो कि ऊपर उल्लेख किए जा चुके हैं और टीक इस शरीर के बाहर भी आधामण्डल की सात परतें हैं, जिनके रंग ऊपर बताए जा चुके हैं . . .

तो जो व्यक्ति भौतिकता में ज्यादा लिप्त है, या यों कहें, कि जो व्यक्ति भौतिक शरीर (physical body) में है, उसका



श्री मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997

आधामण्डल बैंगनी रंग लिए होंगा . . . अगर व्यक्ति मनस शरीर (mental body), में है, तो उसका रंग नारंगी होगा आदि।

व्यक्ति यदि चाहे तो इच्छानुसार अपने आन्तरिक शरीरों को जाग्रत कर सकता है और ऐसा करने से स्वतः ही उसका आधामण्डल पूर्ण विकसित हो जाएगा, उसे आध्यात्मिक उत्थान के साथ-साथ सांसारिक ऊँचाइयां भी प्राप्त हो सकेंगी . . . और यह सब सम्भव है 'ध्यानातीन साधना' से . . .

ध्यानातीन साधना का अर्थ है — अपने आन्तरिक शरीरों को झंकृत करने की साधना, उनको जाग्रत कर उनमें एक अद्वितीय संगीत पैदा करने की साधना, व्यक्ति आज का मानव एक पशु की तरह बन्धनग्रस्त जीवन जीते हुए अपने वास्तविक स्वरूप को ही भूल गया है, अपने वास्तविक परिचय एवं स्वभाव को उसने विस्मृत कर दिया है, वह भूल गया है, कि उसका उद्भव कहाँ से हुआ है, वह उस शक्ति की ही एक चिंगारी है, जिसे ब्रह्म कहते हैं।

इस साधना से एक-एक तह पर करता हुआ व्यक्ति अपने आन्तरिक शरीर में उत्तर सकता है, यह कोई बड़ी बात नहीं है और जैसे-जैसे वह अन्दर उतरेगा, वैसे-वैसे वह 'अवेयर' होता जाएगा, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेगा और आध्यात्म की सबसे बड़ी घटनाएं ध्यान एवं समाधि के रूप में स्वतः घट जाएंगी। यदि आन्तरिक शरीर विकसित एवं पूर्ण होंगे, तो स्वतः ही आधामण्डल भी पूर्ण विकसित हो जाएगा। फिर व्यक्ति के अन्दर अपूर्व सम्मोहन की स्थिति हो जाएगी, बुद्ध के समान ही उसकी वाणी अत्यन्त मधुर हो जाएगी और सारे शरीर से एक अद्भुत गंध निःसृत होने लगेगी, उसका सारा शरीर स्वस्थ, निरोग, दर्शनीय बन जाएगा, लोग उसके पास आने के लिए, उससे बात करने के लिए लालायित होंगे और हमेशा उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगेंगे, उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व अनिवार्य बन जाएगा।

ऐसे व्यक्ति को यश, सम्मान, धन, ऐश्वर्य सहज ही प्राप्त हो जाएगा। सांसारिक पराकाश्चा प्राप्त होने पर भी वह उसमें अलिप्त रहता है, भोगों को भोगता हुआ भी अद्भूत रहता है और सबसे बड़ी बात यह है, कि पहली बार संतुष्टि प्राप्त करता है, पहली बार असीम आनन्द का अनुभव करता है।

और केवल तब ही व्यक्ति सही अर्थों में मनुष्य बन पाता है, सही अर्थों में मानव कहला पाता है, वह वास्तव में मानव की श्रेणी से आगे बढ़कर भगवान की श्रेणी में आ जाता है . . . स्वयं भगवान हो जाता है।

आप
सम्बन्धों की नी
मध्य का परसा
सम्बन्धों के स
को ही अपनी-
बरबादी निवाह
इस सफर को
दोनों पर ही नि
किस प्रकार से
संचालन किए
का

उसे अस्तीक
जाता है या
अपने अहं व
अस्तीकारों
कि आप उ
चिससे वह
पाया है, तो

कर, जिस
बावें हाथ
हाथ से छ

राज

किसी च



माने या न माने

2. यह प्रयोग बदल सकता है आपके व्यक्तिगत को

व्यक्तिगत का निर्धारण व्यक्ति की प्रवृत्ति एवं उसके कार्यों के आधार पर ही होता है। एक व्याकुंठ में अच्छी और बुरी दोनों प्रवृत्तियां समान रूप से रहती हैं और समय पर परिवर्तित अनुसार उसकी अच्छी या बुरी प्रवृत्ति उस पर हावी हो जाती है। कुछ लोग सोचते होंगे, कि वे अपने व्यक्तिगत की सफल, स्पष्ट तथा स्वच्छ बनायें, परन्तु जैसे ही कोई विपरीत परिवर्तित आता है, उनके अन्दर को कुप्रवृत्ति उन पर हावी हो जाती है और उनके विचार, उनके कार्य, उनके सारे प्रयास को निष्कारन कर देते हैं। यदि आपके माध्यम भी ऐसा ही होता है, तो अपने व्यक्तिगत को निखारने के लिए यह अचूक और श्रेष्ठ प्रयोग समझ कीजिए।

सफेद रंग के वस्त्र पर कुंकुम से अपना नाम लिख कर उसमें 'लेश्या' को बाघ दें और उसे अनन्त दाहिने हाथ में लेकर निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करें—

मंत्र

ओं क्रों श्रों क्रों ज्रों छ्रों ज्रों स्वाहा

OM KROM BHROM KROM JROM CHHOM
JROM SWAHA

मंत्र जप के पश्चात् 'लेश्या' को अपने ललाट के मध्य, जहाँ आज्ञा नक्ष नित है, वहाँ स्पर्श करा कर पुनः पूजा स्थान में रख दें। यह प्रयोग आप किसी भी दिन से आरम्भ कर सकते हैं। यह सात दिवसीय प्रयोग है। सात दिन पश्चात् 'लेश्या' को नदी में प्रवाहित कर दें।

चौलाल - 72/-



ही जित्य-किल्लो ऐं क्रों मद-द्रवे ही
HREEM NITY - KLINNE AYEIM KROM
MAD - DRAVE HREEM

मंत्र जप ममात होने के पश्चात् 'चन्द्रमुक्ता' को अपने पूरे शरीर से स्पर्श करा लें। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें। ग्यारह दिन पश्चात् उसे नदी में प्रवाहित कर दें।

चौलाल - 60/-

३. अपने सहयोगी और आपने मध्य बहुतर सम्बन्ध निर्मित करें

आप और आपके सहयोगी के मध्य स्थापित होने वाली सम्बन्धों को नीच आप दोनों पर ही समाप्त रूप से निर्भर है। दोनों के मध्य का प्रसर स्नेह, सौहार्द और समझदारी इस नाजुक, कोमल सम्बन्धों के सफर को नित नृतनता का एहसास दिलाती है। दोनों को ही अपनी-अपनी जिम्मेदारियों पर गई होता है, कि वे इसका चखूबी निर्वाह कर रहे हैं। परन्तु इन सम्बन्धों में जहां सा भी टकराव इन सफर को बेमजा कर सकत है, नोरस जना सकत है। यह आप दोनों पर ही निर्भर करता है, कि आप इस कोमल सम्बन्ध-सेतु की किस प्रकार से सुरक्षा करते हैं और अपने जीवन के दैनिक क्रम का संचालन किस माध्यरूप से करते हैं।

कभी-कभी आप प्रयोग करते भी हैं तो आपका साथी उसे अस्वीकार कर देता है और आपको इच्छा मात्र इच्छा ही रह जाती है या कभी साधने वाला उपकी मनुहार करता है, तो आप अपने अहं को प्रधान कर देते हैं। परन्तु सम्बन्धों की दृढ़ता अहं या अस्वीकारोंकी पर ज्ञातारंत नहीं हो सकता। अतः आपको चाहिए, कि आप अपने मध्य के सम्बन्ध को एक ऐसा दृढ़ आधार दें, जिससे वह शाश्वत जन जाये। ऐसा सम्बन्ध यदि आपका नहीं बन पाया है, तो वह प्रयोग आपके लिए ही है —

शुक्रवार की रात्रि को अपने साथे एक अगरबती जला कर, जिस प्रकार से नमाज पढ़ी जाती है, उस मुद्रा में बैठ जायें तथा आये हाथ में 'छिया' लेकर, उसके साथ ही पुष्प रख कर दाहिने हाथ से ढक दें। फिर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें —

मंत्र

दंसी हंस हं वे ही
HANSI HANS HAM NEM HEEM

यह प्रयोग तीन दिन का है। तीन दिन बाद 'छिया' को किसी चौराहे पर रख दें।

चौकावर — 80/-



ॐ भूत-तत्-यं विज्ञान 'सितम्बर' 1997 ३७



५. बालों का सौन्दर्य श्री महावपूर्ण स्थान रखता है

सौन्दर्य में बालों का भी अपना अलग महत्व है। परन्तु आवश्यक है, कि बाल मजबूत, काले और घने हों। आज के प्रदूषित बातावरण में यह सामान्य रूप से यथाव नहीं हो पाता है अतः व्यक्ति अनेक कृत्रिम उपायों को अपनाता है, परन्तु प्रत्येक उपाय, जो है वह ऐसू हो या हर्बल ट्रीटमेंट हो, उसका कुछ न कुछ 'साइड इफेक्ट' होता ही है और कुछ समय पश्चात् वह रिसर्ट अन जाती है, कि बालों में आई सफेदी को छुपाने के लिए उन्हें 'डाई' करना पड़ता है, लेकिन यह सौन्दर्य तो नहीं है।

आप अपने बालों को वह प्राकृतिक सौन्दर्य प्रदान करें, जो आपके पूरे जीवन पर आपके साथ रहे। शुक्रवार के दिन किसी ताम्रपत्र में 'गाहूमेध' को स्थापित कर उस पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करें —

मंत्र

ॐ वले जल-सुजिनी नमः

OM KLEM JAN-RANJINEE NAMAH

मंत्र जप समाप्त होने पर उस जल से अपने बालों को धोयें। यह प्रयोग पांच दिन तक नियमित रूप से करें। प्रयोग समाप्त होने पर गाहूमेध को जल में विसर्जित कर दें।

चौकावर — 62/-

ब्रह्मनी की वाणी

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, लो, आ)

समय आपके लिए अनुकूल है। कारोबारी मामलों में उत्साह रहेगा तथा यात्रा योग बनेंगे। नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। बेरोजगार व्यक्ति भी इस अवसर का लाभ उठा सकते हैं। कुछ पुराने मित्र साथ छोड़ जायेंगे, साथ ही कुछ नवीन सम्पर्क भी बनेंगे, जो धार्यत्व में लाभप्रद सिद्ध होंगे। पारिवारिक मामलों की डेशन न करें तथा संतान पक्ष पर ध्यान दें। दाम्पत्य सुख में बढ़ि जाएगी। धार्मिक व पांगलिक गतिविधियों में उत्साह रहेगा। बाहन प्रयोग के समय तथा यात्रा में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य सामान्य ही रहेगा, फिर भी ध्यान देना आवश्यक होगा। अधिकारी वर्ग आपके अनुकूल रहेगा तथा राजकार्य आनन्दी से पूरे होंगे। इस माह 'लक्ष्मी कल्प प्रयोग' (दिसंबर-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 25 पर प्रकाशित) सम्प्रभ करें तथा आपनी जेव में 'पद्मावर' (न्यौत्तावर - 51/-) को रखें।

वृष (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

समय सामान्य है, बाद-विवाद की स्थिति में संयम बरतें। अधिकारीयों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। कारोबारी दृष्टि से समय उत्साह बढ़ाकर रहेगा तथा नये-पुराने अनुबंधों में लाभ की स्थिति बनेंगी। कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे समाजिक प्रतिष्ठा एवं मान-सम्पादन को ध्वनि पहुंचे। जीवनसाथी की इच्छाओं का सम्पादन करें। संतान पक्ष आपके अनुकूल रहेगा। अदालती विवादों में लापरवाही न बरतें। स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है। बाहन प्रयोग के समय व यात्रा में किसी प्रकार की कोई लापरवाही न बरतें। इस माह 'केतु साधना' (जून-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 38 पर प्रकाशित) आपके लिए अनुकूल होंगी। इसके साथ आप निष्प्रग्रामःकाल ग्रामह वार 'ॐ स्त्रा स्त्री स्त्री सः केतवे नषः' (Om Stram Strem Sah Ketave Namah) का जप करें।

मिथुन (का, की, कृ, घ, ड, छ, के, को, हा)

समय शीघ्र ही आपके अनुकूल होगा तथा आप बहुमुखी विकास को प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाये रखें तथा बाद-विवाद की स्थिति में संयम बरतें। अदालती वायलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। सम्बन्धियों का अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा। कारोबारी यात्रा के योग बनेंगे तथा कारोबारी विवर होने से प्रसन्नता होगी। कुछ मित्रों का साथ छूट सकता है व आपसी पनमुटाव ही सकता है। बेरोजगार व्यक्ति अभी संयम से फाल लें, नये कारोबार सम्बन्धी विचार अभी स्थगित रहें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें, चिकित्सा व्यय भार में बढ़ि होगी। वर में धार्यिक एवं पांगलिक कार्य सम्प्रभ होने के योग बनेंगे। इस यास की अनुकूल साधना 'धन्वननी साधना' (दिसंबर-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 76 पर प्रकाशित) है। 'अपराजिता गुटिका' (न्यौत्तावर - 100/-) को सदैव अपने पास रखें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, हू, डे, डो)

जदालली मुकुदमे आपके पक्ष में होंगे तथा अचल सम्पत्ति का विवरण होगा। यह माह साधनात्मक दृष्टि से भी अनुकूल एवं सफलता दायरक रहेगा। किसी के बहकावे में आ कर कोई कार्य न करें, बाद-विवाद से बचें और गहन सोच-विचार कर ही निर्णय लें। विश्वासघात की सम्भावनाएं प्रबल होंगी तथा आर्थिक धृति भी सम्भव हो सकती है। आपने आर्थिक व्यय को नियन्त्रित करें। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा। संतान पक्ष आपको गौरवनित करेगा। पांगलिक प्रसंगों के सम्बन्ध में यात्रा योग बनेंगे। इस माह आपका ल्यास्थ्य सामान्य ही रहेगा। नवीन बाहन के क्रय-विक्रय को स्थगित रखें। पूर्ण अनुकूलता हेतु 'शिव साधना' (फरवरी-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 17 पर प्रकाशित) सम्प्रभ करें व 'शिवार्णिका' (न्यौत्तावर - 42/-) को धारण करें।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, डा, टी, दू, टे)

यह समय आपके लिए शीघ्र सफलता प्रदान करने वाला है, अतः आप जो भी कार्य करना चाहते हैं, सम्भव करें। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति उत्साहित रहेंगे तथा नये रोजगार प्राप्त करेंगे। जो कार्य आपके हाथ में है, पहले उसे ही पूरा करें, थोड़े प्रतिश्रम के बाद लाभ होगा और आर्थिक स्थिति में अनुकूलता आयेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें, चिकित्सा व्यय भार में बढ़ि होगी। सदूक पर बाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। अदालती मामलों में शिखिलता न बरतें। तीर्थ स्थानों की यात्रा सम्भव हो सकती है, यात्रा सुखद एवं अनुकूल होगी। इस माह आपके लिए 'विश्वासिनी साधना' (अप्रैल-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 21 पर प्रकाशित) सम्प्रभ करना आर्थिक अनुकूल रहेगा। प्रत्येक कार्य से पूर्व हृष्ट मंत्र या 'गुरु मंत्र' का ग्यारह वार उच्चारण करें।

कन्या (टो, पा, पी, पू, घ, ण, ठ, पे, पो)

समाजिक प्रतिवाद में बढ़ि तो होंगी, लेकिन याद ही साद विरोधियों एवं उनके कुछ चकों का सम्पादन भी करना पड़ेगा। राज्यपक्ष की ओर से आपको बाधाओं का सम्पादन करना पड़ सकता है। पिछले कुछ समय में इसे आ रहे कार्यों की व्यवस्थित रूप देने में सफल होंगे, जिससे मन को शानि घिलेंगी। आय की दृष्टि से यह माह उल्लेखनीय तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन धनागम की विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित करने की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय ग्रवश्व है। स्वास्थ्य में सुधार होगा तथा मन में प्रसन्नता का सम्भाव होगा। परिवार के सदस्यों में आपसी मनमुटाव हो सकता है। किसी को हानि पहुंचाने वाला कोई भी कार्य न आए। इस यास की अनुकूल साधना 'छिङ्गमसना साधना' (जनवरी-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 11 पर प्रकाशित) होंगी। वर से बाहर जाते समय 'इषणा' (न्यौत्तावर - 30/-) को अपने साथ रखें।

'सिताम्बर' 1997

सूर्य	-
मंगल	-
बुध	-
गुरु	-
शुक्र	-
शनि	-
वर्षा	-
केतु	-

तुला (रा, नीचे)
मित्रों ने कुछ बाधाएं व्यवस्थीय कारोबारी यात्रा की ओर से शानु पक्ष गुप्त है। धन के फलप्रद एवं व्यस्तता रहें संख्या 28 (न्यौत्तावर वृश्चिक)

कारोबारी अड्डेवार में कारोबार व अनुकूल न खान-पान से नाप उठाने के योग से विश्वासित प्राप्त होगा (मई-94 नित्य पूर्व धनु (ये कबीं) ने रहना आर्थिक अनिवार्य का समन्वय के अंक निकला दधिय

आकाश दर्शन

सूर्य	- सिंह राशि में, 17 सितम्बर से कन्या राशि में।
मंगल	- तुला राशि में, 19 सितम्बर से वृश्चिक राशि में।
बुध	- सिंह राशि में, 28 सितम्बर से कन्या राशि में।
गुरु	- मकर राशि में।
शुक्र	- कन्या राशि में, 6 सितम्बर से तुला राशि में।
रवि	- शीन राशि में।
रहु	- सिंह राशि में।
भेद	- कुम्भ राशि में।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

निम्नों की ओर से पूर्ण सहयोग मिलेगा। राजपत्र की ओर से कुछ आधार आ सकती है, जो बाहर में स्वतः ही समाज ही जारीगी। अवसायी वर्ग के लिए वह माह श्रेष्ठ एवं अनुकूल सिद्ध होगा तथा कारोबारी आस्ताना बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन में घट्टरता रहेगी, किन्तु संतान की ओर से किञ्चित् खेद सम्भवित होगा। प्रतिष्ठा के प्रति सतर्क रहें, शत्रु पक्ष गुप्त रूप से प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचाने का प्रयास कर सकता है। धन के सञ्चय पर ध्यान दें तथा व्यवहार के व्यवहार से बचें। यात्राएँ फलप्रद एवं अनुकूल सिद्ध होंगी। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों में अस्ताना रहेगी। 'विश्वासु गच्छवं प्रयोग' (मार्च-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 28 पर प्रकाशित) को सम्पन्न करें। साथ ही 'इमृता फल' (नींदावर - 60/-) को अपने साथ रखें।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यु)

कारोबारी सफलता प्राप्त होगी तथा आने वाली अनावश्यक अड़चनों समाप्त होंगी। आपकी सुझवाला से लिये गए निर्णय आपके कारोबार की विस्तार प्रदान करें। सालेदारों पर अधिक विश्वास करना अनुकूल नहीं होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बनी रह सकती है, अतः खान-पान में संयम बरतें। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा। संतान की ओर से जनावर प्राप्त होगा। घर में धार्मिक एवं मांगलिक अनुष्ठान सम्पन्न होने के बायोग निर्धारित होंगे। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। विश्वासाधात के प्रति साथधारी बरतें। मिलों एवं साक्षात्कारों का सहयोग प्राप्त होगा। यात्रा योग सामान्य रहेगा। 'योद्धाश्री प्रिपुर सुदूरी साधना' (मई-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 55 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा नियम पूजन के बाद एक युग्म उत्तर कर अपने पास रखें।

घनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

कारोबारी मामलों में सतर्कता बरतें तथा यात्रा में जलद्याजी से बचें। नये एवं पुराने अनुबंधों पर लाभ होगा। निरन्तर कुछ नवीन बरते रहना आपको लाभ है, लेकिन ऐसी किसी भी योजना को अभी स्थगित रखें। इन्द्रज्यु आदि में सफलता के बायोग बरतें, लेकिन वरिष्ठप्र करना अनिवार्य होगा। आपसी सहयोग एवं सुझवाला से आने वाली अड़चनों का समाधान होगा। अदालती विवादों में विजय प्राप्त होगी तथा भवन निर्माण के बायोग बरतें। अनुकूलता हेतु 'भाग्योदय साधना' (जून-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 43 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा नियम घर से निकलने से पूर्व काली पिंच के पांच दाने अपने सिर पर से भुग्ना बर करकिण दिशा की ओर फेंकें।

मकर (भौ, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

आपके अधक प्रवासी से आपका रुक्क हुआ कार्य पूर्ण होगा। कारोबारी मामलों में उलझ कर परिवारिक मामलों की उपेक्षा होंगी, इससे घर में जनावर की स्थिति उत्तम होगी। जीवनसाथी से बैचारिकता बनाये रखें तथा सत्तान पक्ष की ओर पूर्ण रूप से ध्यान दें। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा तथा घर में धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों के बायोग बरतें। कारोबारी विस्तार को ले कर यात्रा योग बरतें। किसी से भी बाद-विवाद की स्थिति में संयम बरतें। अधिकारियों से मेल जान बना कर बरतें। जयोति-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। बाहन प्रयोग के सम्बद्ध जलद्याजी न करें तथा 'सीधाग्वप्रदा' (नींदावर - 60/-) धारण करें। इस माह आपके लिए 'महाकाली साधना' (अप्रैल-97 के अंक में पृष्ठ संख्या 45 पर प्रकाशित) अनुकूल रहेगी।

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

समाज में आपका मान-सम्मान होगा तथा सम्पद आने पर आपके सभी कार्य अनुकूल हो जायेंगे, अतः हात्त ही कर कोई कार्य बोल में बंद न करें। नये एवं पुराने अनुबंधों पर लाभ होगा। कारोबारी यात्रा सामान्य ही रहेगी। बहकावे में जो कर किसी को हाति रहुचाने का प्रयास न करें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी तथा सत्तान पक्ष अनुकूल सिद्ध होगा। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा, अतः खान-पान की ओर बिशेष ध्यान दें। नीकरी आदि में यदोन्नति एवं स्थानान्तरण के बायोग बरतें तथा अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। अदालती मुकदमों में विजय प्राप्त होगी, परन्तु नवीन मुकदमों से बचें। इस माह 'रक्षेष्वर प्रयोग' (जून-97 के अंक में पृष्ठ संख्या 19 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा सदैव 'रिष्टी' (नींदावर - 15/-) की अपने पास रखें।

भीन (दी, दू, थ, झ, अ, वे, दो, चा, ची)

नीकरी येशा व्यक्ति मानसिक तनाव में रहेंगे तथा स्थानान्तरण जैसी समस्याओं से भी दो-चार होना पड़ सकता है। किसी पर भी अधिक विश्वास करना नुकसानदायक होगा, विश्वास की स्थिति बन सकती है। आपके स्वयं के प्रयासों से ही अनुकूलता प्राप्त होगी। नवे कारीबार स्थापित करने की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं कहा जा सकता, अतः पुराने व्यवसायों में ही रुचि लें। कारोबारी यात्रा लाभप्रद एवं अनुकूल रिष्ट होगी। किसी बहकावे या प्रलोभन में जो कर जोड़ भी गलत कार्य न करें। रुक्क हुआ धन प्राप्त होने का अभी कोई बायोग नहीं है। व्यवहार के विवादों से बचें। 'शतपत्रा' (नींदावर - 20/-) की धारण करें तथा 'रतिप्रिया यक्षिणी साधना' (जून-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 34 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

1.9.97	भाद्रपद कुष्ण पक्ष 30	सोमवारी अपावस्था
4.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 02	हनितालिका तीज
5.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 03	विनायक चतुर्थी
6.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 04	ज्येष्ठ पंचमी
10.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 08	राधापूर्णी
13.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 11	पश्च एकादशी
16.9.97	भाद्रपद शुक्ल पक्ष 15	पूर्णिमा
17.9.97	अश्विन कृष्ण पक्ष 01	श्राद्ध उक्तारम्भ
25.9.97	अश्विन कृष्ण पक्ष 09	पातु नवमी
27.9.97	अश्विन कृष्ण पक्ष 11	इन्द्रिय एकादशी

भगवन् है, अनुकूलता: इन्द्रियों उसके

प्रश्नण्ड चण्डिका साहस्रा

आपके लिए तो आज के युग में यह ज़रूरी है ही

Hमता से व्याप्त रात्रि के उस निश्चय वातावरण में सिफर उसके मंत्र की ध्वनि ही गुजरित ही रही थी, पत्तों की खड़खड़ाहट से भेंग हो कर व्याप्त खामोशी और भयावह बन जाती थी। आकाश में चन्द्रमा भी इस दृश्य से सहम कर बादलों के बीच छुपा हुआ प्रतीत हो रहा था। यज्ञ कुण्ड की लपटें उसके सिर से भी ऊपर उठ रही थीं। अभ्यानन्द के चेहरे पर उत्तरते-चढ़ते भावों को देखकर प्रतीत ही रहा था, कि वह किसी गहन साधना को करने में तल्लीन है, जिसमें उसे आज सफलता प्राप्त करनी ही है।

अचानक देव गरजने लग गए, दिल दहलाने वाली गड़गड़ाहट ही रही थी, पर अभ्यानन्द तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में द्रुत गति से बढ़ रहा था। अचानक सब कुछ समाप्त हो गया। वह भयंकर गर्जना के साथ चीख उठा — 'यह चौथी बार है, कहां मेरी नूनता रह गई है। वह थके, निढ़ाल कदमों से बापस लौटा और कुछ दूर रित अपनी कुटिया में जा कर एक ओर बैठ गया। उसका हृदय खिल और दुखी हो गया था। वह समझ ही नहीं पा रहा था, कि पूर्णता के साथ सम्पूर्ण क्रमों को सम्पन्न करने के पश्चात भी किस विन्दु पर नूनता रह गई, जिस कारण आज उसे फिर असफलता का सामना करना पड़ा।

प्रातःकाल स्नान कर वह सन्ध्या वन्दन करने बैठा, तो रात्रि की असफलता से व्याप्त निराशा के कारण वह साधना क्रम बीच में ही छोड़ कर उठ गया और अपने गुरु के समक्ष पहुंचा, गुरुदेव के समक्ष उपस्थित होकर उनसे विसार पूर्वक रात्रि की साधना और उसके परिणाम के विषय में बताया। गुरुदेव उसकी बात का सुनकर चिन्तित हो गये।

फिर उससे उसकी साधना-पद्धति के बारे में पूछा, उसने स्पष्ट रूप से साधना-विधि के विषय में जबाया, तो गुरुदेव ने कहा— अभ्य! प्रथम तो तुम अपने मन में व्याप्त निराशा को निकाल दो। निराशा साधक को शत्रु है, यह साधक के मनोबल को खोखला बनाती है। दूसरी बात, कि तुम साधारण साधना सम्पन्न नहीं कर रहे हो। तुम भगवती छित्रमस्ता के ही स्वरूप, प्रश्नण्ड चण्डिका को सिद्ध कर रहे हो, इस साधना को सिद्ध करने का अर्थ है, कि तुम शिवलक को प्राप्त कर लोगे, अर्थात् तुम शक्ति, ऊर्जा, तीव्रता को धारण कर लोगे, शब्द से शिव बन जाओगे।

इस साधना से साधक न केवल शिवत्व ही प्राप्त करता है, अपितु संन्यासी होते हुए भी उसके पास धन का अक्षय छोत रहता है और विद्या, बुद्धि, बल, क्रियाशक्ति में वह

भगवत्
है, अनुकूलता:
इन्द्रियों
उसके

शिव समान
को युनः प
किये बौद्ध
प्रथम बार
इस बार पु
पूर्व एक
सम्बन्धित
इसमें सप

सम्पन्न क
असफल
श्रेष्ठ सा
गुरुदेव द

यह सा
जिसमें
जीवन
साधन
छित्रम
विपरी
सक्षम
हो जा
मन प

की र
करने

इस साधना की सम्पत्ति करने के पश्चात् साधक भगवती छिन्नमस्ता के और अधिक निकट आ जाता है, वह अजेय, विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने में सक्षम हो जाता है, उसके शत्रु स्वतः ही परास्त होना आरम्भ हो जाते हैं, समस्त इन्द्रियों उसके बश में ही जाती हैं और मन पर उसका नियन्त्रण स्थापित हो जाता है।

शिव समान बन जाता है। ऐसी आज्ञा है, कि तुम इस साधना को पुनः एक बार सम्पन्न करो, मन में इस बात का विचार किये बर्गम, कि तुम असफल हो चुके थे, जिस प्रकार से तुमने प्रथम बार उत्साह पूर्वक इसे सम्पन्न किया था, उसी प्रकार से इस बार पुनः सम्पन्न करो। इस बार, साधना आरम्भ करने से पूर्व एक बार युरु पूजन अवश्य कर लेना, मैं तुम्हें इससे सम्बन्धित दीक्षा भी प्रदान कर दे रहा हूँ, जिससे तुम शीघ्र ही इसमें सफलता प्राप्त कर सको।

अभ्यानन्द पुनः कूर्जीयुक्त होकर इस साधना को सम्पन्न करने के लिए आया। इस बार वह किसी भी प्रकार से असफल नहीं होना चाहता था, इसलिए गुरुदेव से पहले ही श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ मुहूर्त आदि ज्ञात कर आया था। साथ ही गुरुदेव द्वारा प्रदत्त दीक्षा से वह आत्म विश्वास से परिपूर्ण था।

उसे आज की रात्रि से ही साधना आरम्भ करनी थी, यह साधना उसके समक्ष एक चुनौती के रूप में खड़ी थी, जिसमें उसे सफल होकर दिखाना ही था, यह उसके साधनात्मक जीवन के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण साधना थी। इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात् साधक भगवती छिन्नमस्ता के और अधिक निकट आ जाता है, वह अजेय, विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने में सक्षम हो जाता है, उसके शत्रु स्वतः ही परास्त होना आरम्भ हो जाते हैं, समस्त इन्द्रियों उसके बश में ही जाती हैं और मन पर उसका नियन्त्रण स्थापित हो जाता है।

यह भगवती के प्रचण्ड स्वरूप को समाहित करने की साधना है। जो भगवती के प्रचण्ड स्वरूप को समाहित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, फिर वह शिव-सायुज्य हो

ॐ मंत्र-नंत्र-यंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 | 61 | ॐ

ही जाता है। भगवती के प्रचण्ड स्वरूप के समक्ष कोई टिक ही नहीं सकता, उसके साधकों में भी ऐसी ही प्रचण्डता आ जाती है, कि उसके समक्ष कोई शत्रु आ ही नहीं सकता।

अभ्यानन्द ऐसा ही रूप प्राप्त करना चाहता था, वह तत्र के क्षेत्र का श्रेष्ठतम् व्यक्तित्व बनना चाहता था। इसके लिए उसे प्रचण्ड चण्डिका की साधना करनी आवश्यक हो गई थी।

अभ्यानन्द पूरे दिन अन्य क्रिया-कलाओं के करने के साथ ही मानसिक रूप से निरन्तर उल्लासमय और भगवती के चिन्तन में लौन रहा।

सायंकाल होते ही उसने साधना से मम्बन्धित आवश्यक सामग्री एकत्रित की, जैसे-जैसे रात्रि एकाग्र होकर फैलती जा रही थी, वह अपनी साधना में लौन रहने के लिए एकाग्रचित होता जा रहा था।

रात्रि के समय स्नान कर ताल वस्त्र धारण किया, माथे पर त्रिपुण्ड लगा कर उसने अपने सामने साधना सामग्री को व्यवस्थित क्रम से रखा, अग्नि प्रज्ञालित की और साधना क्रम आरम्भ किया। उसके मन्त्र जप से उत्पन्न ध्वनि त्वातावरण की तरंगित कर रही थी। वायु भी स्तर्वर्ध रूप से उसे देखा ही थी। अग्नि की लप्टों में उसका चेहरा रक्तिम वर्ण का दिखाई दे रहा था, उसके नेत्रों में आज इस साधना में सफलता प्राप्त करने की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।

मन्त्र जप पूर्ण करते ही उसके समक्ष प्रचण्ड चण्डिका उपस्थित हुई, जो कोटि-कोटि सूर्य की प्रभा से युक्त थी और भयंकर जिहा से बार-बार अपने होठों को चाट रही थी। उनके केश विखंडे हुए थे, दाहिने हाथ में कंची थी, गले में आभूषण के स्थान पर मुण्डमाल्य था।

अभ्यानन्द आनन्द विभोर हो गया, उसने देवी से आशीर्वाद प्राप्त किया और प्रसन्नता से जूम उठा। उसके चेहरे से प्रसन्नित आभा से स्पष्ट हो रहा था, कि उसे यह साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुकी है।

इस साधना से पुत्रहीन को पुत्र की भी प्राप्ति होती है, थन के आकांक्षी को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, इससे साधक में वशीकरण की क्षमता भी उत्पन्न होती है तथा एक मूढ़व्यक्ति सर्वज्ञता और पांडित्य प्राप्त करने में समर्थ होता है।

साधना विद्यान

- इसमें आवश्यक सामग्री 'प्रचण्ड चण्डिका यंत्र' तथा 'काली हकीक माला' है।
- साधक इसे दिनांक ४.११.९७ को या किसी भी माह की अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न करें।
- लाल रंग का बस्त्र धारण करें तथा आसन भी लाल रंग का प्रयुक्त करें।
- लाल रंग का बस्त्र बाजोट पर बिछाकर उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बनायें, कमल के मध्य में 'हीं हीं फद्' कुंकुम से लिखें।
- उस पर प्रचण्ड चण्डिका यंत्र को स्थापित करें। यंत्र का मुँजन कुंकुम, पुष्प तथा अक्षत से करें।
- साधक निम्न मंत्र बोलकर तीन बार आचमन करें —

॥ श्री हीं हूं हूं ॥

Shreem Hreem Hoom

विनियोग

अस्य मंत्रस्य भैरव त्रिष्णि, सप्तरात् छन्दः,
छिन्नमस्ता देवी, हुं हुं बीजं स्वाहा शक्तिः
अभिष्टर्थं सिद्धये विनियोगः ।

उत्तरान

ना भी शुद्धारविदं तदुपरि कृमलं पण्डलं चण्ड-रश्मेः ।
संसारस्थैकसारं चिभुवनजननीं घर्षकामोदपादशाम् ॥
तस्मिन् मध्ये विक्षेप व्रित्य-तनु धरा छिन्नमस्तां प्रशस्ताम् ।
तां बद्दे ज्ञान रूपां निखिल भय द्वां योगिनीं योग मुद्राम् ॥

- इस साधना में दीपक लगाने की आवश्यकता नहीं है।
- काली हकीक माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें —

मंत्र

॥ श्री हीं हूं हूं एं वज्र वैद्योचनीये
श्री हीं हूं हूं एं एट च्याहू॥

SHREEM HREEM HOOM AYEIM
VAJRA VAIROCHANIYE

SHREEM HREEM HOOM AYEIM PHAT SWAHA

- मंत्र जप समाप्ति के बाद आसन की बायीं ओर तीन बार जल ढाल कर उठें।
- अगले दिन यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

व्योमावर - 240/-

सीरीज
प्रस्तुत कर रहे हैं

लक्ष्मी ग्राप्ति

दरिद्रता जीवन का अभिशाप है, जब कोई व्यक्ति ग्रहण के बोझ से दबा हो, वह अपने बच्चों की आवश्यकता पूरी नहीं कर पाता हो या पत्नी की इच्छाओं को पूर्णता नहीं दे पाता हो, तो वह अपने आपको बेबस और मृतवत ही समझता है, क्योंकि आज पूरे विश्व का ढांचा आर्थिक धरातल पर रिहत है, जीवन के सारे कार्य अर्थ के चारों ओर सिमट गए हैं, आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना जीवन की प्राथमिक आवश्यकता बन गई है।

परन्तु कई बार परिश्रम, भाग-दौड़ और कार्य करते हुए भी व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सफलता और सम्पत्ति नहीं प्राप्त कर पाता, अपने दुर्भाग्य को समाप्त नहीं कर पाता, ऐसी स्थिति में उक ही उपाय शेष रह जाता है, कि साधनाओं के माध्यम से आर्थिक पक्ष को पूर्णता दी जाय।

इस दृष्टि में वर्णित साधनाओं को सम्पन्न करने के उपरान्त दरिद्रता भिट्ठी है और धर में स्थायी रूप से लक्ष्मी निवास करने को बाध्य होती ही है। ये सभी साधनाएं गृहस्थ व्यक्तियों के लिए पूर्णतः अनुकूल और शीघ्र सफलता दायक हैं। वस्तुतः इस दृष्टि को प्राप्त कर इसमें वर्णित साधनाएं सम्पन्न करना जीवन का सौभाग्य है।

न्योमावर - 60/-

३१

रत्नवर्ष पर आप लोगों को तो गर्व है ही, मुझे भी गर्व है, क्योंकि मैं भारतवर्ष में पैदा हुआ हूं और फिर कभी जन्म लेने की ज़रूरत पड़े भी, हालांकि मैं सोचता हूं, कि बापिस दूसरी बार पृथ्वी लोक पर जन्म लेने की ज़रूरत तो पढ़ेगी नहीं मुझे, परन्तु पाटि लेने की ज़रूरत पड़े भी, तो भारतवर्ष में ही पैदा जन्म हो, इंश्वर से प्रार्थना यही है।

भारतवर्ष की सबसे बड़ी न्यूनता यह रही है, कि हम जीवित व्यक्तियों को पूजा नहीं करते, मुदों को पूजा करते हैं, यह हमारे जीवन को न्यूनता रही है। इसलिए हम जीवन में उत्तिनहीं कर पाये। क्या कारण था, कि आज से चीस हजार साल पहले विश्वास्त पैदा हुए, विश्वामित्र पैदा हुए, गर्ग हुए, अत्रि हुए, कणाद हुए, मुलस्त्य हुए और आज एक भी ऋषि पैदा नहीं हुआ? योंस हजार वर्षों में क्या कोई मां ऐसी हुई ही नहीं, जो इस प्रकार के ऋषि को पैदा कर सके? क्या मांएं बांझ हो गई? आखिर क्या हो गया?

इसलिए हो गया, कि हमने जीवित गुरुओं की पहचान छोड़ दी और परे हुए व्यक्तियों की पूजा शुरू कर दी। यदि हमारे सामने साक्षात् शंकर हों, तो हम उनकी पूजा नहीं करेंगे, अगर भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं बांसुरी ले कर और पीताम्बर धारण कर हमारे सामने आ जायें, तो हम कहेंगे, कि कितना अच्छा बहरुपिया है, बहुत सुन्दर, क्या नाटक किया है, कमाल का नाटक किया है, दो रूपये दे कर आप उसे विदा कर देंगे। बह कहेगा, कि मैं कृष्ण हूं, द्वापर वाला ही कृष्ण हूं और आपके सामने आया हूं, तो आप कहेंगे, कि तुम्हारे जैसे कृष्ण गतियों में बहुत धूमर है, हमें इतना मुख्य मत समझो।

लो, और कृष्ण बेचारा
आज आ कर करेगा भी क्या।
जीवित व्यक्तियों की पूजा तो हम
कर ही नहीं सकते, मगर मंदिर में
जा कर घटे-घड़ियाल जरूर
बजायेंगे,
कि हे
भगवान्! हे
कृष्ण! तुम
मेरी रक्षा
करना —
यह करेंगे
आप।
जब राम

जीवित रहे, तो उनको दुःख ही दुर्ख देते रहे, ज़ंगलों में भेजा, बनवास भेजा, पली चली गई, खुद तकलीफ़ माई और अयोध्यावासी बहुत प्रसन्न रहे। कृष्ण जीवित रहे, कृष्ण को दुःख देते रहे, हमारे पिताजी जिन्दा रहते हैं, तो हम उनको कोई सुख नहीं देते, उनका कहना भी नहीं मानते और जब वे मर जाते हैं, तो लकड़ियों के ऊपर असली धौं के दो पीछे ढालते हैं, कि अच्छी तरह से जल सकें और समाज में सम्मान मिल सकें, कि बहुत सपूत्र बेटा है, असली धौं के दो पीछे ढालें; अगर असली धौं खिलाता, तो आप मरता ही क्यों तुम्हारा खिलाया नहीं, तब्दी तो मरा वह, मगर हम ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि मृत व्यक्तियों की पूजा करते हैं हम।

यह इस देश का दुर्भाग्य रहा और आज भी वही खून हमारे शरीर में दौड़ने लग गया है और फिर अंगों ने आ कर तीन-चार शब्द हमारे मानस में भर दिये, जिनमें से पहला तो था अंधविश्वास, कि यह सब अंधविश्वास है। जब विश्वास होगा ही नहीं, तो 'अंध' शब्द कहां से आयेगा, पहले विश्वास होगा तब अंधविश्वास होगा।

एक तो उन्होंने अंधविश्वास समझा दिया, दूसरा उन्होंने यह समझा दिया, कि पूजा, गुरु वर्गे रह सब पाखण्ड हैं, दौंग हैं। इस समय पाखण्ड बढ़ा भी है, ऐसे गुरु भी बढ़े हैं, चालीस-पचास प्रतिशत ऐसे गुरु हुए होंगे, जो पाखण्डी हुए होंगे, इस देश में ऐसा हो रहा है, इस बात को मैं भी स्वीकार कर रहा हूं, सौं के सौं गुरु पाखण्डी नहीं हैं। पीतल के साथ असली सोने को हम पहिचानना भूल गए।

तीसरा शब्द उन्होंने हमें सिखाया — 'एडवान्स'.

लेकिन एडवान्स की परिभाषा हम भूल गए, बिल्कुल तंग कपड़े एहनना, कम से कम कपड़े महनना, डांस कर लेना,

शरब-सिरोटपी

लेना, पाटियों
में जाना
आदि सब
एडवान्स में
आते हैं।

शादी
करने
जाते हैं,
तो यह

हृदयीकृत ग्रौ

उद्धारणा सौभाग्य है,

जौं ऐसे शिष्य होते हैं



**चौबीस घंटे शब्द में
गुरु ही स्थापित हों,
गुह से यदि कुछ निकले,
तो केवल गुरु शब्द ही निकले
और जो भी
उसका खाली समय हो,
वह गुरु के प्रति समर्पित हो,
चाहे वह दो घंटा निले,
आधा घंटा निले,
पांच मिनट निले।**

पूछते हैं, कि लड़कों एडवान्स है, यह नहीं पूछते, कि कुशल गुहणी है या नहीं, रोटी बनानी आती है उसको या नहीं, बस यही पूछते हैं, कि एडवान्स तो है।

अंग्रेजों ने हमें तीन चीजें बतायीं और हन तीनों चीजों ने हमें बरबाद कर दिया, हम उस चीज को धो ही नहीं पा रहे हैं, आज तक नहीं धो पा रहे हैं, क्योंकि हमारे मानस में वह बात भर दी गई, कि भंत्र सब पाखण्ड है, शिव की पूजा पाखण्ड है, देवता पाखण्ड है, मंदिर पाखण्ड है, वे ब्राह्मण पाखण्ड हैं, ये गुरु पाखण्ड हैं, यह सब अंथविश्वास है, अंथविश्वास छोड़ो, मां-बाप को छोड़ो, ये दकियानूसी हैं, एडवान्स बनो।

शंकराचार्य एक अत्यन्त दिव्य विभूति पैदा हुए, इंग्लैण्ड-अमेरिका आदि में केवल एक ही व्यक्ति पैदा हुआ है, इसा मसीह, उसके अलावा कोई दूसरा पैदा ही नहीं हुआ और उसके अनुयायियों ने पूरे संसार में इसाई धर्म को फैला दिया; मुसलमानों में एक पैदा हुआ मुहम्मद साहब और आज विश्व के 56 देशों में मुसलमान धर्म फैला हुआ है, यह उनकी निष्ठा है, यह उनके धर्म का प्रचार है, अपने धर्म का प्रचार करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है।

उन्होंने इस बात को स्वीकार किया, कि हमें यह कार्य करना है और जब एक ही इसा मसीह पैदा हुए, उन्होंने उसे पूरे संसार में फैला दिया और हमारे यहां चालीस देवता पैदा हुए और उनको हमने भूला ही दिया, याद ही नहीं किया, इतने उच्चकोटि के विद्वान पैदा हुए, उनको हमने याद ही नहीं किया। यदि मैं आपको अंग्रेजी की दो लाइनें सुनाने को कहूं, तो आप तुरन्त सुन देंगे, परन्तु यदि मैं आपसे कहूं, कि आप 'शंकर भाष्य' की दो

लाइनें सुनाइये, तो आप कहेंगे कि यह शंकर भाष्य क्या चीज़ है? कहां मिलती है? यह हमारे किस काम की है?

आप कितने एडवान्स हैं, मैं तो आपको यह बता रहा हूं।

मगर शंकराचार्य जैसा विद्वान पैदा हुआ ही नहीं और न हो आने वाले दो हजार वर्षों में पैदा हो पायेगा और आप कल्पना करिये, कि उस अद्वितीय विभूति को उसके शिष्य ने ही कांच धोट कर, पिला कर मार दिया और मरते समय उनके शब्द थे - 'शिष्य शब्द अपने आपमें सबसे घटिया और गद्दा शब्द है।'

और उनका देहान्त हो गया, केदारनाथ की पहाड़ी पर देहान्त हुआ था उनका, जिन्होंने चार अपोतिर्मुखी की स्थापना की, 'शंकर भाष्य' जैसा ग्रंथ लिखा, ऐसी अद्वितीय विभूति, ऐसा अद्वितीय विद्वान पांच हजार वर्ष बाद भी पैदा नहीं हो सकता।

एक शिष्य ने इसलिए, कि मैं गुरु कब बनूंगा, यह जिन्दा रहेगा, तो मैं गुरु बन ही नहीं सकता, उस महाविभूति को समाप्त कर दिया और उनके मुंह से एक वाक्य निकला, कि शिष्य जो शब्द है, वह अपने आपमें घटिया, गद्दा और बेहूदा शब्द है।

और जिस दिन वह वाक्य मैंने पढ़ा, आज से पचपन साल पहले, तबसे मेरा निश्चय यही था, कि शंकराचार्य की इस उक्ति को मैं समाप्त कर दूंगा, झूटा सांचित कर दूंगा, उनकी मृत आत्मा को यह एहसास करा दूंगा, कि आपने शिष्य के लिए जो शब्द प्रयोग किये हैं, मैं इसको धो कर यह सिढ़ करके बताऊंगा, कि शिष्य भी उच्चकोटि के होते हैं, समर्पित होते हैं, अद्भुत होते

है और पूर्ण रूप
मृत आत्मा के प्र
हो सक
नहीं मिले, सिय
गेर तो एक ही त
शिष्य तो थे नहीं
परमहंस को इत
आज रामकृष्ण
बजह से ही है,
एक शिष्य था
में पहुंचा दिया
एक
कौन? शिष्य
अपने अंतिम
लेवि
शिष्य के बारे
है: उन्होंने क
पूर्ण
व्याप
तरवै
शिव
मर
जो भावना
जायें, सिर्फ
खुरे उत्तरने
गीदहों का इ
तो चार भिले
शिष्य की
कसौरियों
उसकी पांच
प
में गुरु का ह
हो सकती है
कर रखा है
जी को भी
रखा है, यह
हृदय तो, व
कहा, कि

है और पूर्ण रूप से गुरु के प्रति नमन करने योग्य होते हैं। उस जूता आत्मा के प्रति वदि श्रद्धांजलि होंगी मेरी, तो यही होंगी।

हो सकता है, कि चीम शिष्य नहीं मिलें, पचास शिष्य नहीं मिलें, सिवार-गीदड़ तो मिल जाएंगे जंगलों में दो हजार, गेर तो एक ही मिलेगा; रामकृष्ण परमहंस के कोई पांच हजार शिष्य तो थे नहीं, एक ही था विवेकानन्द और उसने रामकृष्ण परमहंस को इतनी ऊँचाई पर पहुंचा दिया, कि यदि संसार में आज-रामकृष्ण परमहंस का नाम है, तो केवल विवेकानन्द की बजह से ही है, केवल एक शिष्य की बजह से; नुद का केवल एक शिष्य था — आनन्द और उसने उनको पूरे छब्बीस देशों में पहुंचा दिया — चीन में, जापान में।

एक भी शिष्य है, तो बहुत बड़ी बात है, पर शिष्य कौन? शिष्य किसको कहें? शिष्य के बारे में शंकराचार्य को अपने अंतिम समय में कितना दुःख हुआ होगा?

लेकिन किसी समय उन्होंने एक श्लोक कहा था शिष्य के बारे में, शंकर भाष्य के 30वें अध्याय में यह श्लोक है। उन्होंने कहा —

पूर्णौ सदां वै शिष्यत्वं स्तेहं,
च्याघो वदार्थं भवतं स चिन्तयं।
नरवै वदां पूर्णं मदैव चिन्तयं;
शिष्यत्वं देहं देव्यं सदैव ॥

मरने से दस साल पहले उनके मानस में शिष्य के प्रति जो भावना थी, वह यह थी, कि मुझे केवल आठ शिष्य मिल जायें, सिफं आठ शिष्य चाहिए, मगर शिष्यता को कसौटी पर खेर उतरने वाले हों, शिष्य होने चाहिए, हुण्ड नहीं चाहिए, गीदड़ों का शूण्ड दो हजार भी मेरे लिए बेकार हैं, आठ नहीं मिलें तो चार मिलें, चार नहीं मिलें तो दो मिलें, मगर शिष्य मिलें और शिष्य की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा, कि जो पांच कसौटियों पर खरा उतरता है, वह शिष्य कहलाता है। उन्होंने उसको पांच कसौटियां रखी, पांच उसके नियम रखे।

पहला यह, कि अगर शिष्य है, तो फिर उसके हृदय में गुरु का ही स्थापन होगा और एक हृदय में एक ही चीज स्थापित हो सकती है, चार चोरों स्थापित नहीं हो सकती, गुरु को भी स्थापित कर रखा है, यहां राम जी को भी स्थापित कर रखा है, यहां जगदम्बा ही स्थापित कर रखा है, यहां लक्ष्मी को स्थापित कर रखा है, पूरा भरा हुआ है तुम्हारा हृदय तो, अब गुरु बेचारे को तो बैठने की जगह भी नहीं है। उन्होंने कहा, कि यदि आपके गुरु हैं,

‘जे तू सेवे मूल को, फूले फले अधार्,
पत्तों को पानी देने से पेड़ हरा-भरा नहीं हो सकता, यदि

जड़ में पानी देंगे, तो पूरा पेड़ अपने आप हरा-भरा हो जायेगा।

तो पहली तो कसौटी उन्होंने यही रखी, कि चौबीम घंटे गुरु ही स्थापित हों, मुंह से यदि कुछ निकले, तो केवल गुरु शब्द ही निकले और जो भी उसका खाली समय हो, जैसे भोजन करना है, स्नान करना है, नौकरी करना है, व्यापार करना है, ये सब कार्य हैं, इनके अलावा जितना भी समय हो, वह गुरु के प्रति समर्पित हो, चाहे वह दो घंटा मिले, आधा घंटा मिले, पांच मिनट मिले।

गुरु के लिए क्या समर्पित हो?

तो दूसरा नियम उन्होंने रखा, कि गुरु की जो इच्छा है, उस इच्छा में वह सहायक बने, यह उन्होंने दूसरी बात कही। पहला नियम तो यह रखा, कि हृदय में केवल गुरु स्थापित हों और मुंह से गुरु शब्द ही निकले, गुरु हैं तो फिर जगदम्बा भी है, गुरु हैं तो फिर शिव भी हैं, हम खुद कह रहे हैं, कि 'गुरुबंहा गुरुविष्णु गुरुदेवी महेश्वरः, गुरु साक्षात् परब्रह्म...' हम बोल तो यह रहे हैं और फिर राम-राम, राम-राम, हनुमान जी-हनुमान जी, हनुमान जी-हनुमान जी, अब हनुमान जी दौँड़ कर आवें, तो उससे महले शिव जी-शिव जी, शिव जी-शिव जी, जब तक शिव जी आवें, तब तक हे लक्ष्मी माता- हे लक्ष्मी माता, शिव जी वापिस चले जाते हैं।

हमारे यहां तो सेकड़ों हैं, किन-किन को बुलायेंगे, उनके तो बस एक ईसा मसीह हैं — हे चौश, मेरे पाप क्षमा कर देना, ईसा मसीह आ जाते हैं और उनके पाप क्षमा कर देते हैं। हमारे यहां तो ज्योही हनुमान जी को याद किया, हनुमान जी ने गदा ली, आधे गदे में आये, तभी हम हे जगदम्बा। तू आना, हे जगदम्बा! तू आना, हनुमान जी कहते हैं, कि मुझे तो भूल गए, छोड़ी, जगदम्बा को जाने दो; जब तक जगदम्बा तैवार हो कर तलबार आदि ले कर आई, तभी एकदम से कह दिया, कि हे शिव जी! तू त्रिशूल ले कर आ, तो जगदम्बा वापिस चली गई। हमारे यहां तो खेल यही होता रहता है, क्योंकि बहुत अन्दर बिठा रखे हैं न।

शंकराचार्य ने कहा, कि केवल गुरु स्थापित हों और दूसरा नियम यह रखा, कि गुरु के कार्य के प्रति आपके जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित हो। आखिर गुरु किसी न किसी उद्देश्य के लिए इस पृथ्वी पर आया होगा, मगर वह गुरु, जो लालची हो, पाखण्डी हो, छोंगी हो, वह गुरु नहीं हो सकता; जो आपसे याचना करे, वह गुरु नहीं हो सकता, भीख आपसे नहीं मांगे जो। हां, यदि मुझे माइक की जरूरत है, तो मैं कोई नौकरी नहीं करता नहीं, व्यापार तो करता नहीं, मैं तो अपने शिष्य को कहूँगा, कि तुम समर्थ हो, एक माइक की जरूरत है, सेकड़ों शिष्यों के मुनने

के लिए, तुम एक माइक ला कर दे दो, यह माइक मैं अपनी पत्नी के लिए तो प्रयोग कर नहीं रहा हूँ, न अपने बेटों के लिए कर रहा हूँ और मैं उसको कहूँगा, जो सक्षम होगा, कि यह पांच सौ रुपये खर्च कर सकता है। मैं यह नहीं कहूँगा, कि पांच सौ रुपये भेट कर दो, यही कहूँगा कि एक माइक भेट कर दो, जिससे और भी लोग लाभ उठा सकें।

“कैसे गुरु सेवा करें, मैं तो यह बता रहा हूँ। यदि मुझे प्यास लगी हुई और आप गुलाब जामुन ला कर मेरे सामने रख दें, कि “गुरु जी गुलाब जामुन खाइये, वे मीठे हैं, बहुत मंहगे हैं, 80 रुपये किलो हैं।”

“प्यास से गला सूखा जा रहा है, तुम . . .”

“नहीं गुरु जी! पानी तो कोई भी पिला देगा, आप गुलाब जामुन खाइये, मैं खुद समर्थ हूँ . . .”

यह गुरु सेवा नहीं है। हम किस प्रकार से प्रत्येक क्षण को गुरु के लिए व्यतीत करें, मन में हर क्षण यह रहे, कि गुरु को इस समय इस चीज की जरूरत होगी, इस कार्य से गुरु को प्रसन्नता प्राप्त होगी . . .

मैं यह सब इसलिए नहीं बोल रहा हूँ, कि मैं गुरु हूँ, मैं तो शंकरचार्य के श्लोक का अर्थ समझा रहा हूँ।

तीसरी उसने कसौटी रखी, कि शिष्य छाया की तरह गुरु के साथ मैं रहे, जैसे छाया व्यक्ति से अलग हो ही नहीं सकती, आप दो कदम चलेंगे, छाया आपके साथ चलेंगी, शिष्य भी छाया को तरह हो, गुरु जब भी आवाज दे, तो फिर सोचे नहीं, कि मेरी पत्नी कहा है, मेरा बेटा कहां है; यदि चौबीस घंटे, अङ्गतालीस घंटे नहीं पिलें, तो मन में एक बेवेंटी सी हो, कि गुरुजी यहां हैं और उनके दर्शन किये नहीं, तो चौबीस घंटे जिन्दा कैसे रह गए हम? अङ्गतालीस घंटे सांस कैसे ले ली हमने? मैं इतना मुर्दा कैसे हो गया, कि उनके दर्शन ही नहीं किये?

अन्दर एक तड़प पैदा हो जाय, तड़प पैदा होगी, तो गुरु का कार्य हो पायेगा। शंकरचार्य ने उनको यही कहा था, कि बौद्ध धर्म को मुझे खत्म करना है, उनसे कोई भी ख नहीं मांगी थी, यह कार्य मेरे गुरु ने मुझे मांगा है, कि यहां से बौद्ध धर्म खत्म हो जाना चाहिए, यहां हिन्दू धर्म की स्थापना होनी चाहिए और तुम इसके लिए मेरे सहायक बनो और यहां बुद्ध पैदा हुए, विहार में, यहां बौद्ध पनपा, अशोक, चन्द्रगुप्त आदि सभी बौद्ध धर्म को मानने वाले थे और भारतवर्ष में बौद्ध धर्म इस समय है ही नहीं, चीज में है, जापान में है, छब्बीस देशों में है, यहां पर शंकरचार्य ने इसे पनपने नहीं दिया, गोविन्दपादाचार्य के एक शिष्य ने, एक

व्यक्तित्व ने कितना कार्य कर दिया।

शिष्य के मन में तड़प होनी चाहिए, एक बेचैनी होना चाहिए, कि मैं आगे बढ़ कर, मांग कर गुरु सेवा करूँ, कि गुरु जी! मैं आपके लिए करूँ, कैसे करूँ? मैं आपके लिए कैसे उपयोगी हो सकता हूँ?



गुरु की रक्षा के लिए,

गुरु की सेवा के लिए,

गुरु के दर्द को बांटने के लिए,

गुरु की तकलीफ को दूर करने के लिए, जो भी थे आज

दे दें।

मुझे याद है,

संन्यास

जीवन में एक बार एक

शिष्य था, करोब

तेहस चौबीस माल का और दो ढाई

साल से मेरे पांछे पढ़ा हुआ था, कि

मुझे शिष्य बना लें।

उस समय बढ़ा

‘क्रोज’ था,

निखिलेश्वरनन्द

का शिष्य

बन जाना

अपने आपमें

बहुत बड़ी

घटना मानी

जाती थी, बड़ा एक

गौरव था, ऊंचे से ऊंचा गुरु भी

यही चाहता था, कि निखिलेश्वरनन्द का मैं शिष्य बन जाऊँ

और वे इसके लिए प्रार्थना करते भी थे। मैं ऐसे शिष्य ज्यादा

बनाना भी नहीं था, कि फालतू भेड़ों को इकट्ठा करने से क्या

बायदा होगा, शेर दो-चार होने, तो भी बहुत होंगे। फिर भी थोड़ी करके पांच सात सौ शेर इकट्ठे तो हो ही गए थे।

बदीनाथ के आगे एक पहाड़ है — नर-नारायण, उसी नर-नारायण पर्वत पर

मैं बैठ हुआ था,

दिन का
लगभग
नौ-दस
वर्षों का
समय
था। वह
दो-छाइ
साल से कह

रहा था, कि दीक्षा
दें दीजिए और मैंने भी उससे
कहा था, कि कभी परीक्षा ले कर

देख लूंगा, यदि खार उत्तरा,
तो दीक्षा दे दूंगा।

उसे देख कर मैंने

यो ही
कहा — ठीक है मैं आज तुझे
दीक्षा दे देता हूं, बस वही
चाहते हो : —

उसने कहा — हां,
बस इतना ही चाहता
हूं। आज मेरे
जीवन का

स्वर्णिम

दिन है,

मैं छाइ

साल से

इसी दिन

की प्रतीक्षा

में आपके

पीछे-पीछे धूम रहा था, कि

आपका शिष्य कहलाकूँ।

मैंने कहा — तो ठीक है, तू इस पहाड़ से कूद जा।

मैंने तो कहा मजाक में और आधा सेकेण्ड भी नहीं

हुआ, कि वह पहाड़ से कूद गया और नीचे गहरी खाई थी। मैंने शिष्यों को दीक्षा दी, शिष्य थे दो सौ-छाइ सौ, पास में बैठे थे, सब दीक्षा, मैं भी दीक्षा, उबड़-खाबड़ पहाड़ था, जगह-जगह खरांचे आ गई थीं, मरा तो नहीं था, मंत्रों से उसके जख्मों को ठीक किया, उसको दीक्षा दी और आज वह हिमालय में एक श्रेष्ठ गुरु के रूप में जाना जाता है, जिसको छाई माल मैंने दीक्षा नहीं दी और आपको मैं दो मिनट बाद ही दीक्षा दे देता हूं, वह छाई साल तक मेरे पीछे थकता रहा।

उसके बाद करीब छः— सात साल मेरे पास रहा वह, फिर मैंने संन्यास छोड़ दिया और गुहस्थ जीवन में आ गया। वह मेरी सबसे खराब घड़ी थी, जब मैं गुहस्थ में बापस आया, शायद राहु की दशा रही होगी या मंगल की दशा रही होगी, नहीं तो मैं बहुत सुखी था और आज भी आप लोग यदि मुझे छोड़ दें, तो मैं तो शायद जोधपुर की ओर मुँह ही नहीं करूँ, सीधा बहाँ से अपने स्थान को ओर चला जाऊँ। वह जीवन एक आनन्ददायक जीवन है।

ऐसा मुझे कभी याद नहीं आया, कि मेरे सोने से पहले वह कभी सोता हो; ऐसा कभी नहीं हुआ, कि मैं उठ गया हूं और वह उठ करके गर्म पानी तैयार कर खड़ा नहीं रहा हो, ऐसा कभी हुआ ही नहीं, कि वह एक शर्ण भी मुझसे अलग हुआ हो और उस समय भी

शत्रु तो कहड़ थे, एक साथ दूसरे से लड़ता ही रहता है, कि इसके इन्हें अधिक शिष्य नहीं हैं, इन्होंने द्रुष्ट तो होकर मैं होता ही है, इस मसीह को भी मूली पर लटकाया ही गया, भगवान् बुद्ध को भी कीले ठोक दी गई, दुश्मन तो उस समय भी रहे ही होंगे न।

पर वह छाया की तरह साथ रहता, अकेले जूँझ जाता बीम-पचास लोगों से, बस एक गुरु का इशारा होना चाहिए, देखा जायेगा फिर, मौत से ज्यादा सजा कोई है ही नहीं, या तो मर ही जाऊँगा या कार्य सम्पन्न कर ही लूंगा। प्रबल आत्मोसंग की भावना उसके अन्दर थी।

चौथा शंकराचार्य ने कहा, कि वह पूर्ण निष्ठा, पूर्ण विश्वास के बल गुरु में ही रखे और अपना सब कुछ न्यौशावर कर दे। यहाँ 'सब कुछ' शब्द इसलिए लगाया होगा उन्होंने, कि संन्यासी लोग थे और उनके पास कुछ था ही नहीं। यदि मैं आपसे कहूँ, कि आप सब कुछ न्यौशावर कर दे, तो इसका अर्थ यह नहीं है, कि आप अपना मकान मेरे नाम लिख दें, अपनी सम्पत्ति मुझे दे दें, गहने-जेवर मुझे दे जायें, वह सर्वस्व की परिभाषा नहीं है।

सर्वस्व की परिभाषा यह है, कि आपके पास जो कुछ भी है, आप यह मान कर चलें, कि सब कुछ गुरुजी का है, सारी सम्पत्ति गुरुजी की है, मैं केवल 'ट्रस्टी' हूँ और इसकी निगरानी कर रहा हूँ, बस; यह शरीर है, यह भी गुरुजी का है, मैं ट्रस्टी की तरह इसकी निगरानी कर रहा हूँ।

पांचवा शंकराचार्य ने कहा, कि यदि शिष्य को दीक्षा दें और यदि वह पूर्ण रूप से आपमें समाहित है, तो आप भी पूर्ण रूप से उसमें समाहित हो जायें फिर। यहाँ उसने गुरु को लिए भी कहा है। चार में तो उसने शिष्य के लिए आज्ञा दी, फिर गुरु क्या करेगा शिष्य के लिए?

यदि शिष्य पूर्ण रूप से समाहित है गुरु के प्रति, तो गुरु भी पूर्ण रूप से उसमें समाहित हो जाये और इतनी कंचाई पर उसको डाल दे, जितनी ऊँचाई पर सूर्य उठ हुआ है, उससे भी कंचाई पर उठा दे, तब गुरु अपने आपमें पूर्ण कहलायेगा। शंकराचार्य ने चार बातें शिष्य के लिए तो कही ही, पांचवीं बात गुरु के लिए भी कही, कि यदि वह पूर्ण रूप से समर्पित है गुरु के प्रति, जो इन चारों बातों का पालन करता हो, जो कहता हो, कि गुरुजी। मैं आपके यहाँ रहूँगा, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा, आप मुझे काम सौंप कर देखिये। गुरु परीक्षा लेगा, वह किसी भी प्रकार से परीक्षा ले सकता है, कि अन्ना चत्तो तुम पांच दिन घर नहीं जाओगे, तुम दो दिन तक जंगल में बैठे रहोगे।

मगर इतनी हिम्मत करना और दृढ़ निश्चय करना बहुत कठिन होता है, जब मन में एक ही तड़प, एक ही बेतैनी, एक ही चिन्नन, एक ही भावना होगी, कि मैं गुरु के लिए बना हूँ और शंकराचार्य की मृत्यु के समय उनके होठों से जो शब्द निकले हैं, जो आह निकली है, वह कैसे मैं अनुकूल बना सकूँ।

ऐसे शिष्य कहाँ से प्राप्त करूँगा मैं, पैदा तो करूँगा नहीं और यदि बेटा पैदा करूँ भी, तो बेटों से क्या होता है, शंकराचार्य के कौन से बेटे थे, क्या वे कंचे नहीं बन गए? बेटों के मन में तो फिर भी लालच आ सकता है, कि यह सम्पत्ति मुझे मिल जाये, वह सम्पत्ति उसे मिले, शिष्य को तो ऐसा कोई लालच होता ही नहीं।

मैं मोहग्रस्त हूँ भी नहीं, धूतराष्ट्र तो हूँ नहीं, मैं तो इस शंकराचार्य दिवस पर आप लोगों से यह चाहता हूँ, शंकराचार्य दिवस इसलिए कि आज के दिन शंकराचार्य को गोविन्दपादाचार्य ने दीक्षा दी थी, शंकराचार्य को गोविन्दपादाचार्य ने दीक्षा देने से पहले कहा था, कि मैं तुम्हें दीक्षा देने के लिए तैयार हूँ, मगर तुम्हें एक काम करना पड़ेगा, तुम छः महीने मेरे बहाँ रहोगे, अभी तक तो तुम रहते आये, मगर अब छः महीने और रहोगे और

केवल मेरी लंगोट थीं आगे, मेरे कपड़े थीं आगे, मेरे बर्तन था जाने, मेरे आश्रम की गोवर से लिपाई करोगे और चौबीसों बंटे मुझमें अनुरक्त रहोगे, तब छठे महीने मैं सोचूँगा, कि तुम्हें दीक्षा दूँ या नहीं हूँ . . . और शंकराचार्य ने ऐसा किया।

जब छः महीने बाद गोविन्दपादाचार्य ने देखा, कि शंकर कसौटियों पर खरा है, तो फिर आज के दिन दीक्षा दी थी और कहा था, कि चौदू धर्म तुम्हें समाप्त करना है।

मैं यह नहीं कह सकता, कि ऐसे शिष्य मिल सकते हैं या नहीं मिल सकते हैं, मिल सकते हैं, क्योंकि विश्वास मैंने खोया नहीं है और मेरा उद्देश्य यही है, कि शंकराचार्य की उस पंक्ति को मैं गलत सांत्रित कर दूँ, उनकी मृत आत्मा के प्रति यही मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी, एक दिव्यांजलि होगी, कि उनके होठों पर जो कङ्कालहट पैदा हुई थी शिष्य के प्रति, कि शिष्य से ज्यादा गंदा और घटिया शब्द कोई है ही नहीं, मैं उस कलंक को धोना चाहता हूँ, मैं बताना चाहता हूँ, कि उच्चकोटि के शिष्य मिल सकते हैं।

आप जो अपने आपको शिष्य कह रहे हैं, इन कसौटियों पर आप मात्र पांच प्रतिशत सही उत्तर रहे हैं। यदि आप ऐसा करें, तो गुरु तो आपको सूर्य से भी इतनी अधिक ऊँचाई पर उठ देगा, कि सूर्य को सारा संसार पहचानता है, आपको भी पूरा संसार पहचानेगा, यह गुरु की दृष्टी होगी, यह उनका धर्म होगा, यह उनका कर्तव्य होगा।

मैं भी आपसे यही इच्छा रखता हूँ, कि आपमें से एक, दो, चार, छः, कुछ तो शिष्य निकलें, निकले और अपनी पूर्ण क्षमता के साथ निकलें। शावद कोई न कोई दिन ऐसा होगा अवश्य, कि ऐसे शिष्य मुझे मिलेंगे और जिस दिन मिलेंगे, उस दिन मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझूँगा, वह दिन मेरा स्वर्णोक्तरों में लिखा जायेगा।

आप ऐसे बनें, मैं आप सभी को ऐसा ही आशोर्वाद प्रदान कर रहा हूँ, कि आप पूर्ण बन सकें और जीवित गुरु की पहिचान कर सकें और मृत व्यक्तियों की चूजा करने की जो गलत प्रवृत्ति हमारे मन में आ गई है, वह समाप्त हो सके, अपने आपको समर्पण करने की भावना सीख सकें और जो कुछ शंकराचार्य ने शिष्य के गुणों के बारे में कहा है, उसे अपने जीवन में उतार सकें, तभी उनकी आत्मा को शांति मिलेगी, मुझे प्रसन्नता मिलेगी, आपको साधना में सफलता मिलेगी और मेरे हृदय में एक स्नेह उमड़ेगा, मैं आप सब पुत्रों को, आप पुत्र हूँ मेरे, मैं सबको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, आपके कल्याण की कामना करता हूँ।

नहीं है
प्रिय की

को खत
जाएगो,
परवाह
त्रिय में
इच्छा है

किसी क
बुँड़ि क
विशेष
आंति
जुड़ा

प्रवृत्तिशीली विशेष प्रकार

इस दिन कुछ
विशेष प्रकार की

साधना एं सम्पन्न होती हैं और

वे साधना एं किस प्रकार से सम्पन्न हो सकती हैं,
यही बात इस लेख में समझाई गई है। आप स्वयं इस लेख
को पढ़ कर, इस साधना को सम्पन्न कर जीवन में सब कुछ
प्राप्त कर सकते हैं, इसीलिए यह लेख आपको समर्पित है . . .

कृल-कल करती हुई नदी लगातर बहती हुई किसी
अनजान पथ की ओर अग्रसर रहती है . . . कहीं
भी एक क्षण के लिए विश्राम उसकी किस्मत में
नहीं है . . . वह हर क्षण आगे ही बढ़ती रहती है . . . अपने
प्रिय की ओर . . . सागर की ओर . . .

वह जानती है, कि उससे मिलने में उसके अस्तित्व
को खोता है, उससे मिलने पर वह पूरी तरह से समाप्त हो
जाएगी, उसमें विसर्जित हो जाएगी . . . पर वह इन चारों की
परवाह न करते हुए किसी अल्हड़ घोड़शी की भाँति अपने
प्रिय में विलीन होने के लिए बढ़ती रहती है . . . यही उसकी
इच्छा है . . . यही उसकी आकांक्षा है . . .

जीवन की इस लम्बी, अनुभव प्रदायी यात्रा में हर
किसी को अपनी आकांक्षा एं एवं इच्छा एं होती है . . . हर कोई
कुछ विशेष करना चाहता, कुछ विशेष बनना चाहता है, कुछ
विशेष प्राप्त करना चाहता है . . .

पर क्या नदी की ही भाँति उनमें दृढ़ता है, नदी की ही
भाँति उनमें अटूट विश्वास, श्रद्धा और खुद को मिटाने का
जुनून है . . . अगर नहीं, तो किर किस बलबूते पर कुछ प्राप्त

करना चाहते हो, क्योंकि जो कुछ खोने को तैयार नहीं, वह
प्राप्त ही क्या कर सकेगा, जो मिटाने को तैयार नहीं, वह क्या
नवीन निर्माण कर सकेगा, जो विसर्जित होने को क्रिया से
अनभिज्ञ है, . . . वह अपने अस्तित्व को बचा भी कैसे सकेगा?

मिटना तो एक दिन है ही, जाना तो एक दिन है ही,
फिर चाहे तुम कितना ही अपने ऊपर पहरा बिटा दो, अपने
आप को कमरे में बंद कर लो . . . पर एक दिन तुम समाप्त
होगे जरूर . . . यह सुनिश्चित है . . . और जब ऐसा होता है
तो फिर पछताने के सिवा जीवन में और कुछ नहीं रह जाता।

तो तुम किस अहं में अपने आपको बचाते फिर रहे
हो, क्यों अपने आपको धोखा दे रहे हो . . . क्या सोचते हो, कि
कभी मिटोगे नहीं? यह मात्र तुम्हारा भ्रम है, मिटना तो तुम्हें है
ही, आज नहीं तो कल . . .

और स्वेच्छा से आज अपने आपको मिटा दोगे, तो उसी
क्षण तुम्हारा नया जन्म होगा, तुम्हारा नया अस्तित्व उभर कर
सामने आएगा, तुम दिव्य तत्त्व को प्राप्त कर सकोगे . . . और
यही आत जीसस कहते हैं —

"Unless a man is born again, he cannot see

the kingdom of god."
(John 3:3)

अर्थात् जब तक व्यक्ति खुद को मिटा कर दूसरा जन्म नहीं ले सकता, वह दिव्य तत्त्व को प्राप्त नहीं कर सकता, वह गुरुत्व को समझ नहीं

प्रबोधनी एकादशी पर गुरु के ऊपर एक दिवसीय साधना, जो एक और धन, वैभव, यश, सम्पन्नता, आरोग्य प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता की उच्चतम स्थितियाँ प्रदान करते हुए व्यक्ति को 'प्रबोधित' कहती है . . .

सकता, गुरु में खुद को समाहित नहीं कर सकता . . .

'गुरु' शब्द बड़ा ही भ्यारा है। यूनानी भाषा में इसका अर्थ है 'शून्य' और सही अर्थों में देखा जाए, तो शून्य से अधिक विस्तार लिये हुए कोई चीज होती भी नहीं . . . इसीलिए तो व्यक्तियों ने ब्रह्माण्ड को 'शून्य' कहकर सम्बोधित किया है . . .

और वास्तव में गुरु वह होता है, जो समस्त ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर समाहित किए होता है, जो सत्य स्वरूप होता है, सत् चित् आनन्द स्वरूप होता है, पूर्ण ब्रह्म स्वरूप होता है।

गुरु वह होता है, जो व्यक्ति को प्रबोधित करता है, उसको प्रबोध देता है, उसके शूटे सामान्य व्यक्तित्व को नष्ट कर उसे उसके वास्तविक दिव्य अस्तित्व से परिचित कराता है। इसलिए उसे 'प्रबोधक' भी कहा जाता है . . .

और यह 'प्रबोधक' अपनी दोनों बाहें फैलाए आतुरता से व्यक्ति को उसकी समस्त न्यूनताओं समेत अपने में समाहित करने के लिए, तत्पर रहता है . . .

थान रहे, सागर कभी यह नहीं कहता, कि यह नदी बड़ी गंदी है, बड़ी प्रदूषित है, मैं इसको नहीं अपनाऊंगा, मैं इसे अपने में नहीं समेटूंगा . . .

और गुरु भी व्यक्ति की न्यूनताओं, उसकी तुच्छता के विष को पीते हुए भी उसे अपने अंक में समेट लेते हैं . . . तभी तो बुरान कहता है —

विमिल्लाहि अनूर रहमानि अल्तरहिमि

शुरू करता हूँ उस 'परम तत्त्व' के नाम से, जो कि मात्र दाता और अपार करणावान है . . .

यह गुरु की अपार करुणा ही है, कि वह ब्रह्मत्व की उच्चतम, आनन्दप्रद स्थिति से नीचे उतर कर तुम्हारे स्तर पर खड़ा होकर, औच के सभी फासलों को मिटा कर तुम्हें

प्रबोध देने को चेष्टा करता है . . .

एक भिखारी किसी भी हालत में सप्राट के सामने जाकर अपने मन की बात नहीं कह सकता, क्योंकि उन दोनों में फासला इतना है, कि

भिखारी तो हतप्रभ हो जाएगा, हक्काने लग जाएगा और अगर हिम्मत करके कुछ कहे भी, तो वे शब्द आधे-अधेरे ही रहेंगे।

इसीलिए एक बड़ा ही सुन्दर नियम बना रखा था सप्राटों ने, रात को सामान्य आदमी की बेशभूमा में अकेले राज्य के दौरे पर निकलते थे, बिल्कुल सामान्य व्यक्ति की तरह . . . इस तरह से वे लोगों से बात कर पाते थे और लोग भी, बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी व्यथा उन्हें बता देते थे, क्योंकि वह उन्हों के स्तर का व्यक्ति प्रतीत होता था, वहां कोई फासला नहीं दिखता था . . . और इस तरह सप्राट उनकी दुविधाएं, परेशानियाँ समझ कर उन्हें दूर करने की चेष्टा करता था।

इसी प्रकार गुरु भी सभी फासलों को मिटा कर सामान्य व्यक्ति की तरह ही जीवन जीता हुआ लोगों के बीच आता है, ताकि वे बिना किसी हिचकिचाहट के उससे सम्पर्कित हो सकें और उससे जुड़ सकें।

इस जुड़ने की ही क्रिया में गुरु उस व्यक्ति को समाप्त कर देता है, उसके शूटे व्यक्तित्व को चुरी तरह से झकझोर देता है, उसके नकली अस्तित्व को उधाड़ कर फॅक देता है, उसे बिल्कुल खत्म कर देता है . . . ठीक उस समुद्र की भाँति, जो नदी को पूर्ण रूप से समाप्त कर अपने में ही समा लेता है, अपने में ही पचा लेता है . . .

और फिर पहली बार नदी को अहसास होता है, कि वह तो सदैव ही समुद्र रही है, यह नदी का स्वरूप और इधर-उधर बिना दिशा के बोध हुए बहना तो एक स्वप्न, एक भ्रम मात्र था . . . उसका वास्तविक स्वरूप तो समुद्र ही था और वह समुद्र ही है।

ठीक इसी प्रकार शूला व्यक्तित्व गिरने के बाद व्यक्ति को, उस शिष्य को पहली बार बोध होता है, कि वह तो गुरु से अभिन्न कभी था ही नहीं, उसका भटकाव तो मात्र उसका

अज्ञान था, मा-
कभी अलग
अन्तर नहीं रह
में 'अहं बहा'
और
विलीन हो
फलस्वरूप
और उजाइ
सौन्दर्य में य
सारा वाताव
जै
शीतला बया
बन पाता है
सृजन कर
मृढ़ में प्रवे
जानकारी
राम
1.

- अज्ञान था, मात्र एक छलावा था . . . क्योंकि गुरु तत्त्व से वह कभी अलग था ही नहीं . . . और तब गुरु और शिष्य में कोई अन्तर नहीं रह जाता और स्वतः ही प्रबोधित शिष्य के कण-कण में 'अहं ब्रह्मस्मि' का भाव वृत्त करने लग जाता है . . .
- और स्मरण रहे, जो नदी समुद्र में, सागर में पूर्णतः विलीन हो जाती है, वही बाद में वाष्पीकरण क्रिया के फलस्वरूप स्वच्छ, शीतल फुहारों के रूप में लपलपाती धरती और उजाड़ स्थानों पर बरसती है और उसे पुनः हरियाली एवं सौन्दर्य से सुकृ करने में सक्षम होती है . . .
- चारों तरफ एक मनोहारी सुगम्य फैल जाती है और सारा वातावरण वृत्तमय हो जाता है . . .
- जो शिष्य गुरु में पूर्णतः लीन है, वही भविष्य में शीतल बयार बन पाता है, शीतल फुहार बन पाता है, युग पुरुष बन पाता है और चतुर्दिक् एक प्रकाश युक्त वातावरण का सृजन कर पाता है . . .
- यह एक अद्भुत क्रिया है, कोयले से हीरे होने की, मुद्र में प्रबोधित होने की . . . और केवल मात्र गुरु ही इसके जानकार हैं।

साधना विद्यान

1. इस साधना में आवश्यक सामग्री चैतन्य गुरु यंत्र

- तथा गुरु माला है।
यह साधना एक दिवसीय है, इस 10.11.97 को सम्पन्न करें या किसी भी गुहावार का सम्पन्न करें। साधक स्नान कर फौले वस्त्र धारण करें, पीताम्बर ओढ़ लें। लकड़ी का बाजोट पर फौला वस्त्र बिछाएं, उस पर एक पात्र में कुंकुम से स्वसितक बनाकर गुरु यंत्र स्थापित करें तथा गुरु चित्र स्थापित करें। गुरु यंत्र का पूजन दैनिक साधना विधि में दिये गये गुरु पूजन के अनुसार पूजन सम्पन्न करें। चित्र का पूजन भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से करें। गुरु माला को यंत्र के सामने ही पूष्य रख कर उस पर रख दें, माला का भी पूजन करें। गुरु माला से निम्न मंत्र का जप 51 माला करें—

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं

OM HREEM GREEM HREEM

मंत्र जप समाप्त होने पर माला यंत्र पर रख दें तथा गुरु आरती सम्पन्न करें।

अगले दिन सभी सामग्री नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौषधावार — 260/-

हिन्दू
पुण्डिलिनी तारे

जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर पूर्णता तक पहुंचने की क्रिया कुण्डलिनी-जागरण है, और जिसने कुण्डलिनी जाग्रत कर ली है, वह तो उस तत्त्व को प्राप्त कर ही लेता है जिसे "अनहृद नाद" कहते हैं, जब मन उन्मनी अवस्था में आ जाता है तो सम्पूर्ण विश्व और उसमें घटित होने वाली घटनाएं स्वतः दृष्टिगोचर होने लगती हैं।

प्रत्येक मानव की उच्चतम आकांक्षा 'ब्रह्ममय' बनना है, जो भोग और मोक्ष दोनों को समान रूप से प्राप्त करता हुआ 'परमहंस' अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

और इस अवस्था को प्राप्त करने की क्रिया का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में है, जिसने इसको समझ लिया, उसने सब कुछ समझ लिया, सब कुछ प्राप्त कर लिया, वह एक साथ ही ऐश्वर्य और परहमहंस अवस्था को प्राप्त कर पूर्णत प्राप्त कर लेता है, जिसने इस पुस्तक को समझ लिया, उसने सब कुछ समझ लिया।

न्यौषधावार — 96/-

इस मास दिल्ली में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भास्त में रहने वाले पवित्रि सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धांशुम' में पूजा गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच समाप्त होती है और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्ठा और पचपात्र अपने साथ में लावें या न हों, तो वहाँ से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 6.9.97

लक्ष्मी आबद्ध साधना

वर्तमान सामाजिक जीवन में दरिद्रता अभिशाप है, धन के बिना जीवन नक्क बन जाता है... यह तो आर्थिक युगा है, धनमान होना आज का परम सौभाग्य है, प्रत्येक व्यक्ति थोड़े ही सामय में लक्षपति और करोड़पति बनना चाहता है, इसके लिए वह रात-दिन परिश्रम भी करता है, खूब छल-कपट भी करता है... परन्तु लक्ष्मी विद्या नहीं रह पाती, जिस तरह वह आती है, उसी तरह चली भी जाती है... इस विसंगति को दूर करने के लिए यह एक अचूक और अनुभव प्रयोग है, जिसके उपरान्त लक्ष्मी द्वारा बन कर साथ रहने के लिए बाल्य होती ही है...

दिनांक 7.9.97

स्वर्णदेहा अप्सरा साधना

सौन्दर्य और प्रेम को यदि पूर्णता से प्राप्त करना है, यदि जीवन को उमंग, उत्पाद व आनन्द से परिपूर्ण करना है, यदि जीवन के सौन्दर्य को अनुभव करना है, यदि किसी ऐसे सार्थी को प्राप्त करना है, जो आपके प्रति पूर्ण रूप से निश्चल और समर्पित हो, तो आपको अप्सरा साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी... स्वर्णदेहा अप्सरा की साधना सम्पन्न कर आप भी प्रेम और समरण की परिभाषा को पूर्ण रूप से अनुभव कर सकते हैं, अपने जीवन में उठार सकते हैं...

दिनांक 8.9.97

सावर सिद्धि साधना

सावर मंत्र सबसे अधिक पठन्त्रपूर्ण और उभाव युक्त देखे गए हैं... व्यापि वे मंत्र देखने में अत्यन्त सरल, पीढ़े-साढ़े एवं साधारण से लगते हैं, ऐसा लगता है, जैसे कुछ अनर्थक शब्दों को जोड़ कर मंत्र का रूप दे दिया गया हो, उनमें कोई विशेषता भी दिखाई नहीं देती... परन्तु साधना क्रान्त में उनका प्रभाव गोली की तरह अचूक होता है, साथ ही उनका विशान एवं प्रयोग अवृत ही सरल होता है... इस प्रकार के मंत्रों में शीघ्र एवं निश्चित सफलता प्राप्ति के लिए यह प्रयोग प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक सोपान है...

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे -

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन की पत्रिका की आर्थिक सदस्यता हेतु 195/- आर्थिक शुल्क रक्षा 24/- डाक ऋण और 12 दुर्लभ अंकों के येट का शुल्क 180/-, इस प्रकार कुल शुल्क (219/- + 180/- = 399/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क 'पूर्ण गृहस्थ सुख प्रदायक गुटिका' प्रदान किया जायेगा, जो कि आपके पांचवार के किसी भी व्यक्ति या स्वर्य के भौतिक व ईश्विक रूपों पर नियन्त्रण दिलाने में सहाय है एवं उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप 'मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान' पत्रिका प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वर्य के लिए एक वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप 'पूर्ण गृहस्थ सुख प्रदायक गुटिका' प्राप्त नहीं हो पायेगी।
3. आप यदि किसी कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो बार्यांतर्य में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 375/- रुपये या एक पत्रिका सदस्य व 12 पुस्ते दुर्लभ अंक हैं।

सम्पर्क : सिद्धांशुम, 306, कोहाट एन्कलेज, वीलमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

३५ मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान 'सितम्बर' 1997 72

दीपा
हृदय में उत्तर
अपना भाग
धकेलने का

जोधपुर की
तपस्या स्था

में नृत्य का
सब गुरुदेव

दुर्लभ सा
सकें इसके
गुरुदेव का

सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य और पूर्ण सफलता के लिए

क्षाणुद्धिप्रदा जाहालहंगी

क्षाधना शिविर

जीवन के जगमगाते हुए क्षणों में

29–30 अक्टूबर 1997

दीपावली पर्व मात्र एक पर्व ही नहीं है, अपितु पूज्य गुरुदेव के समीप जाने का, उनके हृदय में उत्तरने का, उनकी करुणा वृष्टि में भीगने का महोत्सव है, दिवाली के नहें-नहें दीपों से अपना भाग्य संवारने का उत्सव है, जीवन की दरिद्रता, अभाव और बाधाओं-अड़चनों को परे धकेलने का क्षण है....

.... और इस क्षण पर आपकी उपस्थिति आवश्यक है, जरूरी है, अनिवार्य है, क्योंकि जोधपुर की धरती पर आपको बहुत कुछ लिखना है, सब कुछ पा लेना है, उस पुण्य भूमि में, उस तपस्या स्थली में, जहाँ हजारों-हजारों साधकों ने साधनाएं सम्पन्न की हैं, तपस्या की है....

.... और इस बार आपको कुछ नवीन साधनाएं करनी हैं, लक्ष्मी को अपने घर-आंगन में नृत्य कराना है और सफलता को झपटा मार कर अपनी मुट्ठी में दबोच लेना है, क्योंकि आप सब गुरुदेव के सक्षम शिष्य हैं, अप्रतिम हैं, अद्वितीय हैं....

.... और आप ऐसा सौभाग्य प्राप्त कर सकें, अपने दुर्भाग्य को परे धकेल सकें, कुछ दुर्लभ साधनात्मक मोती चुनते हुए सफलता और श्रेष्ठता के कुछ नये आयामों को प्राप्त कर सकें इसके लिए हम आपका आवाहन कर रहे हैं.... आप सबको आना ही है.... और यही पूज्य गुरुदेव की आज्ञा भी है....

जीवन-महोत्सव के अमूल्य क्षण

जोधपुर में

1, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-32209, टेलीफैक्स : 0291-32010

शिविर
शुल्क -
430/-

युगों-युगों से हजारों दीपक जलाये जा रहे हैं, फिर भी हमारा अन्तर्मन अन्धकार से आच्छन्न है, लका हुआ है। और यह बाहरी क्रिया से समाप्त हो भी नहीं सकता। आखिर कब तक हम इस अन्धकार को, दुःख और दारिद्र्य को जन्म और मृत्यु को छोते रहेंगे? आखिर कब तक हम दीन-हीन बने रहेंगे? आखिर कब तक हम बाधाओं, अड्डनां और परेशानियों से छुस्त रहेंगे? आखिर कब तक हम ऋण के बोझ से दबे रहेंगे? आखिर कब तक? कभी तो ऐसा अवन्न आना चाहिए, कोई तो ऐसा क्षण उपस्थित होना चाहिए, जब हम इनसे छुटकारा पा सकें, ऋण से मुक्त हो सकें, बाधाओं व चूनताओं को दूर भगा सकें, दारिद्र्य और विपत्ति को समाप्त कर सकें, सुख और सौभाग्य को प्राप्त कर सकें।

यदि आप चाहें, तो यह सम्भव हो सकता है, मगर यह सम्भव मात्र सद्गुरु की शरण में ही हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले उनके हाथ में अपना हाथ देना पड़ेगा, उनको अपने मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा, उनके प्रति समर्पित होने की क्रिया करनी पड़ेगी, उनकी एक आवाज पर उनके पास दौड़ कर पहुंचना होगा, उनके चरणों में बैठना होगा और उनकी बताई साधना पद्धतियों को अपने जीवन में उतारना होगा...

... और इसी को मूर्त रूप देने के लिए पूज्य गुरुदेव आपको आवाज दे रहे हैं। यह दीपावली का पावन पर्व इन दीपशिखा के माध्यम से आपके हृदय को प्रकाशित करे, इसके लिए पूज्य गुरुदेव के इस आह्वान को एक आज्ञा समझें और दीपावली में सम्पन्न होने वाले इन दीक्षा और प्रयोगों के महत्व को समझें, जो आपको पूर्णता के साथ सौभाग्य प्रदान करने के माध्यम बन रहे हैं। ये क्षण निश्चय ही आपके लिए और आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए अद्भुत और अनिवार्यी होंगे, जब पूज्य गुरुदेव की कल्याणकारी करुणा आपूरित दृष्टि से अमृत वर्षा में भीग कर आप पूर्ण सम्पन्नता और ऐश्वर्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे...

... और यह दीपावली आपके लिए इसी स्वर्णिम बेला को ले कर उपस्थित हो रही है, जिससे कि आप उनके पास आयें, उनके चरणों में बैठें और उन दुर्लभ साधना रहस्यों को प्राप्त करें, जो हमारे उदानतम ऋषियों के पास ज्ञान के रूप में, याती के रूप में तथा धरोहर के रूप में थी, वह सब कुछ पूज्य गुरुदेव आपको सौंप देना चाहते हैं, आवश्यकता इस बात की है, कि आप उनके पास पहुंचे और उनकी आज्ञा को ही अपना सर्वस्व मान कर उसका पूर्ण रूप से पालन करें।

यदि आप संकोच वश रुक गए, पीछे रह गए, तो यह समय तो अपने निश्चित गति-क्रम का पालन करता हुआ व्यतीत हो ही जायेगा, लेकिन आपके हाथ खाली अवश्य रह जायेंगे, फिर आपके पास अफसोस करने के सिवा बचेगा भी क्या? यदि आप इस सौभाग्य से बच्चित रह गए, लाभ न उठ पाये, तो यह आपके जीवन का दुर्भाग्य ही होगा।

हम भी आपके जीवन को सम्पन्नता, श्रेष्ठता, अद्वितीयता और पूर्णता से युक्त देखना चाहते हैं और इसीलिए आपका आह्वान कर रहे हैं... इसीलिए जोधपुर की धरती आपकी प्रतीक्षा कर रही है...

तो आइये न !

क्षाणुद्धिप्राद्वा लाहालक्ष्मी

क्षाधाना शिविक

:: शिविर स्थल ::

1, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),
फोन : 0291-32209, टेलीफैक्स : 0291-32010

साधनाएं, जो इन दिनों सम्पन्न होंगी

३ लक्ष्मी प्राप्ति : अपेक्षा लाभा साधना ३

यह लक्ष्मी प्राप्ति की कोई सामान्य साधना न हो कर वह गोपनीय लाभा साधना पद्धति है,
जिसके माध्यम से उनके गोप्या और मठ सदैव स्वर्ण, जबाहारात आदि से परिपूर्ण रहते हैं...

३ लक्ष्मी वशीकरण-सम्पोहन साधना (तिब्बती विधि से) ३

मात्र लक्ष्मी की प्राप्ति ही नहीं, अपितु उसका वशीकरण-सम्पोहन कर उसे पूर्ण रूप से
अपने जीवन भर के लिए अनुकूल बनाने का गोपनीय तिब्बती साधना विद्यान्...

३ लक्ष्मी पूर्ण सिद्धि (गोपनीय रावण कृत प्रयोग) ३

रावण जैसा श्रेष्ठ साथक न हुआ और न होगा, उसी के द्वारा प्रणीत यह दुर्लभ, गोपनीय साधना विद्यान्,
जिसके द्वारा उसने अपनी लंका नगरी को पूर्ण वैभव युक्त बना दिया था,
जिसकी दीवारें भी सोने से निर्मित थीं और जहां हीरे-मोती कंकर-पत्तर की तरह बिछुरे रहते थे...

३ कुबेर प्रत्यक्ष साधना ३

देवताओं के कोषाच्यक्ष यशस्वराज कुबेर को अपने सामने प्रत्यक्ष कर उनसे देवताओं के समान
सम्पूर्ण वैभव और ऐश्वर्य ग्राप्त करने की एक दुर्लभ गोपनीय साधना,
जिसे पूज्यपाद गुरुदेव पहली बार साधकों के समक्ष उन्नार करेंगे...

तथा

दीपावली के दिन दिनांक 30.10.97 को रात्रि एक बज कर इककीस मिनट पर
**सिंह लग्न में पूज्य गुरुदेव द्वारा चारों देशों से युक्त
सम्पूर्ण महालक्ष्मी पूजन प्रयोग**

और साथ में

अनेक दुर्लभ गोपनीय दीक्षाएं

जिसने सिंह लग्न में महालक्ष्मी पूजन सम्पन्न कर लिया,
उसके जीवन के शब्दकोष में फिर दरिद्रता, दुर्भाग्य, विपच्चता आदि शब्द रह ही नहीं सकते,
वह सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पन्नता और सौभाग्य को ग्राप्त करता ही है...

अतः आप सभी को आना ही है, हर हालत में आना ही है...
अकेले नहीं, अपितु अपने समस्त बन्धु-बान्धवों के साथ, समस्त इष्ट-मित्रों के साथ...
और आ कर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में इस सौभाग्य को ग्राप्त कर लेना है...

काफी लम्बे अन्तराल के बाद दीपावली पर्व के अवसर पर पुनः ऐसा श्रेष्ठ अवसर उपस्थित हुआ है, जो कि महालक्ष्मी साधना के श्रेष्ठ योगों से युक्त है और जिसमें महालक्ष्मी से सम्बन्धित साधना, पूजन आदि सम्पन्न करने पर निश्चित सफलता और सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त होती ही है . . .

और इन श्रेष्ठ योगों से युक्त इस विशेष काल खण्ड में सम्पन्न होंगे

ये चमत्कारी प्रयोग

जिन्हें प्राप्त करना प्रत्येक साधक के लिए
आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है . . .

॥ भूवनेश्वरी महाविद्या प्रयोग ॥

तीनों लोकों की अधिष्ठात्री भगवती भूवनेश्वरी का एक दुर्लभ प्रयोग, जो कि दस महाविद्याओं में से एक है और जिसे सम्पन्न करने पर सम्पन्नता साधक के कदमों में लोटने की आध्य होती ही है . . .

॥ त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग ॥

जगत प्रसिद्ध 'श्री विद्या' की अधिष्ठात्री भगवती त्रिपुर सुन्दरी का यह दुर्लभ प्रयोग सम्पन्न करने वाला साधक जहाँ एक तरफ राजा के समान भोग को प्राप्त करने में सक्षम होता है, वहीं दूसरी तरफ आष्टात्मिक ऊचाइयों को भी हस्तगत करने में समर्थ होता है . . .

॥ स्वर्ण ऋष्यर प्रयोग ॥

वह अद्वितीय प्रयोग, जिसे सम्पन्न करने के उपरान्त साधक के घर में स्वर्ण वस्त्रों सी होने लगती है और वह सम्पन्नता की श्रेष्ठतम ऊचाइयों को प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है . . .

॥ सम्पूर्ण ऐश्वर्य महालक्ष्मी प्रयोग ॥

एष्वर्य महालक्ष्मी को पूर्णता के साथ प्राप्त कर अपने जीवन से दरिद्रता को कोसों दूर भगाने की अद्वितीय साधना

॥ लक्ष्मी सम्पादन प्रयोग ॥

लक्ष्मी को सम्पोषित कर देने का वह अद्वितीय प्रयोग,

जिसके उपरान्त लक्ष्मी जीवन भर साधक के पीछे-पीछे चलने की विवश होती ही है . . .

और साथ में पूर्ण गुहादेव के द्वारा प्रवचनों के माध्यम से स्पष्टीकरण होगा अनेक गोपनीय साधना रहस्यों का . . .
अतः आप सभी को आना ही है, हर हालात में आना ही है . . .

समस्त ग्राधाओं को लाभते हुए, अड्डनों, कठिनाइयों को परे धकेलते हुए . . .

क्योंकि जो क्षण बीत जाता है, वह दुबारा नहीं आता . . . और यदि आप चूक गए,
तो फिर आपके पास हाथ मलने, पछताने और दुर्भाग्य को कोसने के सिवा शीष रहेगा भी क्या ?

ताजकर आहत न।



है, जहाँ पूर्णता
आदीक्षाएं ग्रहण
में उलझते च
अपनी तेजसि
जब आप आ
लिए थे रह
सफलता प्रा
जिन तीव्र
सकता है, वे

डर
को दूटा हुव
है, कि हम
पूर्णता दे स
य
पूर्ण नहीं दि

दीपावली

जीवन का संगत एक बार फिर मुख्यता होते कौहे



ख, दैन्य, अभाव, कष्ट, आधाएं — इनका अनुभव तो जीवन में कर ही चुके हैं हम सब, परन्तु इससे अलग भी एक समाज है, जीवन है, जहां पूर्णता है, उल्लास है, मस्ती है, परिपक्षता है, सादगी है।

आप हर बार आते हैं, साधनाओं में भाग लेते हैं, दीक्षाएं ग्रहण करते हैं और वापस घर जाकर उन्हीं समस्याओं में उलझते चले जाते हैं। गुरुदेव हर बार आपको बुलाते हैं, अपनी तेजस्विता प्रदान करते हैं, अपना तपस्यांश देते हैं, परन्तु जब आप अगली बार आते हैं, पुनः उन्हीं समस्याओं का रोना लिए बैठे रहते हैं। आखिर क्यों नहीं आपको एक बार में ही सफलता प्राप्त हो जाती है? कहां आपमें न्यूनता रहती है? जिन तीव्र साधनाओं का प्रभाव तत्क्षण अनुभव किया जा सकता है, वे साधनाएं भी क्यों निष्पल हो जाती हैं?

इस बार आपको भटकने नहीं देना है, आपके पात्र को दृढ़ा हुआ नहीं रहने देना है। जीवन की सार्थकता इसी में है, कि हम कम से कम अपने जीवन के प्रारंभिक लक्ष्य को पूर्णता दे सकें।

यह सत्य है, कि इच्छाएं अनन्त हैं और सभी को पूर्ण नहीं किया जा सकता, लेकिन जीवन की जो मूलभूत

आवश्यकताएं हैं, कामनाएं हैं, कि हम स्वस्थ हों, दीर्घायु हों, सुखी हों, सम्प्रता से युत हों, घर में लक्ष्मी का निवास हो, इनकी तो पूर्णता आवश्यक ही है।

हम किसी भी साधना को सम्पन्न कर सफलता के पथ पर अग्रसर होने की क्रिया करते तो हैं, पर मन का भटकाव हमें पुनः प्रारंभिक अवस्था में लाकर खड़ा कर देता है।

इस अवस्था में एक ही उपाय शेष बचता है, कि यदि हमें स्व प्रवत्तों से तो सफलता प्राप्त नहीं हो रही है, तो गुरु अपनी शक्ति द्वारा हमें हमारे लक्ष्य की साधना सिद्धि प्रदान कर दें। जब ऐसा होगा, तब निश्चय ही हम श्रेष्ठतम बन सकेंगे, उच्चता प्राप्त कर सकेंगे, क्योंकि गुरुदेव शिष्य की साधक की ओरता, पात्रता देख कर उसके अनुरूप साधना सिद्धि प्रदान करने में सक्षम होते सकते हैं।

यह क्रिया सम्पन्न होगी जोधपुर की पावन भरती पर कार्तिक माह में, जिसमें महालक्ष्मी का पर्व है, जिसके प्रत्येक दिन का स्वयं में महत्त्व है, जिस अवसर की तो योगी, यति, संन्यासी भी आतुरता के साथ प्रतीक्षा करते हैं।

इस पर्व का प्रथम साधना दिवस धन त्रयोदशी के रूप में मनाया जाता है। यह दिन धन के देवता कुबेर से



सम्बन्धित माना जाता है। इस दिन लोग अपने घर में धन-धार्य व समृद्धि के लिये अपने घर को सुव्यवस्थित कर सम्पन्नता और समृद्धि के स्थापन की तैयारी करते हैं और कुबेर की साधना सम्पन्न करते हैं।

इस पर्व का द्वितीय साधना दिवस महालक्ष्मी पूजन का होता है, जिसकी रात्रि में साधक भगवती लक्ष्मी की घर में स्थापन करता है और उनसे अपने जीवन की श्रेष्ठता एवं उच्चता के लिए प्रार्थना करता है।

इस विशिष्ट रात्रि को केवल 'कालरात्रि' ही नहीं कहा जा सकता, अपितु जीवन के एक श्रेष्ठतम महोत्सव के रूप में वर्णित किया जा सकता है। तांत्रिक साधनाओं के लिए तो यह एक श्रेष्ठ पर्व है और एक सिद्ध, सौभाग्य-पर्व के रूप में मनाया जाता है।

यह मात्र एक उत्सव ही नहीं है, अपितु दुर्भाग्य को मिराने का अवसर है, काल की तुनीसी को स्वीकार करने का पर्व है, भाग्योदय का पर्व है, दुःख, द्रारिद्र्य, मनोमालिय को हटाने का पर्व है और यदि सूक्ष्मता पूर्वक देखा जाय, तो यह एक सौभाग्य प्रदायक पर्व है, क्योंकि कई साधक के भाग्य में सर्व सुख होते हुए भी किञ्चित दोष (चाहे वह पितृ दोष हो या घर बाधा हो) उसे पुनः दुर्भाग्य के कटघरे में ला कर खड़ा कर देते हैं और इस रात्रि की साधना समस्त दोषों को समाप्त करने में सक्षम है।

और जब साधक अपने जीवन में सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा, तो निश्चय ही वह अपना भाग्य स्वयं ही लिखने में सक्षम हो सकेगा।

इसीलिए तो इस पर्व को जीवन संगीत कहा जाता है, आनन्द का अजख प्रवाह माना गया है। मुरझाये हुए चेहरों पर प्रसन्नता की, माधुर्य की, खिलखिलाहट की रश्मियां बिखरने का पर्व है यह।

इसीलिए गुरुदेव आप सबका इस पर्व पर आह्वान कर रहे हैं, जिससे कि वे आपको यह सब प्रदान कर सकें।

अब तक आप लक्ष्मी के एक या दो स्वरूपों से ही परिचित होंगे, परन्तु इस बार लक्ष्मी के समस्त स्वरूपों को एकत्र कर, उनको एक सूत्र में पिरोकर, उनकी साधना के द्वारा गुरुदेव आपको वह सब प्रदान करेंगे, जो आपके जीवन की पूर्णता है, अभीष्ट है।

और इन सबसे श्रेष्ठ होगा, कि हमें पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त होगा, न सिर्फ गुरु के रूप में, अपितु पिता के रूप में भी, मार्गदर्शक के रूप में भी और परिवार के मुखिया के रूप में भी।

उस सौभाग्यदायक क्षण का तो वर्णन ही सम्भव नहीं है, जब साक्षात् नारायण भगवती के साथ अपने सान्निध्य में विभिन्न गोपनीय साधना रहस्यों को उजागर करते हुए आपकी झोली में अनेक रलों को ढाल देंगे।

दीपावली का पर्व तो एक माध्यम बन जायेगा, जब आप अपना सारा तनाव विस्मृत कर थिरक उठेंगे, जब आपका हृदय उन्मुक्ता अनुभव करेगा, ऐम की लय को आत्मसात् कर सकेगा, जब आपका भौतिकता छोड़ कर समर्पण की भाषा समझ सकेगा।

जीवन का संगीत यही तो है, कि हम अपने अस्तित्व को समझ सकें, भौतिकता में पूर्ण होते हुए अध्यात्म को भी पूर्णता से समझ सकें।

इन विशेष दिवसों में उच्चकोटि के प्रयोग सम्पन्न कराये जायेंगे, जो अब तक सर्वथा दुलभ रहे हैं, रहस्य की परतों से आबद्ध कुछ ऐसे सूत उद्भूत होंगे, जो अभी तक गोपनीय हैं।

हमें भी आपके आगमन की प्रतीक्षा है जोधपुर में, जो स्वयं में एक सिद्ध स्थल बन गया है, जहाँ का कण-कण चैतन्य है, जाग्रत है, जहाँ साधना सम्पन्न करने पर असफलता सम्भव ही नहीं है।

SH

जो महत्व है
नवरात्रि पर्वों
किसी

आवश्यकता न
है, किन्तु क्या
उद्देश्य मात्र है
है अथवा नव

घटित होने व
अपने स्थान
अधिक व्याप
सम्पूर्ण वर्ष
चार बार, त

माध्यम से
आपाद्ध मात्र

है
अपने आप
सामान्य मात्र
जप करने
विस्तारित त

लिए होते हैं
है, किन्तु उ
मात्र शक्ति
के बाद ही

है
अपने आप
सामान्य मात्र
जप करने
विस्तारित त

लिए होते हैं
है, किन्तु उ
मात्र शक्ति
के बाद ही

विद्विता हो छेदी।

विद्विता हो

HJ रतीय जीवन पद्धति में नवरात्रि पर्वों का जो महत्व है उसके पश्चात नवरात्रि पर्वों के विषय में किसी परिचय की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है, किन्तु क्या नवरात्रि पर्वों का उद्देश्य मात्र शक्ति तत्त्व की महत्ता से घरिचित करना ही होता है अथवा नवरात्रि पर्व वर्ष के दो महस्त्वपूर्ण संक्रमण कालों पर घटित होने वाले लोक उत्सव मात्र ही होते हैं? ये दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर सही हैं, किन्तु नवरात्रि का पर्व तो इससे कही अधिक व्यापक भावभूमि को अपने में समाहित किए हुए एक सम्पूर्ण वर्ष में (एक संवत् में) केवल एक बार ही नहीं बरन चार बार, दो बार चैत्र एवं आश्विन प्रकट नवरात्रियों के माध्यम से तथा दो बार गुप्त नवरात्रियों के माध्यम से आषाढ़ माह एवं माघ माह में घटित होती है।

इन नवरात्रियों का वर्ष में चार बार उपस्थित होना ही अपने आप में अपना रहस्य एवं उसकी व्याख्या समेटे हुए हैं। सामान्य साधक के लिए जहाँ इनका अर्थ केवल नवार्ण मंत्र का जप करने अथवा कुछ शक्ति साधनाएं सम्पन्न करने तक ही विस्तारित होता है, वही सन्यासियों के मध्य इसके अर्थ वैशिष्ट्य लिए होते हैं। शक्तिमय होना यद्यपि जीवन की एक श्रेष्ठ अवधारणा है, किन्तु जीवन के विशेषकर आध्यात्मिक जीवन के सन्दर्भ में मात्र शक्तिमय होना ही साधना की इतिश्री नहीं है। शक्तिमय होने के बाद ही तो अध्यात्म अथवा साधना के जगत में प्रबोश का द्वारा

शक्तिमय होने का अर्थ, शासन करने की मनोवृत्ति से युक्त हो जाना नहीं बरन जगत के प्रति अनुचर बन जाना होता है। शक्तिमयता की पराकाष्ठा दम्भ में नहीं बरन महाकरुणा में होती है और इसी कारणवश जहाँ देवी का स्वरूप एक और विविध आशुधों से युक्त माना गया है, वहीं उन्हें 'करुणवर्वर्णनिधिम्' की संज्ञा से अनायास ही नहीं विभूषित किया गया है।

खुलता है और संन्यासी साधक इसी प्रकार शक्तिमय होने के उपरान्त साधना की उन भावभूमियों की ओर उन्मुख हो जाते हैं, जिन्हें जीवन पुक्ति की परिपूर्णता की भावभूमि, इत्यादि संज्ञाओं से विभूषित किया गया है और जो 'स्व' से परोन्मुखी होती है, लघु से विराट बनने की संक्रिया होती है।

शक्तिमय होने का अर्थ, शासन करने की मनोवृत्ति से युक्त हो जाना नहीं बरन जगत के प्रति अनुचर बन जाना होता है। शक्तिमयता की पराकाष्ठा दम्भ में नहीं बरन महाकरुणा में होती है और इसी कारणवश जहाँ देवी का स्वरूप एक और विविध आशुधों से युक्त माना गया है, वहीं उन्हें 'करुणवर्वर्णनिधिम्' की संज्ञा से अनायास ही नहीं विभूषित किया गया है। शक्तिमय व्यक्तित्व में ही करुणा का विस्फोट होना सम्भव होता है अन्यथा शेष सभी तो दुर्बलता के कारण केवल अपने ही जीवन की विसंगतियों में सिमट गए मनुष्य ही होते हैं। करुणा ही अध्यात्म का आधार और वही अध्यात्म का चरम विकास भी होती है, किन्तु क्या यह सम्भव है, कि एक शक्तिमयता के अभाव से परिपौर्णित व्यक्ति में करुणा का उद्भव सम्भव हो सके?

कभी स्वामी विलेनान्द ने अध्यात्म के पथ पर बढ़ने के इच्छुक व्यक्तियों से तीन प्रश्न पूछे थे। उनका प्रथम प्रश्न था, कि क्या उन्हें (अर्थात् ऐसे इच्छुक व्यक्तियों को) यह बात उद्देलित करती है, कि आपों की इस भूमि पर जो विविध

दर्शनों की जननी रही है, आज बहुसंख्यक व्यक्ति दीन-हीन परित स्थितियों में पशुओं से भी गथा गुजरा जीवन व्यतीत करने को बाध्य है?

इसके पश्चात उनका दूसरा प्रश्न था, कि क्या कभी वह बात उन गतिशील व्यक्तियों को अन्दर तक पथ गई है या ऐसे अनेक पीड़ितजनों की व्यथा समझ कर उनका हृदय विदीर्घ होने की स्थिति में पहुंच गया है अथवा इस विषय पर सोचते सोचते उनकी गतों की नींव भी उनकी पलकों से ओझल हो गई है?

स्वामी विवेकानन्द का तदुपरान्त अन्तिम और निष्णायक प्रश्न था, क्या वे ऐसे पीड़ितजनों के उत्थान हेतु अपना तन-मन-धन सर्वस्व न्यौछावर करने की स्थिति में आ गए हैं और उन्हें इस बात की भी चिन्ता नहीं रह गई है, कि वह इस प्रयास में उनका जीवन रोष रहे अथवा समाप्त हो जाएगा? स्वामी विवेकानन्द के बल इस स्थिति में आरुद्ध व्यक्ति को ही अध्यात्म में प्रवेश का अधिकार देते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों को अध्यात्म के विषय में चर्चा करने का अधिकार है क्योंकि इन्हें आपह के बाद ही अध्यात्म की भावभूमि प्रारम्भ होती है। जाडे में गरीबों को कम्बल बेंटवा देना या बाढ़ आने पर भोजन के पैकेट बेंटवा देना सामाजिक दृष्टि से श्रेष्ठ कार्य तो हो सकते हैं, किन्तु वे अध्यात्म के अंग नहीं हो सकते। धर्मशाला बनवाना, प्याज लगवाना या किसी अस्पताल में अपनी दान की रकम घोषित करती संगमरमर की शिला लगवाना भी करुणा जनित अध्यात्म के अंश नहीं हो सकते। पुनः स्वामी विवेकानन्द का ही स्मरण करे तो ऐसी स्थिति ही क्यों जाए, कि हमें किसी भूखे के भोजन देकर या अनाथ व्यक्ति को लिए अनाथालय बनवा कर अपनी सदाशयता को प्रकट करना पड़े! क्यों न हम ऐसे समाज के निर्माण में संलग्न हों जिसमें न कोई भूखा नंगा हो या अपने आप को जीवन भर अनाथ मानने की भावना से संतप्त रहे। अध्यात्म की पराकाशा विश्वजनित करुणा में होती है और वही शक्तिमयता की भी पराकाशा है, जो किसी कंदरा या सुरम्य घाटी में किसी नदी के तट पर बने पांच सितारा आश्रमों में बैठे श्रद्धालुओं, भक्तों या रिटायर्ड अधिकारियों के द्वारा सम्भव हो ही नहीं सकती।

'विदिता हो देवी विदिता हो' — कितना अग्रह और कितनी निश्छल कुहुक भरी है भरी है मैथिल कोकिल कहे जाने वाले कवि विद्यापति के इस स्वर में। लगभग पांच सौ वर्ष बाद तोक यही स्वर सुनाई पड़ता है स्वामी विवेकानन्द को रचना के उस स्वर में जहां वे 'माँ' से अनुरोध करने हैं, कि वह एक बार नृत्य करें, ऐसा नृत्य करें, कि इस जगत के वैषम्य उसकी पद-

संचालन की क्रिया से भस्मीभूत हो जाए। विश्वजनित करुणा की भावना से युक्त व्यक्तित्व इस वैषम्य के मध्य किसी आनन्द की धारणा ही नहीं कर सकता, वह स्वानामुख्य की भावना से लिप्त ही ही नहीं सकता — यही शक्तिमय साधक का वर्णन स्वरूप है। वह शक्ति का विस्फोट अपने जीवन के शुद्ध द्रुन्तों को मिटाने के लिए वरन् समस्त जगत के नैराश्य भावना को समाप्त करने के लिए आयोजित होता है। इन्हीं भावनाओं की पृष्ठाज्ञाल बनाकर ही वह जगतजननी के चरणों में अपना अर्च चढ़ता है, जो शक्तिमय होगा वही 'माँ' के ममत्व में अपादमस्तक निमग्न होगा। फिर ऐसा निमग्न साधक ही आङ्गादित भी ही हो सकता। आङ्गाद से ही ऐसी करुणा का प्रस्तुत होता है जो कोई बागजाल नहीं होती। 'माँ' के ममत्व में लीन होना किसी साधना की अपेक्षा शिशुत्व से ही सम्भव हो पाता है और शिशुत्व आता है निर्मलत्व से।

श्री सदगुरुदेव इसी निर्मलत्व की प्राप्ति अपने साधक-शिष्य को सम्भव करावा कर उसे करुणा के महापथ पर अग्रसरित करने की क्रिया ही तो विविध उपायों से कहते हैं। उनकी प्रत्येक दीक्षा, प्रत्येक शक्तिपात्र प्रत्येक साधना का यही तो मर्म है। हम अपने क्षुद्रचिन्तनों से उनका स्वरूप किसी भौतिक समस्याओं को दूर करने वाले व्यक्तित्व के रूप में भले ही समझ से, किन्तु उनकी क्रियाएं तो विश्व के रंगमंच पर किसी और प्रस्तुति की चेष्टाएं होती हैं। 'माँ' को तो केवल निर्मल शिशु ही प्राप्त कर सकता है, किन्तु श्री सदगुरुदेव भौतिकता के पश्च में लिपटे किसी भी साधक शिष्य के लिए महज उपलब्ध होते हैं। क्या उनकी यह क्रिया 'माँ' से भी अधिक उदान और ममत्व में आपूरित नहीं है?

यही कारण है, कि श्री सदगुरुदेव मात्र एक पुरुष न होकर शक्ति के कारण-भूत रूप में अनुधार्य है —

श्री गुरुः सर्वकारण भूताशक्तिः।

तेन नवरन्धन्यस्तयोदेहः (भावनोपलिष्ठ)

भौतिक रूप से केवल एक देह में आबद्ध प्रतीत होते श्री सदगुरुदेव का मूल स्वरूप तो आकाश सदृश्य विश्वतृ होता है — (व्योमवत् व्याप्तदेहाय) और वे उन्मनाकाशानन्दनाथ, समनाकाशानन्दनाथ, व्यापकाशानन्दनाथ आदि नव नाशों के रूप में शिष्य की चेतना के आकाश में विस्तारित होकर कर उसे शक्तिमय बनाने की प्रक्रिया में, प्रथम दीक्षा के उपरान्त से ही संलग्न हो जाते हैं। इन 'अनहदाकाशानन्दनाथ' की 'ध्वनि' अपने विज्ञ पर जौन कितनी अनुभव कर लेता है, यह तो उसका अविहिगत विषय है।

इस रूप में 'उपाधना के द्वारा विविध व्यक्तियों के आकर्षण के द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है।

साधक के द्वारा की धारा के द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है। इस द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है। इस द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है। इस द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है।

साधक के द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है। इस द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है।

साधक के द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है। इस द्वारा विविध व्यक्तियों का आवागमन करने की अविजित कार्यता सम्भव हो गई है।

इस रूप में 'गुह' का 'प्रत्यक्ष' हो जाने के उपरान्त ही व्यक्ति साधना के दायित्व से मुक्त होता है, इससे पूर्ण नहीं।

... भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य ने जिस अवस्था में आकर 'कुपुत्रो जायेत बद्धचिदपि कुमाता न भवति' के वाक्य का स्फुरण किया था, उस अवस्था तक वे समस्त शास्त्रों का अध्ययन, विवेचन, सूजन करने के साथ-साथ आवागमन के साधन सुलभ न होने पर भी सम्पूर्ण भारत की अविजित द्यात्रा, सनातन धर्म की पुनर्स्थपना इत्यादि कार्य सम्पन्न कर चुके थे। जगतजननी की करुणा के साक्षी भूत हो चुके उन व्यक्तित्वों को कदाचित् यह पीड़ा शेष रह गई थी, कि वे तो 'माँ' की करुणा के एक अंश का भी विस्तार न कर सके; अतः जब वे उपरोक्त वाक्य कहते हैं, तो उसमें उनका विगतित हृदय ही क्षमा याचना बन कर भगवती के व्रणों में दिए जाने वाली गंगा जल की धारा के अर्ध के समान निर्मल व पवित्र प्रतीत होता है, किन्तु जब कोई सामान्य साधक प्रारम्भ से ही उपरोक्त वाक्य को उच्चारित कर गद्गद हो जाता है, कि 'मैंने तो सब निवेदित कर दिया, अब माँ संभाल ही लेंगी!' तो ऐसा लगता है, कि किसी देवपूर्णि के समक्ष सड़े-गले पुष्ट चढ़ा दिए गए हों! ऐसा गाल बजाना धूर्ती की पराकाष्ठा हो सकती है, साथकात्व की लक्षण नहीं।

साधक अपने प्रयासों से निर्मल हो ही नहीं सकता। केवल श्रेष्ठ विचारों, संकल्पों और कार्यों से 'भी वह निर्मलत्व नहीं आ सकता, जो कि 'माँ' का अभीष्ट होता है। वथार्थ निर्मलत्व तो जीवन के उन छत्तीस संवेगों से मुक्त होने पर आ सकता है जिसकी कभी प्रसंगवश व्याख्या, भुक्तेरेवरी साधना के अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने चुने हुए शिष्यों के समक्ष की थी।

चार नवरात्रियों के दिन भी छत्तीस होते हैं और स्पर्श, संख्या, परिणाम, संशोग, विभाग, शब्द, वुड़ि, मुख, दुःख, धर्म, अथर्व, शम, आलोक, तितिक्षा, रूप, गंध, रस, बल, भय, प्रयत्न, स्नेह, काठिन्य, लग्जा, कृषा, दम, मृदुत्व, इवत्व, गुरुत्व, गाम्भीर्य, सौन्दर्य, प्रेम, इच्छा, लिप्सा, देष, क्रोध एवं संस्कार — छत्तीस ही संवेग भी होते हैं। श्री सदगुरुदेव नवरात्रि पवर्णों का आधार लेकर सूक्ष्म एवं सूक्त रूप में अपने शिष्यों के इन्हीं संवेगों को समाप्त करने की क्रिया में तत्पर होते हैं, क्योंकि यहीं संवेग जीवन में वृथा 'मोह', तनाव एवं दंड के कारण भी जो होते हैं।

साधकों को जिज्ञासा हो सकती है, कि पूज्यपाद गुरुदेव

तो केवल दो नवरात्रियों — चैत्र एवं आश्विन के अवसरों पर ही साधना शिविरों में ही अपनी उपस्थिति से शिष्यों को धन्य करते हैं, फिर शेष दो गुप्त नवरात्रियों के प्रभावों की प्राप्ति कैसे सम्भव हो सकती है? इसके प्रत्युत्तर में ध्यान रखना चाहिए, कि श्री सदगुरुदेव का अतिकृत्य काल से जावङ्ग नहीं होता। वे किसी एक नवरात्रि मात्र में ही सम्पूर्ण नवरात्रियों के प्रभाव को समाहित कर सकते हैं। वह तर्कगम्य नहीं, विश्वासगम्य बोध है। इसी से सुयोग्य साधक प्रत्येक नवरात्रि में उपस्थित होते हैं, कि पता नहीं किस अवसर पर गुरुदेव अपनी प्रसन्नता के छाँगों में उड़े अपने शक्तिपात के माध्यम से पता नहीं क्या प्रदान कर दें, यहीं इस नवरात्रि का भी महत्त्व है।

जिस प्रकार एक भरे गात्र में कुछ और नहीं भरा जा सकता उसी प्रकार अपनी ही अहंमत्वा से भरे शिष्य में श्री गुरुदेव भी तब तक कुछ नहीं भर सकते जब तक वह गात्र रिक्त न हो जाए। श्री गुरुदेव की क्रियाओं का रहस्य यहीं रिक्त करने की क्रिया ही तो है। उनके सम्पूर्ण शक्ति संचरण का प्रायः पचहत्तर प्रतिशत तो शिष्य को रिक्त करने, उसे संवेग रहित करने में ही व्यय ही जाता है शेष पच्चास प्रतिशत ही साधक समाहित कर पाता है। इसी कारणवश साधना के जगत में आत्मालोचना और विपश्यना मात्र क्रियाएं नहीं बरन सम्पूर्ण साधना के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।

किन्तु जब एक बार शिष्य का मात्र रिक्त हो जाता है, तो उसे परिपूर्ण करने में गुरुदेव को कुछ पल ही पर्याप्त होते हैं। समुद्र में जल तो अथाह भरा है किन्तु जो लोटा लेकर जाएगा वह लोटा भर ही जल ला याएगा और जो जाली लेकर जाएगा वह जाली भर जल ले आएगा। यहीं साधना के भेत्र में विनम्र होने का अर्थ है। जहां घट खाली होगा फिर वही जबदम्बा को भी अपने सम्पूर्ण भमत्व एवं लालित्य के साथ साधक में समाहित हो सकेंगी। देवी के विविध भेद केवल भावगत ही हैं, मूलतः तो उसक स्वरूप एक ही है। जो भगवती जगदम्बा को समाहित करने में सक्षम हो जाएगा, फिर वही उनके महाकाली, महासरसवती एवं महालक्ष्मी स्वरूपों का वरदायक प्रभाव भी ग्रहण कर सकेगा, क्योंकि —

कज्जल रूप तुहिकाली कहिए उज्जल रूप तुहि बानी॥
रजि मंडल परचंड कहिए गंगा कहिए पानी॥

— भगवती जगदम्बा इसी प्रकार हमारे जीवन में विदित होकर 'समाहित हो सकें, हमारा स्वरूप समस्त संवेगों से रहित होकर गंगा की भाँति निर्मल हो सकें, श्री सदगुरुदेव के चरणों में हमारी इस नवरात्रि में यहीं विनम्र याचना है।

गुरु वैह
गुरुः सा
गु
सम्पत्र क
कराश

इ
ओर भूमि प
जल भर क
लगावें। क
ऊपर चढ़ा
आवाहन क
चरुणः ।
पाशाहस्त

उ
स्थापित क
करें, उसके
करें। यंत्र
करें। फिर

दुर्गे स
स्वस्थीः
दारिद्र्य
सर्वोपक
आता

ॐ आ
यावदव
आस्त

अनेक
कार्त्तस्य
पादा

निम मंत्र
गंगादि
तो यमेर

दुर्गा पूजन

पूजा इतः स्नान आदि से निवृत्त होकर नवरात्रि के प्रथम दिन शुभ मुहूर्त में पहले से ही शुद्ध किए हुए पूजा स्थान में पीला आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर की ओर मूर्ख करके बैठें। सामने बाजोट (चौकी) के ऊपर लाल वस्त्र बिछा दें। उसके ऊपर भगवती का आकर्षक चित्र स्थापित करें। पूजन से पूर्व सभी पूजन सामग्री अपने पास रख लें।

पूजन सामग्री

चौकी, लाल वस्त्र, अगरबत्ती, दीपक, पुष्प, फल, कलश, मिठाई, पञ्चमृत, नारियल, बल्ज, दुर्गा यंत्र, नौ चिरमी के दाने, बैटूर्व और हकीक माला।

इसके बाद आप पूजन आरम्भ करें—

सबसे पहले तीन बार आचमन करके हाथ धो लें।

प्रतिश्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स ब्राह्माभ्यन्नरः शुचिः ॥

इस मंत्र को पढ़ कर अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर भी जल छिड़क कर पवित्र कर लें। अपनी दाहिनी ओर धूप और दीप जला लें। दीपक की कुंकुम और अक्षत से पूजन करें।

संकलन

दाहिने हाथ में जल लेकर उसमें कुंकुम, अक्षत और पुष्प मिला कर निम मंत्र बोलें—

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः श्रीमद् भगवतो

महापुरुषस्य ब्रह्मणोऽङ्गि द्वितीये पराद्देव श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भारत खण्डे अमुक तिथी अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः सकल सिद्धि प्राप्ति निमित्तं, सुख, सौभाग्य, धन, धान्य प्राप्तये, गणपति पूजनं, दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये।

जल भूमि में छोड़ दें।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़ कर गणपति का स्मरण करें—
ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्वन्दन्मदं गन्धलुच्यं पथुप व्यालोलं गण्डस्थलम् ॥
दन्ताधात विदारितारिरुधिरैः मिन्द्र शोभाकरं,
बन्दे शैलसुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥
भो गणपते इह आगच्छ इह तिष्ठ स्थिरो भव।

गणपति के लिए एक पुष्प आसन दें॥

ग गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि
वस्त्रं समर्पयामि नमः।
तिलकं, अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥
नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

ॐ गजाननं भूतं गणाधिसेवितं,
कपिस्थं जम्बूं फलं चारुं भक्षणम्।
उमासुतं शोकं विनाशकारकं;
नमामि विघ्नेश्वरं पादं पंकजम् ॥

बुरु पूजन

गुरु ध्यान करें—

गुरु बंहा गुरु विंष्टुः गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर बंहा तस्मै श्री गुरवे नमः॥
गुरु का पंचोपचार से श्रद्धा पूर्वक पूजन
सम्पन्न करें।

कलश स्थापन

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चाबलों से अपनी बायों
और भूमि पर 'स्वस्तिक' बना कर उसके कंपर एक कलश में
जल भर कर स्थापित करें, कलश के चारों ओर चार तिलक
लगावें। ऊपर नारियल रख दें। अक्षत तथा पुष्प कलश के
ऊपर चढ़ा दें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर वरण देवता का
आवाहन करें—

बरुणः पाशभृत् सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः।
पाशहस्तात्मको देवो जलराश्याधिको महान्॥

दुर्गा चित्र के सामने एक प्लेट पर 'दुर्गा चंत्र' को
स्थापित करें, उसके चारों ओर नी 'चिरमी के दाने' भी स्थापित
करें, उसके समीप ही सरसों की डेरो पर 'चैदूर्य' को स्थापित
करें। चंत्र तथा चैदूर्य का कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से पूजन
करें। फिर भगवती का घोडशोपचार से पूजन करें—

स्नान

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्मोः।
स्वस्थैः स्मृता मति मतीच शुभां ददासि॥
दारिद्र्ये दुःख भयहारिणी का त्वदन्या।
सर्वैः पकारकरणाय सदार्द्धचित्ता॥।।।

आवाहन

एक पुष्प रखें और निम्न सन्दर्भ का उच्चारण करें—
ॐ आगच्छैह महादेवि! सर्वं सम्पत्त्रदायिनि!।।।
यावद्वत् समाप्येत तावन्त्वं सन्निधौं भव॥।।।

आसन

पुष्प का आसन दे कर निम्न मंत्र बोलें—
अनेक रत्न संयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्त्तस्वरमयं दिव्यं आसनं प्रतिगृह्यताम्॥।।।

पाठ

चरण धोने के लिए दो आचमनी जल चढ़ावें और
निम्न मंत्र का उच्चारण करें—
गंगादि सर्वं तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पात्त्वार्थं प्रतिगृह्यताम्॥।।।

आर्य

आचमनी में जल लेकर उसमें अक्षत और पुष्प
मिला लें और भगवती को चढ़ाए—
निधीनां सर्वं रत्नान् त्वमनध्यं गृणान्विता।
सिंहोपरिस्थिते देविः। गृहाणाध्यं नमोऽस्तुते॥।।

आचमन

तीन बार आचमनी से जल चढ़ावें—
कर्षूरेण सुर्गंधेन सुरभि स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देविः। त्वं प्रतिगृह्यताम्॥।।

स्नान

आचमनी से भगवती पर चल चढ़ावें—
मन्दाकिन्याः समानीतैः हं मां भां रुहवासितैः।।।
स्नानं कुरुत्व देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिमि॥।।

घञ्चामृत स्नान

दूध, दही, घी, शहद और चीनी मिलाकर स्नान
करावें—
पद्मो दधि घृतं चैव मधुं च शक्तरान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥।।

इसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराके बस्त्र से
पोछ दें।

बस्त्र

दो बस्त्र भगवती पर चढ़ावें—
पहुङ्कूलयुगं देविः। कंचुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपा कृत्वा दुर्गे! दुर्गतिनाशिनि॥।।

बर्त्तन

कुंकुम, चन्दन या केशर का तिलक करें—
श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धारयं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥।।

अक्षरत

भगवती पर चाबल चढ़ावें—
अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणोमान्महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्॥।।

माला

इसके बाद सुन्दर फूलों से बनी हुई माला अपित
करें—

मंदारपरिजातादि पाठली केतकानि च।
जाती चंपक पुष्पाणि गृहाणेभानि शोभने॥॥

धूप और दीप दिखा करके नैवेद्य अर्पित करें—
अङ्ग चतुर्विंश्च स्वादु रसैः छब्दभिः समन्वितम्॥

तीन आचमनी जल आचमन के लिए प्रदान करें तथा
फल अर्पित करें। पुरुष मुख शुद्धि के लिए आचमन कराएं।
लौंग और इलायची से बुक सुख्वाद पान अर्पित करें।

दक्षिणा

पूजा की पूर्णता के लिए कुछ द्रव्य भगवती को
अर्पित करें।

पूजाफलसमूहथर्थं तवाये स्वर्णमीश्वरि॥।
स्थापिता तेन मे ग्रीता पूर्णांकुरु मनोरथान्॥।

अब निम्न मंत्र का हकीक माला से तीन माला मंत्र
जप करें—

मंत्र

// हूं ऐं लैं लूं लूं चामुण्डायै नमः//
HOOM AYEING AYEING HREEM CHAMUNDAYAI
NAMAH

आस्ती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
मैया जय मंगलकरणी मैया जय आनन्द करणी।
तुम्हों निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥।

जय अम्बेगौरी...
मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को।

मैया टीको...
उज्ज्वल से दोक नैना, चन्द्रवदन नीको॥।

जय अम्बे...
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजी।

मैया रक्ता...
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर माजी॥।

जय अम्बे...
केहरि वाहन राजत, खड्ग खण्डपर धारी।

मैया खड्ग...
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी॥।

जय अम्बे...
कानन कुण्डल शोभित, नासाये घोती।

मैया नामा ०
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ।।

जय अम्बे...
शुभ निशुभ विदारे, महिषासुर धारी।

मैया महिषा ०
मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥।

जय अम्बे...
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।

मैया तुम ०
आगम निगम ब्रह्माणी तुम शिव पटरानी॥।

जय अम्बे...
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।

मैया नृत्य ०
ब्राजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ।।

जय अम्बे...
तुम ही जय की माता तुम ही हो भरता

मैया तुम ०
भक्तन की दुःख हरता ।।

सुख सम्पति करता ।।

जय अम्बे...
भुजा चार अति शोभित, बर अभय धारी।

मैया बर ०
मन वांछित फल पावत, सेवत नरनारी ।।

जय अम्बे...
कंचन धाल विराजत अगर कपुर भाती।

मैया अग ०
श्रीमालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती ।।

जय अम्बे...
अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै।

मैया जो ०
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै।

जय अम्बे गौरी ।।

इसके बाद आरती नीचे रख कर दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवती को पुष्प चढ़ावें, प्रणाम करके परिवर महित प्रसाद ग्रहण करें। समाप्ति के दिन यंत्र को घर में पूजा स्थान में स्थापित करें चिरमी दाने तथा वैदूर्य को जल प्रवाह कर दें, माला से उक्त मंत्र का 1 माला नित्य जपते रहें।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

